लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तक सीरीज़–11

काश्मीर की लोक कथाऐं–3

जेम्स हिन्टन नोलिस

1887

हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

2022

Series Title: Lok Kathaon Ki Classic Pustaken Series-11
Book Title: Kashmir Ki Lok Kathayen-3 (Folk-tales of Kashmir-3)
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Map of Kashmir

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है। फिर इनका एकत्रीकरण आरम्भ हुआ और इक्का दुक्का पुस्तकें प्रकाशित होनी आरम्भ हुई और अब तो बहुत सारे देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें उनकी मूल भाषा में और उनके अंग्रेजी अनुवाद में उपलब्ध हैं।

सबसे पहले हमने इन कथाओं के प्रकाशन का आरम्भ एक सीरीज़ से किया था – "देश विदेश की लोक कथाऐं" जिनके अन्तर्गत हमने इधर उधर से एकत्र कर के 2500 से भी अधिक देश विदेश की लोक कथाओं के अनुवाद प्रकाशित किये थे – कुछ देशों के नाम के अन्तर्गत और कुछ विषयों के अन्तर्गत।

इन कथाओं को एकत्र करते समय यह देखा गया कि कुछ लोक कथाऐं उससे मिलते जुलते रूप में कई देशों में कही सुनी जाती है। तो उसी सीरीज़ में एक और सीरीज़ शुरू की गयी – "एक कहानी कई रंग"[1]। इस सीरीज़ के अन्तर्गत एक ही लोक कथा के कई रूप दिये गये थे। इस लोक कथा का चुनाव उसकी लोकप्रियता के आधार पर किया गया था। उस पुस्तक में उसकी मुख्य कहानी सबसे पहले दी गयी थी और फिर वैसी ही कहानी जो दूसरे देशों में कही सुनी जाती हैं उसके बाद में दी गयीं थीं। इस सीरीज़ में 20 से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित की गयीं। यह एक आश्चर्यजनक और रोचक संग्रह था।

आज हम एक और नयी सीरीज़ प्रारम्भ कर रहे हैं "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें"। इस सीरीज़ में हम उन पुरानी लोक कथाओं की पुस्तकों का हिन्दी में अनुवाद कर रहे हैं जो बहुत शुरू शुरू में लिखी गयी थीं। ये पुस्तकें तब की हैं जब लोक कथाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ ही हुआ था। अधिकतर प्रकाशन 19वीं सदी से आरम्भ होता है। जिनका मूल रूप अब पढ़ने के लिये मुश्किल से मिलता है और हिन्दी में तो बिल्कुल ही नहीं मिलता। ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाओं की पुस्तकें हम अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने के उद्देश्य से यह सीरीज़ आरम्भ कर रहे हैं।

इस सीरीज़ में चार प्रकार की पुस्तकें शामिल हैं –

1. अफ्रीका की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
2. भारत की लोक कथाओं की सारी पुस्तकें
3. 19वीं सदी की लोक कथाओं की पुस्तकें
4. मध्य काल की तीन पुस्तकें – डैकामिरोऩ नाइट्स औफ स्ट्रापरोला और पैन्टामिरोन। ये तीनों पुस्तकें इटली की हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सारी लोक कथाऐं बोलचाल की भाषा में लिखी जायें ताकि इन्हें हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

---

[1] "One Story Many Colors"

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब पुस्तकें "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही हैं। ये पुस्तकें आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरी भाषओं के लोक कथा साहित्य को हिन्दी में प्रस्तुत करेंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

काश्मीर की लोक कथाऐं–3

“लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें” नाम की इस सीरीज़ की यह 11वीं पुस्तक अब आपके हाथ में प्रस्तुत है भारत के काश्मीर प्रान्त की लोक कथाऐं। यह काश्मीर की लोक कथाओं की पहली पुस्तक थी जिसे जेम्स हिन्टन नोलिस ने पहली बार 1887 में प्रकाशित किया था। उन्होंने इसमें 64 लोक कथाऐं लिखी थीं।[2] उस पुस्तक का दूसरा संस्करण 1892 में प्रकाशित किया गया था। उसी पुस्तक का हिन्दी अनुवाद हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।

भारत में बहुत सारे प्रान्त हैं जिनमें बहुत सारी भाषाऐं बोली जाती हैं। एक दूसरे की भाषा पढ़ना समझना बहुत कठिन काम है इसलिये एक पान्त की भाषा दूसरे प्रान्तों के लोगों के लिये विदेशी भाषा हो जाती है। अपने अपने प्रान्तों की अपनी अपनी लोक कथाऐं हैं। उन दूसरे भाषा वाले प्रान्तों की लोक कथाओं को हिन्दी भाषा भाषी लोगों के पढ़ने के लिये यह प्रयास किया गया है।

तो लीजिये पढ़िये ये लोक कथाऐं भारत के काश्मीर प्रान्त की अब हिन्दी में। लोक कथाओं की अधिकता के कारण यह पुस्तक चार भागों में बॉट दी गयी है। पहले दो भाग प्रकाशित किये जा चुके हैं अब प्रस्तुत है इसका यह तीसरा भाग।

मूल पुस्तक के बारे में

लोक कथाओं की यह पुस्तक जेम्स हिन्टन नोलिस की लिखी हुई है जिसमें उन्होंने अपने चार साल के काश्मीर के निवास काल में एकत्र की थीं। इसका दूसरा संस्करण 1892 में प्रकाशित किया था। जेम्स एक मिशनरी थे जो यहाँ इतने समय रहे। उन्होंने इस पुस्तक की भूमिका में लिखा है कि मिशनरी होने के नाते वह बहुत सारे लोगों के सम्पर्क में आये और उन्होंने उन लोगों से बहुत सारी बातें सीखीं। उनके इन कथाओं के संग्रह का मुख्य उद्देश्य काश्मीरी भाषा को जानना था जो वहाँ की स्थानीय भाषा है और दूसरा उद्देश्य वहाँ के लोगों के विचारों और तौर तरीकों को जानना था।

इस संग्रह की कुछ कहानियाँ उन्होंने भारतीय पत्रिकाओं में भी प्रकाशित करवायीं और उन्हीं की सलाह पर यह संग्रह प्रकाशित किया गया। इस संग्रह में से बहुत सारी कथाऐं केवल काश्मीरी हैं जबकि बाकी की कथाऐं भारत में प्रचलित कथाऐं हैं। इसमें की कुछ कथाऐं यूरोप के कई देशों की कथाओं से मिलती जुलती हैं।

वह लिखते हैं कि इन कथाओं के उद्गम स्थान को ढूँढना मेरा उद्देश्य नहीं है पर उन्हें इस बात का यकीन है कि बहुत सारी पूर्वी कहानियाँ चंगेज़ खान के समय में हैन्स[3] के द्वारा यूरोप में ले जायी गयीं। बहुत सारी कहानियों का फारसी भाषा में अनुवाद किया गया और उसके बाद सीरिया की भाषा और अरबी भाषा में। और शायद ये फिर वहाँ से यूरोप गयीं।

हिन्दी भाषा में इसका यह पहला अनुवाद है।

---

[2] “Folk-Tales of Kashmir”, by James Hinton Knowles. 2nd edition. London, Kegan Paul. 1892. 64 Tales. This book is available in English at the Web Site : https://books.google.ca/books?id=ChaBAAAAMAAJ&pg=PR3&redir_esc=y&hl=en#v=onepage&q&f=false

[3] Hans Andersen
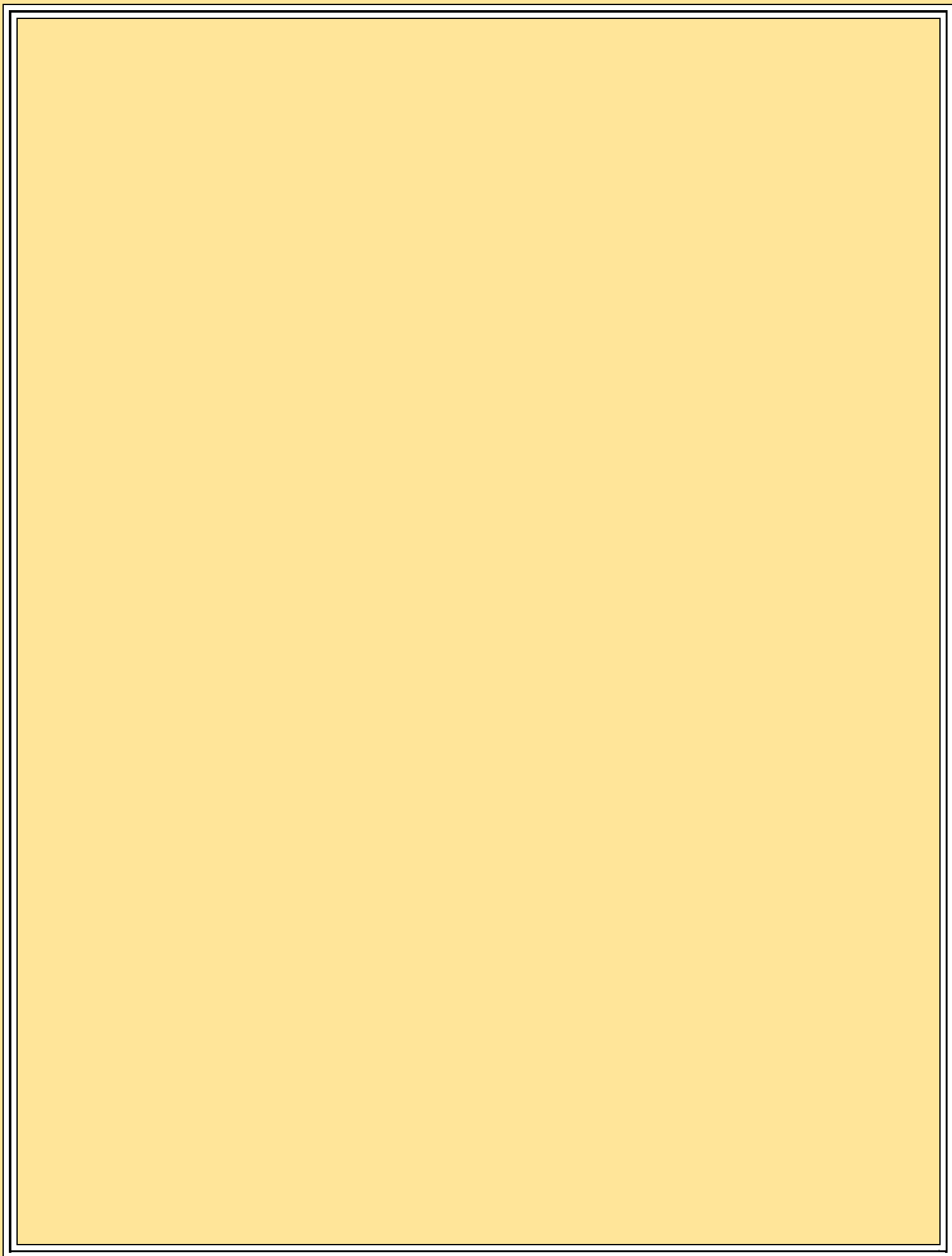
35 नीच बेटों को कैसे धोखा दिया गया[4]

एक बहुत ही बूढ़ा अमीर आदमी जो मरने वाला हो रहा था उसने अपने बेटों को बुलाया और अपना सब कुछ उनमें बॉट दिया। पर कुछ ऐसा हुआ कि वह कई साल तक नहीं मरा हालॉकि उनमें से कई साल उसके लिये बहुत खराब रहे।

अपने बुढ़ापे की परेशानी के अलावा उसको अपने बेटों से बहुत गालियॉ और बेरहमी का व्यवहार भी सहना पड़ा। वे कितने नीच और मतलबी लोग थे कि पिता का पैसा पाने के बाद उनकी सेवा नहीं करते थे बल्कि और उनको परेशान करते थे।

पहले तो वे इस आशा में कि शायद इस तरह से उनको पिता का पैसा ज़्यादा मिल जायेगा वे एक दूसरे की होड़ करने में लगे रहे कि देखें कौन अपने पिता को ज़्यादा खुश रखता है पर जब उनके पिता ने उनको अपना पैसा बॉट दिया तो यह समस्या भी खत्म हो गयी।

अब उनको इस बात की कोई चिन्ता नहीं थी कि उनका पिता कब मरता है। बल्कि जितनी जल्दी मर जाये उतना ही अच्छा। क्योंकि अब तो वह एक बेकार का बोझ था उनके ऊपर। और यह दुख उस आदमी को भी था।

---

[4] How the Wicked Sons Were Duped (Tale No 35)

एक दिन वह अपने एक दोस्त से मिला और उससे अपनी मुसीबतें बतायीं। दोस्त को उससे बहुत सहानुभूति हुई। उसने उससे वायदा किया कि वह उसके हालात पर विचार करेगा कि ऐसे में उसे क्या करना चाहिये। वह उसको कुछ दिन में बतायेगा कि उसको क्या करना है।

उसने ऐसा ही किया। कुछ दिन बाद ही वह उस बूढ़े से मिलने आया और उसने छोटे छोटे पत्थर भरे चार थैले बूढ़े के पास रखे और बोला — "देखो दोस्त तुम्हारे बच्चों को यह तो मालूम ही है कि मैं तुम्हारे पास आता जाता हूँ। तो वे तुमसे मेरे आने जाने के बारे में जरूर पूछेंगे।

तुम उनको यह बहाना बनाना कि तुमने मुझे बहुत दिन पहले काफी सारा पैसा उधार दिया था और मैं तुम्हें वही उधार चुकाने आता हूँ इसलिये अब तुम पहले से कहीं ज़्यादा अमीर हो गये हो। जब तक तुम ज़िन्दा हो तब तक इन थैलों को अपने पास रखना और किसी भी तरह अपने बेटों को इनकी हवा भी नहीं लगने देना।

बहुत जल्दी ही तुम देखोगे कि तुम्हारे बेटों का बर्ताव तुम्हारे साथ बदल गया है। अच्छा अब सलाम। अब मैं तुम्हें कुछ दिनों बाद देखने आऊँगा कि तुम कैसा कर रहे हो।"

वैसा ही हुआ। बूढ़े के जवान बेटों ने उससे उसके दोस्त के आने के बारे में पूछा तो उसने उनको वही बताया जो उसके दोस्त ने

उसको कहने के लिये बताया था। साथ में अकेले में वह अक्सर अपने उन थैलों को भी हिला लिया करता था।

यह सब सुन देख कर तो उसके बेटों के कान चौकन्ने हो गये। अब उनको अपने पिता की वह बची हुई दौलत लेने की होड़ सी लग गयी। वे एक दूसरे से ज़्यादा अपने पिता की देखभाल करने लगे ताकि उनके पिता की बची हुई दौलत में से उन्हीं को सबसे ज़्यादा दौलत मिले।

यह सेवा देख कर वह बहुत खुश हुआ। वह फिर बहुत दिन तक सुख से जिया। पर जब वह मर गया तो उसके बेटों ने उसके थैले देखे तो उनमें तो पत्थर के टुकड़े भरे मिले। यह देख कर वे बहुत ही नाउम्मीद हुए पर वह बूढ़ा तो बहुत आराम से रहा न।

36 बेवकूफ पति और उसकी होशियार पत्नी[5]

एक बार की बात है कि एक सौदागर मरने वाला हो रहा था तो उसने अपनी पत्नी और अपने एकलौते बेटे को बुलाया और बेटे से कहा — "मेरे बेटे। मैं अब जा रहा हूँ और फिर कभी नहीं लौटूँगा। तुम इस दुनियाँ में अकेले रह जाओगे। तुम मेरी इन पाँच सलाहों को हमेशा याद रखना जो मैं तुम्हें अभी बताने वाला हूँ।

पहली बात तुम दूकान पर कभी धूप में मत जाना। दूसरी बात तुम रोज पुलाव[6] ही खाना। तीसरी बात तुम हर हफ्ते एक नयी पत्नी लाना। चौथी बात अगर तुम्हें शराब पीनी हो तो किसी टंकी से पीना। पाँचवी बात अगर तुम्हें जुआ खेलना हो तो केवल होशियार जुआरियों के साथ ही खेलना।"

यह कह कर वह सौदागर मर गया। अब उसका बेटा हालाँकि सब बातों में उसका कहा मानता था पर फिर भी वह एक बहुत ही बेवकूफ किस्म का आदमी था। उसने अपने पिता के कहे के असली मतलब को नहीं समझा। उसने उनको शब्द ब शब्द वैसा ही समझा जैसा कि उसने उससे कहा था।

---

[5] A Stupid Husband and His Clever Wife (Tale No 36)

[6] Pulaav – a dish of rice mixed with vegetables for a vegetarian and with meat, if made for a non-vegetarian.

सो पहली बात मानने के लिये उसने अपने घर से दूकान तक जाने के लिये एक ढका हुआ रास्ता बनवाया। इसमें उसके बहुत सारे पैसे भी लग गये और उसको खुद को भी वह बेकार और बेवकूफी का काम लगा पर क्या करता उसके पिता की उसके लिये यही सलाह थी। उसके कुछ दोस्तों को शक हुआ कि वह पागल हो गया है जबकि कुछ दोस्तों को लगा कि वह बहुत घमंडी हो गया है।

खैर उसने उनकी किसी बात पर ध्यान नहीं दिया बल्कि वह रास्ता बनवा कर पूरा किया और रोज वह उसी रास्ते पर चल कर अपनी दूकान जाता रहा।

पिता की दूसरी बात मानने के लिये उसने अपने रसोइये को हुक्म दिया कि खाने में वह रोज उसके लिये पुलाव बनाये। और जैसा उसके पिता ने कहा था वह रोज पुलाव ही खाता रहा और कुछ नहीं।

पिता की तीसरी बात मानने के लिये यानी कि हर हफ्ते एक नयी पत्नी के लिये उसको बहुत मुश्किल पड़ी। कुछ पत्नियों को उसे उनकी बदसूरती या बुरे स्वभाव या ठीक से न रहने या फिर बेवफाई या किसी और नीचता की वजह से बाहर निकालना पड़ा जो उसके लिये कोई बड़ा काम नहीं था।

पर उनमें कुछ पत्नियाँ ऐसी भी थी जो बहुत सुन्दर थीं अच्छी थीं दयालु थीं साफ सुथरी और प्रेम करने के लायक थीं। उनको

निकालने में उसको बहुत बुरा लगा। उनको उसे उकसाना पड़ा कि वे उससे गुस्सा हो जायें या फिर उसी को उनको बाहर निकालने का कोई बहाना ढूँढना पड़ा। इस तरह उसने बेचारी कई स्त्रियों को बर्बाद कर दिया।

आखिर एक होशियार स्त्री ने इस सौदागर की सीख के बारे में सुना। उसने उनका असली मतलब समझ कर उस नौजवान सौदागर से शादी करने का विचार किया। वह सुन्दर भी थी और होशियार भी सो वह तुरन्त ही उस सौदागर की पत्नी बन गयी।

वह नौजवान सौदागर हालाँकि उसको बराबर देखता रहा कि उसको घर से निकालने के लिये वह उसमें कोई दोष निकाल सके पर वह उसमें या उसके किसी काम में कोई दोष नहीं निकाल सका।

वह उसकी इच्छा के अनुसार ही काम करती थी। वह अपने बोलने में कपड़े पहनने में व्यवहार में और काम आदि में सभी में बहुत सावधानी बर्तती थी।

इस तरह उसको वहाँ छह दिन बीत गये। हफ्ते के आखिरी दिन यानी सातवें दिन सौदागर को उसे बाहर निकालना था। उसने उससे शाम के खाने के लिये मछली का पुलाव बनाने के लिये कहा।

उसका इरादा था कि वह उस पुलाव के बारे में उससे असन्तुष्ट हो कर कुछ कहेगा जैसे कि वह किसी दूसरे तरीके की मछली का पुलाव चाहता था या कुछ और और इस तरीके से उसे बाहर निकाल देगा।

उसकी पत्नी ने कहा कि वह शाम के खाने के लिये मछली का पुलाव ही तैयार कर के रखेगी।

पत्नी भी इसके लिये तैयार बैठी थी। जैसे ही वह बाहर गया वह भी तुरन्त ही बाजार गयी और दो तीन किस्म की मछली ले आयी। शाम को उसने उनको अलग अलग तरीके से पकाया। कुछ मसालेदार कुछ बिना मसाले की कुछ चीनी के साथ कुछ नमक के साथ।

शाम को सौदागर जब घर लौटा तो उसका खाना तैयार था। उसने ज़ोर से चिल्ला कर पूछा — “खाना तैयार है?”

“हॉ जी।” कह कर तुरन्त ही उसने एक प्लेट मीठा पुलाव उसके सामने ला कर रख दिया।

वह गुस्से में बोला — “ओह मुझे तो नमकीन पुलाव चाहिये।”

पत्नी बोली — “मुझे मालूम था कि आपको नमकीन पुलाव भी चाहियेगा सो मैंने नमकीन पुलाव भी बनाया है।” कह कर उसने उसके सामने गर्म गर्म नमकीन पुलाव ला कर रख दिया।

“ठीक है ठीक है पर मुझे तो यह वाली मछली नहीं चाहिये थी इसमें तो केवल हड्डियॉ ही हड्डियॉ हैं।”

“अच्छा तो यह वाला पुलाव खाइये।” कह कर उसने दूसरे किस्म की मछली वाला पुलाव उसके सामने ला कर रख दिया।

अपनी प्लेट आगे खिसकाते हुए सौदागर बोला — "पर मेरा मतलब इस किस्म की मछली से नहीं था। इससे अच्छा तो मैं गोबर खाना पसन्द करूँगा।"

"तब यह लीजिये।" कह कर उसने पास में पड़ी एक टोकरी का ढक्कन खोल कर उसकी तरफ खिसका दी जिसमें गाय का गोबर पड़ा हुआ था। असल में उसे इतने सारे पुलाव बनाने में इतना समय लग गया कि वह गोबर की टोकरी को वहाँ से हटा नहीं सकी थी सो उसने उसे एक दूसरी टोकरी से ढक दिया था ताकि उसको पति को बुरा न लगे। उसने वही टोकरी खोल कर उसके आगे रख दी।

सौदागर अपनी सब चालें चल कर हार गया था सो उसने अब उसके आगे कुछ नहीं कहा। उसने दो तीन प्लेटों में से कुछ कुछ खाया और सोने चला गया।

रात में उसकी पत्नी ने उससे कहा कि अगले दिन वह उसके पिता के घर जायेगा और सारा दिन वहीं बितायेगा। सो अगली सुबह सौदागर और उसकी पत्नी पत्नी के घर गये।

घर पहुँच कर पत्नी ने अपने माता पिता को बताया कि ससुराल में उसके साथ क्या क्या हुआ था उसकी अपनी प्राइवेट बातें और उनसे कहा कि उन लोगों के लिये कोई खास चीज़ पकाने की कोई

ज़रूरत नहीं थी। वे केवल पूरी[7] बनायें और जब वह कहे तब उसको खाने के लिये दें। उन्होंने कहा कि वे वैसा ही करेंगे।

कुछ घंटों के बाद वह अपने पति को एक छोटे से कमरे में ले गयी और उसको वहॉ बिठा कर उससे कहा कि वह वहॉ बैठ कर शाम के खाने का इन्तजार करे। खाना जल्दी ही तैयार होने वाला है। सौदागर बेचारा वहॉ बहुत देर तक इन्तजार करता रहा पर खाने का कहीं पता नहीं था।

आखिर उसको इतनी भूख लगी कि उसने अपनी पत्नी को बुलाया और उससे कुछ खाने के लिये लाने के लिये कहा। वह बोली — "हॉ मैं अभी लायी। असल में हम लोग कुछ और मेहमानों का इन्तजार कर रहे हैं जिनको यहॉ काफी पहले आ जाना चाहिये था पर वे अभी तक नहीं आये हैं। जैसे ही वे आते हैं खाना लगता है।"

"पर मुझे बहुत भूख लगी है। मैं और इन्तजार नहीं कर सकता। मुझे तुरन्त ही खाने के लिये कुछ लाओ। अगर तुम्हारे माता पिता मुझे माफ करें तो मुझे उन लोगों के साथ खाने में भी कोई रुचि नहीं है।"

पत्नी बोली — तब ठीक है। पर अभी तो केवल पूरी ही हैं खाने के लिये और कुछ नहीं। अगर आप वह खाना पसन्द करें तो मैं अभी उन्हें आपके लिये ला देती हूॅ।"

---

[7] Puris – plural of Puri – fried bread

पति बोला — "ठीक है वही ला दो।"

सो उसने उसको पूरी ला कर दे दीं जिन्हें उसने बड़ी ख़ुशी से खा लिया। जब वह सब पूरियाँ खा चुका तो बोला — "इस समय इन पूरियों का स्वाद तो पुलाव से कहीं ज़्यादा अच्छा था।"

मौका देख कर पत्नी बोली — "तब आप घर में रोज पुलाव क्यों खाते हैं।"

"क्योंकि मेरे पिता ने मरने से पहले मुझे ऐसा करने के लिये कहा था।"

पत्नी बोली — "आपने उनके कहे का गलत मतलब निकाला।"

सौदागर बोला — "नहीं मैंने उनके कहे का कोई गलत मतलब नहीं निकाला। उन्होंने मुझे और भी कई सलाह दी थीं।" फिर उसने उसके पिता ने जो कुछ भी उससे कहा था उसको सब बता दिया।

पत्नी बोली — "तो इसी लिये आपने अपने घर से अपनी दूकान तक ढका हुआ रास्ता बनवाया, रोज पुलाव खाया और हर हफ्ते एक नयी लड़की से शादी की। क्या आप वाकई इतने बेवकूफ हैं कि एक पल के लिये भी आपकी समझ में यह नहीं आया कि आपके पिता आपको क्या समझाना चाहते थे।

इस तरह का जीने का रास्ता तो आपको बर्बाद कर देगा आपकी ज़िन्दगी को बर्बाद कर देगा और शहर में भी आपकी कोई इज़्ज़त नहीं करेगा।

अब आप मेरी बात सुनें। जब आपके पिता ने आपको सलाह दी कि आप घर से अपनी दूकान को छाया में जायें तो इससे उनका मतलब था कि अगर आप अमीर और बड़े बनना चाहते हैं तो आप सूरज निकलने से पहले दूकान जायें और सूरज डूबने के बाद घर वापस आयें।

जब उन्होंने आपसे यह कहा कि आप रोज पुलाव खायें तो उनका मतलब था कि आप अपना खाना किफायत से खायें और उतना ही खायें जितने से आपकी भूख सन्तुष्ट हो जाये।

जब उन्होंने आपसे यह कहा कि हर हफ्ते एक नयी शादी करो तो इससे उनका मतलब था कि आप अपनी पत्नी के पास बहुत ज़्यादा न लगे रहें क्योंकि जब पत्नी दूर होती है तभी पति को उसकी कमी महसूस होती है।

जब आप अपनी पत्नी को हफ्ते में केवल एक बार ही मिलेंगे तो आपको उसमें हर बार कुछ नया मिलेगा और आप उसके साथ का और ज़्यादा आनन्द उठा पायेंगे।

सौदागर अपने पिता के कहे का यह कुछ दूसरा ही मतलब सुन कर बोला — "ओह अफसोस। मैं अब तक क्या कर रहा था। मैं अब तक कितनी बेवकूफी से काम कर रहा था। ओह पिता जी मैंने आपको कितना गलत समझा। प्रिये यह तुमने बहुत ही अक्लमन्दी का काम किया कि तुमने मुझे उनकी बातों का मतलब ठीक से

समझा दिया। मुझे अपनी बेवकूफियों का फल अपने आप ही भुगतना पड़ा।

पर तुमने मुझे उनकी कही हुई दूसरी बातों का मतलब नहीं समझाया ताकि मुझे पता चले कि मैं उनके बारे में क्या करूँ।"

पत्नी बोली — "मैं आपको बता दूँगी पर अभी तो आप चल कर मेरे माता पिता से विदा लीजिये। मैं वह सब घर जाते समय आपको बता दूँगी।"

जब वे लोग घर वापस लौट रहे थे तो वह एक जुआघर में घुस गयी। वहाँ उसने अपने पति को हर मेज पर होती हुई चालाकियाँ और नीचता समझायीं। फिर वह बोली — "इनकी इस हालत पर ज़रा ध्यान दीजिये और इससे सावधान रहिये। आपके पिता यह चाहते थे कि आप यह सब देखें और फिर ऐसी हालत में न पड़ने के लिये सावधान रहें।"

फिर वह उसको एक शराब की दूकान में ले गयी जो उनके घर के पास ही थी। वहाँ उसने शराब की एक बड़ी सी टंकी की तरफ इशारा करते हुए उससे उसमें से जी भर कर शराब पीने के लिये कहा।

सो उसने एक सीढ़ी ली और उस टंकी की तरफ गया पर उसमें से इतनी महक आ रही थी कि उससे वहाँ शराब पीना तो दूर खड़ा भी नहीं हुआ गया। वह सबसे नीची सीढ़ी पर आ कर बोला — "मैं अब शराब नहीं पी सकता।"

पत्नी बोली — "ठीक यही बात आपके पिता आपसे कहना चाहते थे। इसी लिये उनहोंने आपसे टंकी से शराब पीने के लिये कहा था।"

"ओह अच्छा। अब मेरी समझ में आया। यह बहुत अच्छा हुआ कि तुमने मुझे यह समझा दिया अब तो ज़िन्दगी बहुत आसान हो गयी। चलो अब घर चलते हैं।

37 प्रार्थना करने वाला फकीर[8]

एक बार की बात है कि एक गरीब आदमी अपने दो बच्चों एक बेटा और एक बेटी के साथ रहता था। वह इतना गरीब था कि वह उन दोनों के लिये खाना और कपड़ा भी नहीं जुटा पाता था। उसको अपना घर चलाने के लिये रोज करीब करीब नंगी हालत में घर घर भीख मॉगनी पड़ती थी।

एक दिन जब वे खाना मॉगने के लिये निकले तो उनको एक बहुत ही गुणी सन्तुष्ट फ़कीर मिल गया। उसके बारे में यह मशहूर था कि उसकी की गयी प्रार्थना कभी खाली नहीं जाती थी।

उस फ़कीर को देख कर उन सबने उसको सलाम किया और उससे प्रार्थना की वह उनकी गरीबी मिटाने के लिये खुदा से प्रार्थना करे। फ़कीर ने उनको यह कहते हुए एक खास जगह भेजा अगर वे वहॉ एक एक करके घुसेंगे और खुदा की प्रार्थना करेंगे तो खुदा उनकी जरूर सुनेगा।

उसने कहा — "पर ध्यान रखना वहॉ जा कर केवल एक चीज़ ही मॉगना।" कह कर फ़कीर चला गया।

सो वे तीनों उस फ़कीर की बतायी जगह गये। उन तीनों में से बेटी पहले घुसी। उसने अपनी ऊॅची आवाज में अपने लिये सुन्दरता

[8] The Prayerful Faqir (Tale No 37)

मॉगी और उसकी प्रार्थना सुन ली गयी। वह बाहर अपने पिता और भाई के पास शरमाती सी आयी। वह तो अब एक बहुत सुन्दर लड़की हो गयी थी।

इत्तफाक से उसी समय वहॉ से वहॉ का राजा गुजर रहा था। वह उसको देख कर उस पर रीझ गया। वह तुरन्त रुका और उससे अपने साथ शादी करने के लिये कहा। आदमी राजी हो गया और राजा उसको अपने घोड़े पर बिठा कर अपने महल ले गया।

पर उस आदमी को अपनी बेटी से इस तरह से अचानक अलग हो जाने से कुछ अच्छा नहीं लगा। इसके अलावा वह उसके प्रार्थना वाली जगह पर ज़्यादा देर रुकने से भी कुछ गुस्सा था।

इसी गुस्से वाली हालत में वह उस प्रार्थना वाली जगह में घुसा और खुदा से उसको परेशान करने की मॉग की जो उसका कहा न माने यानी उसकी बेटी। उसने कहा कि उसको घाव हो जाये।

उसकी यह प्रार्थना भी सुन ली गयी। उस लड़की की गर्दन पर तुरन्त ही एक घाव हो गया। जैसे ही राजा ने उस लड़की की गर्दन पर घाव देखा वैसे ही उसने उसको रास्ते में ही घोड़े से नीचे उतार दिया।

आखीर में बेटा उस प्रार्थना वाली जगह में घुसा और खुदा से प्रार्थना की — "ओ दयालु तू मुझे दो चीज़ें दे। एक तो मैं राजा बन जाऊॅ और दूसरे मैं अमीर हो जाऊॅ।" अब यह प्रार्थना क्योंकि फकीर के कहे अनुसार नहीं थी सो खुदा ने उसको नहीं सुना।

बेचारा बदकिस्मत गरीब आदमी इस तरह से अपनी बीमार बेटी और बेवकूफ बेटे के साथ फिर से गरीब और भूखा ही रह गया।

38 एकता की ताकत[9]

एक बार काश्मीर की घाटी में बहुत ज़ोर का अकाल पड़ा। इससे वहाँ बहुत बर्बादी हो गयी। वहाँ उन परिवारों के लोग बहुत दुखी थे और रो रहे थे जिनके घर वाले या तो मर गये थे या मार दिये गये थे।

ऐसे दुख भरे समय में चार भाइयों ने उस देश को छोड़ने का विचार किया। सो एक दिन उन्होंने अपना थोड़ा बहुत जरूरी सामान बाँधा और अपनी यात्रा पर निकल पड़े। वे कुछ ही दूर गये थे कि रास्ते में एक नदी पड़ी। उसका पानी बहुत साफ था सो वे वहाँ सुस्ताने और आराम करने के लिये बैठ गये।

उस जगह एक बहुत बड़ा छायादार पेड़ था जिसकी लम्बी लम्बी शाखों पर चिड़ियें चहक रही थीं। वह आराम करने के लिये बहुत अच्छी जगह थी। वे लोग आगे चल कर क्या करेंगे इसी बारे में वे बात करने लगे। किसी ने कुछ कहा किसी ने कुछ कहा। वे लोग काफी देर तक बात करते रहे फिर सो गये।

करीब करीब आधी रात के समय वह एक चिड़िया के चीखने की आवाज सुन कर जाग गये। बड़े भाई ने गुस्से में अपने एक भाई से उसको पकड़ने के लिये कहा दूसरे को उसका चाकू निकालने के

[9] Unity is Strength (Tale No 38)

लिये कहा और तीसरे से आग जलाने के लिये कुछ लकड़ियाँ इकट्ठी करने के लिये कहा ताकि वे उसे भून सकें।

सब भाई उठ गये और अपने बड़े भाई का हुक्म मान कर अपना अपना काम करने चल दिये।

यह चिड़िया एक बहुत ही अक्लमन्द चिड़िया थी सो उसने जो कुछ भी बड़े भाई ने अपने भाइयों से कहा वह सब समझ लिया। सो जब तीनों भाई अपना अपना काम करने जा रहे थे तो उसने सबसे बड़े भाई से कहा — "तुम मुझे क्यों पकड़ना चाहते हो? तुमने चाकू और लकड़ियाँ क्यों मँगवायीं हैं?"

बड़ा भाई बोला — "मैं तुम्हें मारूँगा और फिर तुम्हें भून कर हम खायेंगे।"

यह सुन कर चिड़िया डर के मारे काँपने लगी। उसने उससे अपनी जान की भीख माँगी। वह बोली — "मेहरबानी कर के मुझे छोड़ दो मेरी जान बख्श दो। मैं तुम्हें एक बहुत बड़ा खजाना दिखाऊँगी।"

बड़ा भाई बोला — "अगर तुम अपना वायदा पूरा करो तो मैं तुम्हें छोड़ दूँगा।"

चिड़िया बोली — "इसका मतलब है कि तुमने मेरी जान बख्श दी। तुम इस पेड़ के तने के चारों तरफ खोदो तो तुमको बहुत सारा खजाना मिल जायेगा।"

चारों भाइयों ने मिल कर उस पेड़ के तने के चारों तरफ खोदा तो उनको सचमुच में बहुत सारा खजाना मिल गया। तब वे बोले — “अब हम आगे जा कर क्या करेंगे हमको तो खजाना यहीं मिल गया। यह सब हमारे खर्च के लिये काफी है और बचाने के लिये भी। चलो अब घर वापस चलते हैं।”

सो वे सब घर वापस आ गये। आ कर उन्होंने एक बहुत ही शानदार घर बनवा लिया और सब उसमें रहने लगे।

एक दूसरे परिवार में चार भाई और थे जो इन्हीं के शानदार घर के पास ही रहते थे। इत्तफाक से उनको पता चल गया कि उनके पास रहने वाले चारों भाइयों को इतना सारा पैसा कैसे मिला सो उन्होंने भी अकाल के मारे उसी नदी पर जाने और अपनी किस्मत आजमाने का फैसला किया।

वे भी चल दिये। वे भी उसी नदी के पास पहुँचे। वे भी उसी पेड़ के नीचे आराम करने के लिये लेट गये। उन्होंने भी चिड़ियों की मीठी मीठी आवाजें सुनी। अब वे उस खजाने की आशा करने लगे जब उनको वह खजाना मिलेगा। आखिर उनके सबसे बड़े भाई ने उसी तरह से अपने तीनों छोटे भाइयों को करने के लिये कहा जैसे कि दूसरे चारों भाइयों में उनके बड़े भाई ने उनसे करने के लिये कहा था। पर इसके भाइयों ने इसका कहा नहीं माना।

एक बोला — “मैं नहीं जा सकता।”

दूसरा बोला — “मै चाकू कहाॅ से लाऊॅ?”

तीसरा बोला — "मैं बहुत थक गया हूँ मैं लकड़ी लाने नहीं जा सकता। तुम खुद चले जाओ और ले आओ।"

जब चिड़िया ने उनका ऐसा स्वभाव देखा तो उसने बड़े भाई से कहा — "तुम वापस चले जाओ। तुम्हारा यहाँ आना बेकार ही रहा। तुम कभी भी कुछ नहीं पा सकते जब तक कि तुम अपने भाइयों पर काबू न पा लो।

तुमसे पहले जो लोग यहाँ आये थे वे खजाना पाने में सफल हो गये थे क्योंकि उनमें एकता थी। उनकी एक इच्छा थी वे एक दिमाग से सोचते थे एक सा देखते थे एक सा सुनते थे वे एक शरीर थे।"

39 फट्टापुर का पीर[10]

एक बार एक गाँव में एक पीर साहब[11] रहते थे जो अपने चेलों को अल्लाह के बारे में बताया करते थे। जब वह आते थे तो वे सब उनके चारों तरफ इकट्ठे हो जाते थे। वे उनको खाना भी भेजते थे।

जब शाम हो जाती थी तो वे सोचते थे कि अब और लोग उनकी देखभाल कर लेंगे सो वे फिर उनकी परवाह नहीं करते थे। इस तरह शाम के समय कोई पीर साहब की देखभाल नहीं करता था और फिर पीर साहब को भूखा ही रह जाना पड़ता था। अपनी इज़्ज़त रखने के लिये वह भीख माँगने भी नहीं जाते थे।

जिस मस्जिद में पीर साहब ठहरे हुए थे रात को ठंडी हवाऐं चलती और मस्जिद की किवाड़ें खोल देतीं। हर बार उनको लगता जैसे कोई आया हो तो वह उसको देखने के लिये उठते पर वहाँ केवल हवा ही होती और कुछ नहीं।

सुबह को फिर उनके चेले आते और उनसे पूछते कि क्या वह आराम से सोये। जब वह उनको उनकी लापरवाही बताते तो वे उनको बुरा भला कहते और गन्दी गन्दी गालियाँ देते। कुछ लोगों ने आपस में एक दूसरे को उनको खाना न देने के लिये भी कहा। पीर

---

[10] The Pir of Phattapur (Tale No 39)
This story is given in the book only this much which does not make sense. It seems incomplete.

[11] Pir Sahib in Muslims are spiritual guides but ignorant, negligent, sensual and selfish. They are thought to be possessed of sanctity and of spcial powers of pleading before God.

साहब यह सब सुनते पर चुप रहते। एक दिन इस सबसे तंग आ कर वे वहाँ से चले गये।

40 होशियार गवर्नर[12]

यहॉ एक गवर्नर के न्याय की चार कहानियॉ दी जा रही हैं जो ये बताती है कि बेहद पेचीदा मामलों को उसने किस अक्लमन्दी से सुलझाया।

पहली कहानी

एक दिन गवर्नर साहब अपने दरबार में बैठे हुए थे कि एक कौआ उड़ता हुआ उनके कमरे में आया और शोर मचाने लगा। जो नौकर चाकर वहॉ खड़े थे उन्होंने उसको बाहर निकालने की दो चार बार कोशिश की पर वह लगातार उस कमरे में वापस आता रहा और कॉव कॉव करता रहा।

गवर्नर साहब बोले — “लगता है कि इस कौए को कुछ कहना है। जा कर देखो क्या मामला है।”

सो एक सिपाही यह देखने के लिये भेजा गया। जैसे ही वह सिपाही कमरे से बाहर निकला कि वह कौआ भी उसके साथ साथ उसके आगे निकल आया। वह उसको घुड़दौड़ के मैदान की तरफ ले गया जहॉ एक लकड़हारा एक पेड़ काट रहा था जिस पर उस कौए ने अपना घोंसला बना रखा था।

[12] The Sagacious Governor (Tale No 40)

जब वह कौआ उस पेड़ के पास पहुँचा तो वह और ज़ोर से कॉव कॉव करने लगा और अपने घोंसले की तरफ उड़ गया। सिपाही ने देखा और समझा कि क्या मामला था।

उसने उस लकड़हारे को तुरन्त ही वह पेड़ काटने से रोक दिया और इस तरह से कौए का घोंसला बचाया। फिर उसने गवर्नर साहब को आ कर सारा किस्सा बताया।

दूसरी कहानी

एक और दिन जब गवर्नर साहब अपने दरबार में बैठे थे तो दो आदमी आये और अपनी शिकायत पेश की। उन दोनों का कहना था कि एक घोड़े का बच्चा उनका है। यह एक बड़ा अजीब सा मामला था। एक घोड़े का बच्चा दो आदमियों का कैसे हो सकता था।

उस देश की रीति रिवाज के अनुसार क्योंकि वे शहर के आदमी थे उन्होंने अपनी अपनी घोड़ियॉ पहाड़ी पर चरने के लिये भेजी हुई थीं। दोनों घोड़ियों के बच्चा होने वाला था। जब वे पहाड़ी पर घास चर रही थीं तो उनको दोनों को बच्चा हो गया। एक का बच्चा ज़िन्दा पैदा हुआ था और दूसरी का मरा हुआ।

जो ज़िन्दा बच्चा था वह दोनों घोड़ियों का दूध पी रहा था। जब उनको बच्चा हुआ तब उनको चराने वाला वहॉ मौजूद नहीं था

सो जब वह वहॉ वापस आया तो वह यह पता नहीं लगा सका कि ज़िन्दा वाला बच्चा किसका है।

जब मौसम खत्म हुआ तो उन घोड़ियों के मालिक उनको लेने के लिये आये। उन्होंने दोनों ने कहा कि वह बच्चा उनकी घोड़ी का है। अब क्योंकि उनमें से कोई भी बच्चा दूसरे को देने के लिये तैयार नहीं था सो वे गवर्नर साहब के दरबार में आये थे।

कुछ सोचने के बाद गवर्नर साहब ने अपने आदमियों को हुक्म दिया कि ज़िन्दा बच्चे को पानी के पास ले जाया जाये। फिर इसको नाव में बिठा कर नदी के बीच में ले जाया जाये। उस बच्चे की असली मॉ उसको बचाने के लिये उसके पीछे पीछे तैर जायेगी जबकि दूसरी घोड़ी किनारे पर ही खड़ी रहेगी।

ऐसा ही किया गया। इस तरह से इस मामले का फैसला हुआ।

तीसरी कहानी

एक बार एक आदमी ने अपनी मॉ को रखने से मना कर दिया। उसकी मॉ विधवा थी और उसके कोई दूसरा बेटा नहीं था सो उसकी मॉ को नहीं पता कि वह इस हालत में क्या करे। वह गवर्नर साहब के पास गयी और उनके पैरों में झुकते हुए अपनी सहायता की प्रार्थना की।

वह रो कर बोली — "ओ माई लौर्ड। मैं विधवा हूॅ। मेरे केवल एक ही बेटा है। वह भी मुझे थोड़ा सा खाना कपड़ा और अपने घर

के एक कोने में रहने की जगह देने से मना करता है। ऐसी हालत में मैं क्या करूँ। मैं काम नहीं कर सकती। मेरी आखें काम नहीं करतीं और मुझमें अब ताकत भी बहुत नहीं है। आप अपनी अक्लमन्दी और समझदारी के लिये मशहूर हैं आप ही मुझे कुछ सलाह दें कि मैं क्या करूँ।"

विधवा की शिकायत सुन कर गवर्नर साहब ने उस बुढ़िया विधवा के बेटे को बुला भेजा। अपनी माँ को न रखने के लिये उसको काफी डॉटा। उन्होंने कहा कि तुम तो उसके इतने कर्जदार हो कि उसका कर्जा ज़िन्दगी भर नहीं चुका सकते।

नौजवान बोल — "मैं इसका कोई कर्जदार नहीं हूँ। इसने मुझे कभी एक पैसा भी नहीं दिया। उलटे यह मेरी कर्जदार है। मैंने इसको तीन साल तक रखा पर अब मैं इसको बिल्कुल नहीं रख सकता। देखभाल करने के लिये अब मेरी अपनी पत्नी है मेरा अपना परिवार है।"

गवर्नर साहब बोले — "तुम्हें शर्म आनी चाहिये। क्या यह जरूरी है कि मैं तुम्हें यह बताऊँ कि तुम अपनी माँ के कितने कर्जदार हो। तुम्हारी ज़िन्दगी तन्दुरुस्ती और ताकत सब उसी की दी हुई है। नौ महीने तक किसने तुम्हें अपने पेट में रख कर देखभाल की। उस समय में किसने तुम्हें खिलाया।

किसने तुम्हें जलने गिरने और दूसरी मुसीबतों से बचाया। किसने तुम्हारे लिये कई साल तक चावल कूटा और खाना बना कर

खिलाया। किसने तुम्हें तुम्हारी शादी और तुम्हारे बच्चे होने तक तुम्हें बड़ा किया?"

नौजवान बोला — "पर यह सब काम तो हर माँ करती है और करना चाहती है। अगर वह यह सब काम नहीं करती तो वह किसके लिये जीती।"

"यह तो तुम ठीक कहते हो..." यहाँ आ कर गवर्नर साहब थोड़ा रुक गये और अपने वज़ीरों में से एक वज़ीर की तरफ देख कर बोले — "तुम देखो कि यह आदमी अपनी पेट से पाँच सेर पानी का थैला बाँध कर चार सेर चावल कूट सकता है या नहीं। और अगर यह अपना काम ठीक से और समय से नहीं कर पाता तो इसको पीटो।"

ऐसा ही किया गया। नौजवान जल्दी ही थक गया। उसके चेहरे और गर्दन पर पसीना बहने लगा। आखिर वह धान कूटने वाला मूसल और नहीं उठा सका। और तब तक चावल भी आधे से कम कुटा था।

यह देख कर गवर्नर साहब के आदमी ने उसके नंगे बदन पर कोड़े मारना शुरू किया पर उसे मारने से भी क्या फायदा। वह तो उसके बाद चावल का एक दाना भी नहीं कूट सका। उसको अधमरी हालत में गवर्नर साहब के पास ले जाया गया।

गवर्नर साहब बोले — "मुझे तुमसे कुछ और नहीं कहना है। इसके बाद तुमने कम से कम कुछ तो जाना होगा कि तुम्हारी माँ ने

तुम्हारे लिये क्या क्या किया होगा। जाओ उसका यह कर्ज अपने नम्र शब्दों से और उसकी सेवा कर के वापस करो।"

चौथी कहानी

एक बार एक मुसलमान को एक पंडित को कुछ रुपये देने थे पर उसने वे रुपये उसको देने से मना कर दिया। आखिर यह मामला गवर्नर साहब के दरबार में पहुँचा। उन्होंने दोनों की बातें सुनी और दोनों को अलग अलग कमरों में बिठा दिया।

कुछ देर बाद उन्होंने पंडित को बुलाया और उससे पूछा कि क्या वह सच कह रहा था कि उस मुसलमान को उसे रुपये देने थे। पंडित ने कहा कि वह सच कह रहा था।

इस पर गवर्नर साहब ने कहा — "तब तुम यह चाकू लो और इससे उस बेवफा मुसलमान की नाक काट लो।"

पंडित ने उससे माफी माँगी कि उसको अपने पैसे की इतनी परवाह नहीं थी कि उसके लिये वह उसकी नाक काटे।

तब गवर्नर साहब ने उसे उसके कमरे में वापस भेज दिया। जैसे ही वह अपने कमरे में गया उन्होंने मुसलमान को उसके कमरे से बुला भेजा। मुसलमान आया तो उससे पूछा कि क्या वाकई पंडित ने उसे रुपये दिये थे और अब वह उनको उसे वापस नहीं करना चाहता था।

मुसलमान ने जवाब दिया कि पंडित ने उसे कोई पैसा नहीं दिया। वह उसे कौन सा पैसा वापस करे। गवर्नर साहब बोले — "तब यह चाकू लो और अपने ऊपर झूठा इलजाम लगाने के जुर्म में उस पंडित के कान काट लो।"

वह नीच मुसलमान तुरन्त ही उठा चाकू लिया और पंडित के कान काटने चल दिया। गवर्नर साहब ने उसको भी तुरन्त ही वापस बुला लिया और उससे कहा — "अब मुझे पता चला कि तुम लोगों में से कौन झूठ बोल रहा है। जाओ और पंडित का पैसा वापस करो और साथ में जुर्माना भी भरो।

मुझसे अब और ज़्यादा झूठ बोलने की जरूरत नहीं है। थोड़े से पैसे के लिये जो आदमी दूसरे आदमी का कान काटने को तैयार हो उस पर विश्वास नहीं किया जा सकता।"

41 उनका अकेला लाल[13]

एक बार की बात है एक राजा था जिसको अपने बेटे को उसकी फिजूलखर्ची और बुरे कामों की वजह से अपने राज्य से बाहर निकालना पड़ा। राजकुमार ने अपने तीन दोस्तों के साथ अपने पिता का देश छोड़ दिया क्योंकि उसके वे दोस्त उसको छोड़ना नहीं चाहते थे।

उसने अपने साथ रास्ते के खर्च के लिये लाल[14] का एक थैला भी ले लिया। एक रात जब वह और उसके साथी गहरी नींद सोये हुए थे उसका यह थैला चोरी हो गया। अब उनके पास केवल एक लाल रह गया जो इत्तफाक से उनमें से एक के पास था।

जब वे एक शहर पहुँचे तो वे उसे बेचने के लिये बाजार गये ताकि वे उससे मिले पैसे से कुछ खाना पीना खरीद सकें। जब वे दूकानदार से उसको बेचने के लिये उसका मोल भाव कर रहे थे तभी इत्तफाक से वहाँ का राजा उधर से गुजरा। राजा ने उनसे पूछा तुम्हारे पास क्या है।

[13] Their Only Ruby (Tale No 41)

[14] Laal means rubies – one of the nine precious stones. See its picture above.

राजकुमार बोला — “राजा साहब हमारे पास एक लाल है जिसे हम बेचना चाहते हैं पर हमको कोई ऐसा अमीर आदमी नहीं मिल रहा जो उसको खरीद सके।”

राजा बोला — “दिखाओ मुझे।”

राजकुमार ने वह लाल उसको दिखा दिया। जब राजा ने उस सुन्दर पत्थर को देखा तो उसकी इच्छा उसको खरीदने की हुई। उसने बहाना बनाया कि वह लाल तो उसका था और राजकुमार ने उसे उसके खजाने से चोरी कर लिया था।

राजा बोला — “यह लाल तो मेरा है मैं इसे पहचानता हूँ। तुमने इसे चोरी कर लिया होगा।”

तब उसने सिपाहियों के सरदार से जो उसके साथ ही था उन चारों को पकड़ने का हुक्म दिया और जब तक आगे की जॉच हो उनको जेल में बन्द करने का हुक्म दिया।

राजकुमार और उसके साथी राजा के इस व्यवहार पर भौंचक्के रह गये। वे बोले — “राजा साहब आप हमारी कहानी तो सुन लीजिये फिर आप हमारे बारे में अपनी राय बदल देंगे। हम लोग चोर नहीं है बल्कि ईमानदार आदमी हैं।

हममें से एक राजा का बेटा है जिसकी वैसी ही इज़्ज़त ताकत और अमीरी है जैसी कि आपकी है। क्योंकि उसको देश निकाला दे दिया गया है इसलिये वह इधर उधर घूमता फिरता है।

हम उसके दोस्त हैं जिन्होंने उसके साथ रहना चुना है। हम चारों के बीच बस यही एक लाल है। आप इसे हमसे मत छीनिये राजा साहब हम आपसे प्रार्थना करते हैं क्योंकि यही एक लाल हमारी रोटी का साधन है।"

राजा को यह सुन कर उन पर दया आ गयी। उसने कहा कि वह लाल उनको वापस कर दिया जायेगा अगर वे यह बता दें कि वह लाल कौन से डिब्बे में रखा हुआ है। राजा के पास पॉच डिब्बे थे उनमें सबमें एक एक लाल रखा हुआ था। जाहिर है उनमें से एक डिब्बे में राजकुमार वाला लाल रखा था।

जब बक्सा चुनने का समय आया तो चारों ने बड़ी लगन से प्रार्थना की कि भगवान उनको रास्ता दिखाये कि वे वह डिब्बा पहचान सकें जिसमें उनका लाल रखा हुआ था। जैसे ही उन्होंने यह प्रार्थना की कि जिस डिब्बे में उनका लाल रखा हुआ था उस डिब्बे का ढक्कन अपने आप ही खुल गया।

यह देख कर राजा को खुशी भी हुई और आश्चर्य भी हुआ। उसने उनसे खुश हो कर उनका लाल तो उनको वापस कर ही दिया साथ में दूसरे चारों लाल भी दे दिये और उनको अपने महल में रहने के लिये कहा।

इस राजा के घर राजकुमार का व्यवहार इतना अच्छा था कि वह वहॉ बहुत लोकप्रिय हो गया और सब उसको पसन्द करने लगे। राजा ने भी अपनी बेटी की शादी उसके साथ कर दी और उसको

अपना वारिस घोषित कर दिया। राजकुमार के साथ जो उसके दोस्त थे उनको भी ऊँचे ऊँचे ओहदे दे दिये गये।

42 गीदड़ राजा[15]

एक बार की बात है एक दिन एक जगह बहुत सारे गीदड़ जमा हुए। उस दिन उनको अपना राजा चुनना था। शेरों का अपना राजा था। चीतों का अपना राजा था। तेंदुओं का अपना राजा था भेड़ियों का भी एक राजा था कुत्ते और दूसरे जानवरों के भी अपने अपने राजा थे।

पर उनका अपना कोई राजा नहीं था सो उन्होंने सोचा कि उनको भी अपना एक राजा चुनना चाहिये इसी लिये वे सब आज यहाँ इकट्ठे हुए थे। उस राजा को उनका सरदार होना चाहिये। उसको इस लायक होना चाहिये कि वह उनको रास्ता दिखा सके उनको सलाह दे सके और जब लड़ाई हो तो उनकी सेना को लड़ाई के लिये ले जा सके।

जब वहाँ सब इकट्ठा हो गये तो एक बूढ़ा गीदड़ मीटिंग शुरू करने की इच्छा से बोला — "अब आप लोग अपना राजा चुनें।"

इस पर सारे गीदड़ चिल्लाये — "आप ही हमारे राजा हों। आप हमसे उम्र में बड़े हैं आपका तजुर्बा भी हमसे ज़्यादा है। आपसे ज़्यादा अच्छा हमारा राजा और कौन हो सकता है।"

[15] The Jackal King (Tale No 42)

बूढ़े गीदड़ ने उनका कहा मान लिया और इस तरह से वह उनका राजा बन गया। अपने आपको दूसरों से अलग दिखायी देने के लिये उसने अपने बाल नीले रंगवा लिये और एक पुराना टूटा हुआ पंखा अपने गले में बॉध लिया।

एक दिन राजा गीदड़ अपने राज्य में अपने राज्य की देखभाल करता घूम रहा था। उसके साथ बहुत सारे गीदड़ भी थे कि उसके सामने एक चीता आ गया और उनके ऊपर दौड़ पड़ा। यह देख कर सारे गीदड़ वहॉ से भाग लिये और अपने राजा को वहीं छोड़ भूल गये।

राजा गीदड़ ने एक तंग गुफा में घुस कर अपनी जान बचायी। पर अफसोस वह गुफा इतनी तंग थी कि उसके गले में पंखा लटके होने की वजह से उसमें उसका सिर फॅस गया और वह पूरा अन्दर नहीं घुस सका।

चीते ने जब गीदड़ों के सरदार को इस तरह फॅसा देखा तो उसने वहॉ आ कर उसे पकड़ लिया और अपनी मॉद में ले गया जहॉ उसने उसको एक रस्सी से बॉध दिया ताकि वह वहॉ से कहीं भाग न सके।

पर कुछ देर बाद राजा गीदड़ वहॉ से किसी तरह भाग निकला और अपने लोगों में आ गया। उन्होंने उससे फिर से राजा बनने की और उनके ऊपर राज करने की प्रार्थना की पर राजा गीदड़ काफी कुछ भुगत चुका था सो उसने उनको धन्यवाद के साथ मना कर

दिया और बोला — “मैं ऐसे ही ठीक हूँ। ज़िन्दगी में एक बार राजा बनना ज़िन्दगी भर के लिये काफी है।”

इस तरह फिर गीदड़ों का अब कोई राजा न था। उनका अभी भी कोई राजा नहीं है। राजा की जगह अभी भी खाली है अगर तुम चाहो तो ... ।

43 काली और सफेद दाढ़ियाँ[16]

एक बार दो आदमियों में बहुत गाढ़ी दोस्ती हो गयी हालाँकि उनकी उम्र में काफी फर्क था फिर भी वे हमेशा एक दूसरे के साथ ही रहते और उनमें आपस में एक दूसरे की कोई बात छिपी नहीं थी। उनमें से जो बड़ा था उसकी बहुत सुन्दर सी कोयले जैसी काली दाढ़ी थी पर छोटे वाले की दाढ़ी काफी सफेद थी।

एक दिन वे दोनों टहल रहे थे कि छोटे दोस्त ने बड़े दोस्त से पूछा कि आपकी दाढ़ी अबसे पहले सफेद क्यों नहीं हो गयी। आप तो मुझसे दुगुनी उम्र के हैं।

बड़ा दोस्त बोला — "इसका राज़ यह है मेरे दोस्त कि मेरा घर स्वर्ग है। और मेरी पत्नी उस स्वर्ग का खुश खुश पेड़ है जिसकी शाखाओं पर लगातार फल आते रहते हैं – आराम के खुशी के सुख के। उनके फूलों की खुशबू से प्यार और पवित्रता की खुशबू महकती रहती है। ऐसे घर में आदमी जल्दी बूढ़ा नहीं होता। आओ और आ कर मेरा घर देखो। मैं तुम्हें अपना घर दिखाता हूँ।"

छोटा दोस्त तुरन्त ही तैयार हो गया।

सच बात तो यह थी कि उसको बड़े दोस्त की कहानी पर कुछ शक सा हो रहा था क्योंकि उसका अपना अनुभव इससे बिल्कुल ही

[16] The Black and White Beards (Tale No 43)

दूसरे तरीके का था। सो वे दोनों बड़े दोस्त के घर चल दिये। रास्ते भर वे बात करते चले जा रहे थे।

घर पहुँच कर बड़े दोस्त ने अपनी पत्नी को एक रूमाल भर कर रेत दिया और उससे उसकी रोटी बनाने के लिये कहा और वे दोनों खुद बाहर घूमते रहे। बड़े दोस्त की अच्छी पत्नी ने रेत की तरफ से अपनी ऑखें मूँद ली क्योंकि रेत की रोटी बनाना तो मुमकिन ही नहीं था पर उसको तो अपने पति का कहना ही करना था।

उसने सोचा शायद उस रेत की रोटी बन जाये सो वह उसकी रोटी बनाने के लिये तैयार हो गयी।

जब दोनों दोस्त घूम चुके तो वे घर के अन्दर आये। बड़े दोस्त ने अपनी पत्नी से पूछा कि रोटी बन गयी क्या। पत्नी बोली — "मैंने बहुत कोशिश की पर उसकी रोटी नहीं बनी। आप गुस्सा न हों मैंने अपनी भरसक कोशिश कर ली और इससे ज़्यादा तो मैं और कुछ भी नहीं कर सकती थी।"

तब बड़े दोस्त ने अपने छोटे दोस्त को एक तरफ बुला कर कहा — "तुमने देखा कि मेरी पत्नी कितनी सीधी है।"

छोटा दोस्त बोला — "हॉ वह तो मैं देख रहा हूॅ।"

"पर मैं तुमको उसका और ज़्यादा सीधापन और धीरज दिखाना चाहता हूॅ।" कह कर वह अपनी पत्नी की तरफ मुड़ा और उससे

उसने घर की सबसे ऊँची मंजिल पर जाने के लिये और वहॉ से तरबूज लाने के लिये कहा जो वहॉ रखे हुए थे।

उसकी पत्नी तुरन्त ही ऊपर चली गयी पर उसको वहॉ केवल एक ही तरबूज मिला। वह उसे ले आयी और ला कर अपने पति को दे दिया। उसने सोचा कि उसके पति ने अपने मेहमान के सामने अपनी बड़ाई करने के लिये झूठ बोल दिया होगा वरना उसको मालूम था कि ऊपर केवल एक ही तरबूज था।

पति बोला — "ऊपर जाओ और बड़ा वाला तरबूज ले कर आओ।" पत्नी उस तरबूज को ऊपर ले गयी और फिर से उसे ही ले कर वापस आ गयी।

पति ने कहा — "वहॉ इससे भी अच्छा तरबूज है उसे ले कर आओ।"

पत्नी बेचारी फिर ऊपर गयी और फिर उसी को ले कर वापस आ गयी। यह काम उससे 10 अलग अलग तरीके से कह कर कराया गया और वह बेचारी 10 बार ऊपर गयी और वही एक तरबूज ले कर वापस आ गयी।

बाद में बड़े दोस्त ने छोटे दोस्त को ऊपर जा कर दिखाया कि उसकी पत्नी ने क्या किया था। बेचारी पत्नी वह तो इस समय तक थक कर चूर हो गयी थी। वह इस समय सबसे नीचे वाली सीढ़ी के पास बेहोश सी बैठी थी।

बड़े दोस्त ने शान के साथ कहा — “क्या मेरी पत्नी अच्छी नहीं है?”

छोटे दोस्त ने कहा — “हॉ वह तो है। अब मुझे आपकी काली दाढ़ी के राज़ का पता चला — घर की खुशी शान्ति और सन्तुष्टि का मिला जुला रंग किसी भी आदमी को ज़िन्दगी भर जवान रखने के लिये काफी है। आइये अब आप मेरा घर देखिये।”

बड़ा दोस्त बोला — “चलो वह भी देखते हैं।”

सो वे दोनों छोटे सफेद दाढ़ी वाले दोस्त के घर गये। जैसे ही वे घर में घुसे तो एक स्त्री गुस्से से चीखती चिल्लाती आयी — “आप अब तक कहॉ थे। कहॉ समय बर्बाद कर रहे थे। मैं यहॉ इस जेल में पड़ी सड़ रही हूँ।”

उसका पति से तो डर के मारे उसका कोई जवाब ही नहीं बन पा रहा था। जब तूफान थोड़ा सा शान्त हुआ तो उसने बड़ी नम्रता से उससे अपने और अपने दोस्त के लिये खाना लाने के लिये कहा।

पत्नी ने सूजे हुए मुँह से कुछ बचा खुचा ठंडा खाना जो उससे और उसके बच्चों से बच गया था और गरीब लोगों के लिये ठीक था उन दोनों के सामने ला कर रख दिया। लेकिन उस बेचारे को थोड़ा सा मॉस भी चाहिये था।

उसने उससे मॉस देने के लिये कहा भी पर क्योंकि वह अपने पति के खिलाफ अपने दिल में कई तरह की शिकायतें लिये बैठी थी वे सब उसके दिल में इस समय उबाल खाने लगीं।

उससे अब और ज़्यादा सहा नहीं गया तो उसने मिट्टी का एक बड़ा सा बर्तन उठाया जिसमें वह चावल पकाया करती थी उसका निशाना अपने पति के सिर की तरफ साध कर उसे मार दिया।

केवल इसी से उसका जी नहीं भरा उसने उससे टूटे हुए बर्तन की कीमत भी माँगी जिसके टुकड़े उसके पैरों के पास बिखर गये थे। छोटा दोस्त बेचारा अपने बड़े दोस्त के साथ घर से बाहर निकल गया।

बाहर निकल कर उसने अपने बड़े दोस्त से कहा — "आपने देखा मेरा घर। मेरे घर में से बदबू आती है। मुझे यह जगह बिल्कुल अच्छी नहीं लगती। यही मेरी टूटी हुई आत्मा की वजह है। यही मेरी कम उम्र में सफेद दाढ़ी की वजह है।"

44 एक जुलाहे की कहानी[17]

एक बार की बात है कि एक गॉव में एक जुलाहा रहता था जो हर साल एक बहुत बढ़िया कपड़ा बनाता था और उसे राजा को भेंट कर आता था। राजा उसके इस कपड़े से इतना खुश होता था कि हर बार वह उसको **2000** रुपये देता था।

इस जुलाहे की बड़ी बड़ी इच्छाऐं थीं। हालॉकि राजा और उसके दरबारी सभी उसकी कारीगरी की बहुत बड़ाई करते थे पर फिर भी वह खुद उससे सन्तुष्ट नहीं था। इस लिये वह हर साल पहले साल से भी ज़्यादा अच्छा कपड़ा बनाने की कोशिश करता था सुन्दरता में भी और मुलायमियत में भी।

एक दिन एक चोर को इस जुलाहे के बारे में पता चला तो उसने उसका अगला वाला टुकड़ा लेने की कोशिश की ताकि वह खुद उसको ले जा कर राजा को दे सके और उनकी बड़ाई पा सके। उसने अपने मन में सोचा कि उस कपड़ा बनने से पहली रात को वह उस जुलाहे के घर जायेगा और वह कपड़ा चोरी कर लेगा।

अब यह जुलाहा एक बहुत ही धार्मिक आदमी था। पड़ोसी हमेशा ही उसकी इस प्रार्थना को सुनते रहते "या खुदा मुझे बुरी बात कहने से बचा।"

---

[17] The Story of a Weaver (Tale No 44)

चोर ने भी उसकी इस प्रार्थना को कई बार सुना था पर वह इतना नीच था कि उसको किसी बात की चिन्ता ही नहीं थी। फिर भी उसके इन शब्दों ने उसके ऊपर काफी असर किया जैसा कि हम अभी देखेंगे।

आखिर उस साल का वह कपड़ा बन कर तैयार हुआ। वह अगले दिन बना कर तैयार कर लिया गया। जुलाहा नहाया धोया अपने सबसे साफ और अच्छे कपड़े पहने और उस कपड़े को ले कर राजा के पास चला।

रास्ते में उसको चोर मिला। चोर ने कहा — "क्या मौका है। इसको कुछ समय और इन्तजार करना था।"

जब राजा ने उसके कपड़े को देखा तो वह उसको देख कर पिछले सालों से भी ज़्यादा खुश हुआ और इस बार उसने उसको चार हजार रुपये दिये। उसने अपने वजीरों से कहा — "ऐसी कारीगरी को हमको बढ़ावा देना चाहिये। पर यह तो बताओ कि हम इस सुन्दर कपड़े को किस तरह से सबसे अच्छे तरीके से इस्तेमाल कर सकते हैं।"

एक वजीर बोला — "राजा साहब आप इसका मेजपोश बना लें ताकि यह हमेशा आपकी ऑखों के सामने रहे।"

दूसरा वजीर बोला — "राजा साहब आप इसकी पगड़ी बनवा लें। ऐसा कपड़ा तो राजा के सिर ढकने के लिये बहुत अच्छा है।"

एक दूसरा वजीर बोला — "राजा साहब आप इसकी अपने घोड़े की जीन बनवा लें। वहाँ यह सबसे अच्छा लगेगा।"

पर राजा को इनमें से कोई भी सलाह पसन्द नहीं आयी। तो आखिर उसने जुलाहे की तरफ देखा और उससे पूछा कि वह उसका क्या करे — "खुदा ने तुम्हें समझदारी दी है शायद तुम्हीं कुछ मुझे बताओ कि इसको कैसे इस्तेमाल किया जाये।"

जुलाहा सिर झुका कर बोला — "राजा साहब आप इसको अपने दफन के लिये रख लें। जब लोग आपका शरीर कब्र की तरफ ले जा रहे हों तब इसको आपका शरीर ढकने का काम करना चाहिये।"

यह सुन कर राजा बहुत गुस्सा हो गया। उसने सोचा कि यह जुलाहा उसकी मौत की इच्छा कर रहा था। उसने कहा — "इस कपड़े को मेरी मौत के समय के लिये रख दो। और यह आदमी मेरी मौत का प्लान बना रहा है इसलिये इसको ले जाओ और इसका सिर धड़ से अलग कर दो।

चोर भी वहीं मौजूद था वह भी सब देख सुन रहा था। वह बोला — "राजा साहब मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप अपनी इस सजा को रोक लीजिये। अपने इस नौकर को इजाज़त दीजिये कि यह आपसे कुछ कह सके।"

राजा बोला — "इस आदमी को हमारे सामने आने दो।"

चोर सामने आ कर बोला — “राजा सहब इस जुलाहे पर दया कीजिये। यह आदमी तो हर घंटे यही प्रार्थना करता है कि खुदा इसकी जबान से कोई खराब बात न कहलवाये और अब इत्तफाक से आज यह अपनी जबान से ही पकड़ा गया है।”

राजा बोला — “ठीक है हम इसे माफ करते हैं पर आगे से इसको ध्यान रखना चाहिये कि इसको कभी राजा की मौत के बारे में नहीं बोलना चाहिये।”

45 डाकुओं को लूटा[18]

बहुत पुरानी बात है कि एक बहुत बड़ा राजा था जिसकी अमीरी और बड़ापन देख कर लोग उससे जलते थे। बहुत सारे राजाओं ने तो उससे लड़ने की भी कोशिश की पर हार गये। इससे उसको ऐसा लगने लगा कि उसको कोई जीत नहीं सकता सो वह अपने राज्य और सेना की तरफ से लापरवाह हो गया।

इस बीच एक दूसरा ताकतवर राजा अपनी सेना को बहुत अच्छी तरह से ट्रेन कर रहा था। उसने देखा कि अब वह राजा अपने राज्य की तरफ से काफी लापरवाह हो गया है तो उसने उस राजा पर हमला करने का फैसला किया।

दोनों सेनाऐं एक बड़े से मैदान में मिलीं और कई दिन तक बड़ी बहादुरी से लड़ती रहीं। कुछ समय तक तो लड़ाई बराबर की सी लगती रही पर फिर आखीर में वह बड़ा और अमीर राजा मारा गया और उसकी सेना इधर उधर बिखर गयी।

अजनबी राजा उसके राज्य में घुसा और उसकी जगह राज करने लगा।

---

[18] The Robbers Robbed (Tale No 45)
[My Note : This is like Ali Baba and Forty Thieves story of Arabian Nights. Read it in English at : http://sushmajee.com/shishusansar/stories-arabian-nights/arabian-2/44-aleebaabaa-1.htm and in Hindi in the Book “Like Ali Baba Stories” along with other similar stories by Sushma Gupta]

राज्य में आ कर उसका पहला काम यह था कि उसने पुराने राजा की रानी और उसके दोनों बेटों को राज्य से बाहर निकाल दिया। उसने उनको बिना कुछ दिये बाहर भेज दिया। रानी एक सेर चावल रोज के लिये सारा दिन चावल कूटती थी जबकि उसके दोनों बेटे भीख मॉग कर जो कुछ मिल जाता था ले आते थे।

एक दिन रानी ने अपने बड़े बेटे को जंगल से कुछ लकड़ी काटने के लिये कहा ताकि वह उसको बेच सके। एक दिन जब वह लड़का जंगल में लकड़ी काट रहा था तो उसने कुछ दूर पर एक कारवॉ जाता देखा जिसमें कई आदमी ऊॅट और खच्चर थे। सब ऊॅटों और खच्चरों पर सामान लदा हुआ था। वास्तव में वे डाकू थे।

लड़का उनको देख कर डर गया क्योंकि उसको लगा कि अगर उनको यह पता चल गया कि वह यहॉ है तो शायद वे उसको मार देंगे। सो अपने आपको छिपाने के लिये वह एक पेड़ पर चढ़ गया। वह कारवॉ उसी जंगल में उसी पेड़ के पास में बने एक मकान के पास जा कर रुक गया।

उसने देखा कि लोगों ने अपने ऊॅटों और खच्चरों से सामान उतार कर उस मकान में रखा। उस मकान का दरवाजा किसी जादू से अपने आप ही खुल जाता था और अपने आप ही बन्द हो जाता था। वे जादू के शब्द उसने साफ साफ सुन लिये थे। उसने यह सब देखा और वे जादू के शब्द याद कर लिये।

जब वे डाकू वहाँ से चले गये तो उसने उस मकान में खुद घुसने का विचार किया। सो अगले दिन जब डाकू वहाँ से चले गये वह पेड़ से उतरा और मकान की तरफ गया और वे जादू के शब्द बोले जो उसने पहले दिन डाकुओं के मुँह से सुने थे।

मकान का दरवाजा तुरन्त खुल गया और उसने उस घर में कदम रखा। उसने उसमें बहुत बड़ा खजाना देखा। उसने देखा कि सोने चाँदी और कीमती पत्थरों के बड़े बड़े ढेर लगे हुए हैं। बढ़िया कारीगरी की हुई चीज़ें भी वहाँ रखी हुई हैं।

जितना खजाना उससे हो सका उतना खजाना उसने पास में चर रहे एक ऊँट पर लाद लिया और फिर से वही जादू के शब्द बोल कर घर का दरवाजा बन्द किया और अपने घर चला गया। उसकी माँ उसके उस दिन के काम से बहुत खुश हुई।

उसके अगले दिन उसके छोटे भाई ने भी सोचा कि वह भी उस जंगल जायेगा और अपनी किस्मत आजमायेगा। सो उसने भी जादू के वे शब्द याद कर लिये जिनसे उस घर का दरवाजा खुलता और बन्द होता था और वह उस ओर चल दिया।

जंगल पहुँच कर वह भी उस घर के पास वाले पेड़ पर चढ़ गया और डाकुओं के वहाँ आने का बड़ी धीरज से इन्तजार करने लगा। शाम को वे लोग बहुत सारा खजाना ले कर वहाँ आये। मकान के पास पहुँच कर उन्होंने उन्हीं जादू के शब्दों से उसका दरवाजा खोला। पर अन्दर घुस कर उनको आश्चर्य भी बहुत हुआ

और गुस्सा भी बहुत आया जब उन्होंने यह देखा कि उनकी गैरहाजिरी में कोई वहाँ आया था और उनका कुछ सामान चुरा कर ले गया था।

उन्होंने उस आदमी के ऊपर जिसने भी यह काम किया था कई भयानक कसमें खायीं कि छोटा भाई तो बहुत ही डर गया और अपने इस आने पर पछताने लगा। सुबह को वे डाकू वहाँ से चले गये।

जैसे ही वे वहाँ से चले गये वैसे ही वह पेड़ से उतरा और उस मकान के सामने जा कर वे जादू के शब्द बोले जिनसे दरवाजे को खुलना था। शब्दों ने काम किया और दरवाजा खुल गया।

पर जैसे ही वह उसके अन्दर घुसा दरवाजा उसके पीछे बन्द हो गया। लड़का चिल्लाता रहा जब तक कि उसकी आवाज नहीं फट गयी कि वह दरवाजा किसी तरह से खुल जाये और वह वहाँ से बाहर निकल जाये पर वह दरवाजा किसी हाल में भी खुल कर नहीं दिया।

जाहिर है कि लड़के ने उन जादू के शब्दों में से कुछ शब्द जोड़े कुछ निकाले पर उससे कोई फायदा नहीं हुआ। दरवाजा नहीं खुलना था नहीं खुला।

अब वह लड़का अपनी बदकिस्मती से उस मकान के अन्दर ही बन्द रहा। जब तक वह वहाँ बन्द रहा और उन डाकुओं का इन्तजार करता रहा। अजीब अजीब ख्याल उसके मन में आते रहे।

वह बस यही सोचता रहा कि वे डाकू जब शाम को लौटेंगे और उसको वहाँ देखेंगे तो उसके साथ क्या करेंगे।

बच निकलना तो वहाँ से नामुमकिन सा ही था। वह अपनी बनायी हुई जेल में खुद ही फँस गया था और अब उसको अपने किये का फल भुगतना था।

शाम को उसे डाकुओं के आने की आवाज सुनायी दी। दरवाजा खुला और डाकू लोग अन्दर आये। जैसे ही इन्होंने इस लड़के को एक कोने में डरा हुआ और रोता हुआ बैठा देखा तो उनके चेहरे पर एक जंगली किस्म की मुस्कुराहट आ गयी।

उसको देखते ही उनके मुँह से निकला — "ओह तो यह है हमारा चोर। इसी ने हमारे घर में घुसने की जुर्रत की है। हम इसके टुकड़े टुकड़े कर देंगे और इस मकान के चारों तरफ फेंक देंगे ताकि दूसरे लोग यहाँ तक आने में डरें।

उन्होंने यह सचमुच में ही किया क्योंकि वे तो खून के प्यासे थे उनको किसी से कोई हमदर्दी नहीं थी और जा कर सो गये। अगले दिन सुबह वे लोग रोज की तरह फिर अपने काम पर चले गये जैसे कि कुछ हुआ ही नहीं था।

जब डाकू अपने घर से चले गये तो बड़ा भाई अपने छोटे भाई की खोज में वहाँ आया ताकि वह उसकी खजाना ले जाने में सहायता कर सके।

पर वह तो दुख के मारे पागल सा हो गया जब उसने अपने भाई के शरीर के टुकड़े उस जगह के आस पास पड़े देखे। वह बोला — “उनको इसका फल भुगतना पड़ेगा।”

फिर उसने जादू के शब्दों का इस्तेमाल कर के उस मकान का दरवाजा खोला। उसने वहाँ से सबसे ज़्यादा कीमती चीज़ें इकट्ठी कीं जो उससे ली जा सकीं उन्हें एक बोरे में भरा। उसके बाद उसने एक और बोरे को उस मकान के बाहर खाली किया और उसमें अपने भाई की लाश के टुकड़ों को भरा।

उसके बाद उसने वही जादू के शब्द बोल कर घर का दरवाजा बन्द किया दोनों बोरे अपने कन्धे पर लादे और घर चल दिया। घर आ कर उसने अपने भाई की लाश को सिला और एक कपड़े में बाँध कर उसे दफना दिया।

उस शाम जब डाकू घर लौटे तो जो कुछ उनकी गैरहाजिरी में उनके घर में हुआ था उसे देख कर वे बहुत गुस्सा हुए। उन्होंने पक्का इरादा कर लिया कि वे चोर को ढूँढ कर ही दम लेंगे। वे जब तक कोई दूसरा डाका नहीं डालेंगे जब तक उस चोर को नहीं ढूँढ लेंगे।

वे लोग शहर गये और बाजार में अलग अलग जगहों पर रहने लगे ताकि वे यह देख सकें कि उनका चोर वहीं कहीं रह रहा था या नहीं। वे किसी ऐसे आदमी की तलाश में थे जो एक रात में ही अमीर हो गया हो।

उनमें से एक डाकू एक दर्जी से मिला जिसने एक छोटे राजकुमार के दफ़न के लिये कपड़े सिले थे जिसको किसी ने बहुत बुरी तरह से काट दिया था। उसी से उसको यह भी पता चला कि उसके मॉ और भाई दोनों रात भर में ही अमीर बन गये थे। पर ऐसा कैसे हुआ यह वह नहीं बता सका।

कुछ लोगों ने कहा कि वे शाही खानदान के थे पर किस खानदान के यह वह नहीं जानता था।

सो डाकू गया और उसने उस घर का पता लगाया जिसमें रानी और राजकुमार रहते थे। उसने उस घर पर निशान लगा दिया ताकि वह उसे याद रख सके। राजकुमार ने यह देखा तो उसको कुछ पता चल गया कि उस निशान का क्या मतलब था सो उसने आस पास के दूसरे घरों पर भी वैसा ही निशान लगा दिया।

ऐसा करके उसने डाकुओं को बहका दिया। जब दोबारा वह डाकू वहॉ आया तो बहुत सारे घरों पर वैसा ही निशान देख कर चक्कर खा गया और असली मकान को नहीं पहचान सका।

उन्होंने आपस में कहा ऐसे काम नहीं चलेगा। हमें उस दरजी से ठीक से पूछना पड़ेगा कि वे लोग कहॉ रहते हैं। फिर उनके घर जा कर उनसे दोस्ती बढ़ानी पड़ेगी। इस तरह से हम उस राजकुमार को जल्दी ही मार सकेंगे।

सबने इस प्लान को माना और डाकुओं के गिरोह के सरदार को इस काम के लिये चुना। उसने जल्दी ही उनके घर का पता ठिकाना

मालूम कर लिया और राजकुमार और उसकी माँ से दोस्ती कर ली। अब वह उनके घर कभी भी जा सकता था।

एक दिन रानी ने उसके कोट के अन्दर एक छुरा छिपा हुआ देख लिया और इससे और एक दो दूसरी चीज़ों से जो उसने अलग अलग समय पर देखीं उसको यह पता चल गया कि यह आदमी दोस्त नहीं था बल्कि एक दुश्मन और डाकू था।

उसने उससे पीछा छुड़ाने की कोशिश की सो एक दिन उसने अपने बेटे और उसके दोस्त से कहा कि वह उनके सामने नाचना चाहती है। वे लोग राजी हो गये। जब वह उनके सामने नाचने आयी तो उसके एक हाथ में एक तलवार थी जिसको वह बड़े शानदार तरीके से हिला हिला कर नाच रही थी।

नाचते नाचते एक बार वह डाकू की तरफ बढ़ी और धीरे धीरे उसकी तरफ चलते हुए गाने पर ठीक से नाचते हुए मौका देख कर उसने डाकू का सिर काट दिया।

यह देख कर राजकुमार डर के मारे चिल्लाया और बोला — "माँ यह तुमने क्या किया?"

रानी बोली — "बेटा मैंने सिर्फ तुम्हारी जगह बदली है। बजाय इसके कि वह तुम्हें मारता मैंने उसे मार दिया। देखो तुम उसके कोट के नीचे देखो वहाँ उसका छुरा छिपा हे जिससे वह तुम्हें मार सकता था। बेटे वह तुम्हारा दोस्त नहीं था वह वह डाकू था जिसने तुम्हारे भाई को मारा था। आज मैंने उसे मार दिया।"

राजकुमार बोला — "माँ मैं तुम्हारा कर्ज कैसे चुका पाऊँगा। तुमने मेरी सुरक्षा पर ऐसी नजर रखी। मुझे तो इस आदमी में कभी कोई खराबी दिखायी ही नहीं दी। मैंने उसके पास यह छुरा कभी नहीं देखा। यह जरूर ही अपने खजाने का हिस्सा लेने के लिये आया होगा।"

डाकुओं ने जब अपने सरदार की मौत के बारे में सुना तो उन्होंने बचा हुआ खजाना आपस में बाँट लिया और दूसरी जगह रहने चले गये। बाद में राजकुमार की शादी हो गयी और वह डाकुओं के उस लूटे हुए खजाने से मालामाल हो गया।

46 एक नौजवान जुआरी व्यापारी[19]

बहुत पुरानी बात है कि एक बार एक बहुत ही बड़ा और अमीर व्यापारी था। कुछ का कहना था कि वह काश्मीरी था और श्रीनगर में रहता था। दूसरे लोग कहते थे कि वह कहीं दूर से आया था। जबकि कुछ और लोग यह विश्वास करते थे कि इस कथा में कुछ भी काश्मीरी नहीं है।

खैर जो कुछ भी सही हम इस कथा को पढ़ते हैं और फिर यह तय करते हैं कि सच क्या है।

तो इस व्यापारी के एक बहुत ही पढ़ा लिखा और अक्लमन्द बेटा था पर उसमें एक खराबी थी कि वह बहुत बड़ा जुआरी था। व्यापारी बेचारा उससे बहुत परेशान था। उसकी समझ में ही नहीं आता था कि वह उसका क्या करे। जो भी पैसा या कोई भी कीमती चीज़ उसके हाथ में आती वह उससे जुआ खेलने चला जाता।

कई बार उसको जुए की बुराइयाँ बतायी गयीं। कई बार उसको यह बताया गया कि अगर वह इसी तरह से जुआ खेलता रहा तो उसका सारा व्यापार चौपट हो जायेगा। कई बार उसके दोस्तों ने भी उसको बहुत समझाया पर उसकी समझ में जुए की

[19] The Young Gambling Merchant (Tale No 46)

बुराई कभी समझ में नहीं आयी बल्कि उसकी जुआ खेलने में रुचि धीरे धीरे और ज़्यादा ही बढ़ती गयी।

यह देख देख कर वह व्यापारी बहुत दुखी रहता था। इस दुख से उसकी कमर झुक गयी थी। उसके चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ गयी थीं और जब वह चलता था तो उसकी टाँगें काँपती थीं। उसकी यह हालत उसको कब्र की तरफ जल्दी जल्दी ढकेल रही थी।

इस बात के विचार ने ही उसे जितना पैसा उसने अपने व्यापार करने की होशियारी से कमाया था उसको अपने इस जुआरी बेटे को दे कर जाना पड़ेगा बहुत परेशान किया हुआ था। इस परेशानी को वह कैसे दूर करे यह उसकी समझ में नहीं आता था।

बहुत दुखी हो कर वह एक दिन बोला — "इस खजाने को उसे देने से तो अच्छा है कि मैं अपना यह खजाना जमीन में कहीं दबा जाऊँ। अब मुझे पता चल गया कि मुझे क्या करना है।

मैं अपना खजाना जमीन में दबा दूँगा और ऐसा दिखाऊँगा जैसा कि लोग सोचते हैं वह सब झूठ है। मैं अपने खर्चे भी बहुत कम कर दूँगा और अपने मरने के समय दिखाऊँगा कि मैं अपने पीछे बहुत कम पैसा छोड़ कर जा रहा हूँ।"

ऐसा प्लान बना कर उसने जब भी उसको मौका लगा उसने अपने मकान के नीचे वाले कमरों के फर्शों में कई गड्ढे खोदे और उनमें अपना सोना और खजाना दबा दिया।[20]

उसके बाद उसने उन जगहों की बड़ी सावधानी से एक लिस्ट बनायी। बाद में उसने वह लिस्ट एक सोने के ब्रेसलैट में बन्द करवा दी और वह ब्रेसलैट अपने बेटे की पत्नी को देते हुए कहा — "देखो बेटी इस ब्रेसलैट को सँभाल कर रखना। यह तुम्हारे लिये एक ताबीज़ की तरह काम करेगा। पर अगर मेरे मरने के बाद तुम्हारा पति बहुत ही गरीब हो जाये तो तुम इसे उसे बेचने के लिये दे सकती हो।"

इसके बाद ही उस बूढ़े व्यापारी को कुछ चैन मिला। उसको पूरा यकीन था कि उसका बेटा जो कुछ भी थोड़ा बहुत पैसा उसके लिये छोड़ कर जायेगा उसे वह बहुत जल्दी ही जुए में उड़ा देगा।

फिर उसे गरीबी का मजा चखने को मिलेगा तो उसकी बहू उसको अपना ब्रेसलैट बेचने के लिये देगी और जब वह ब्रेसलैट को खोलेगा तो उसमें उसको उसके दबाये हुए खजाने की लिस्ट मिलेगी।

वह उस खजाने को खोद कर उसे निकाल लेगा और फिर से अमीर हो जायेगा। उस गरीबी का स्वाद चख कर शायद वह अपना

---

[20] Kashmiris, like all other orientals are very fond of hiding money and valuables in the ground. Pandits think that a snake watches over the treasure and will not allow anybody else but the rightful owner of the money to touch thereof. Muslims believe that Khuda looks after it and will not permit it to pass into the hands of any except those in whose Kismat the discovery of it is written.

जुआ खेलना छोड़ दे और अपनी बाकी की ज़िन्दगी शान्ति और सुख से गुजार ले।

कुछ समय बाद वह व्यापारी मर गया। शहर भर को उसके मरने का दुख हुआ। उसका परिवार भी बहुत दुखी था क्योंकि उस बूढ़े की सभी लोग बहुत इज़्ज़त करते थे और उसको सभी बहुत प्यार भी करते थे।

उसके बेटे ने पूरी श्रद्धा और आदर के साथ उसके सारे अन्तिम संस्कार किये। उसके मरने के 10 दिन बाद तक उसके पिंड दान दिये गये प्रेतों के लिये जल दिया गया। ग्यारहवें दिन बड़ा श्राद्ध किया गया।

इस मौके पर बहुत सारे ब्राह्मणों को खाना खिलाया गया जो ये रस्में करने के लिये आये थे। काफी सारा पैसा भिखारियों को दान में दिया गया जो उसके घर इस उम्मीद में आये थे। छह महीने तक ये श्राद्ध बराबर किये गये और हर बार बड़ी बड़ी दावतें हुईं।

इसलिये इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि इस सबके बाद जब बेटे ने अपना पैसा देखा तो उसके पास तो कुछ भी नहीं बचा था। उसको बड़ा दुख हुआ और इसी दुख में वह अपनी माँ के पास गया।

पर बजाय उसकी कोई सहायता करने के उसकी माँ ने उसे पहले से भी ज़्यादा डाँटा कि उसने अपने पिता की कभी नहीं सुनी और पैसा यों ही उड़ाता रहा। यह उसी का फल था।

यह सब सुन कर बेटा पछताता रहा कि काश उसने अपना यह नीच काम पहले ही छोड़ दिया होता। इस वजह से तो पिता की मौत भी समय से पहले ही हो गयी और साथ में इसने मुझे और मेरे परिवार को भी बर्बाद कर दिया।

उसकी माँ बोली — "अब जब साँप निकल गया तो लकीर पीटने से क्या होता है। उठो और कुछ काम करो। मेहनत और लगन से काम करो अपने खर्चे कम करो और अपनी यह बुरी आदत छोड़ो तो तुम अपनी पहले वाली हैसियत वापस पा सकते हो।"

वह बोला — "माँ तुम ठीक कहती हो। मैं आज से ही जुआ खेलना छोड़ देता हूँ। मैं अब मेहनत और लगन से काम करूँगा और पैसा बचाऊँगा। जितना मैं कमाऊँगा वह सारा मैं तुम्हें दे दूँगा। पर इस बीच तुम मेरी पत्नी से कहो कि वह अपने पिता के घर चली जाये जहाँ कम से कम उसे तो अच्छा खाना अच्छा कपड़ा और अच्छी देखभाल मिलेगी।"

फिर वह अपनी पत्नी के पास उसको विदा कहने गया। जब पत्नी ने देखा कि उसको इस गरीबी की वजह से ही उसके पिता के घर भेजा जा रहा है तो उसने अपने ससुर का दिया हुआ सोने का ब्रेसलैट उसको दिया और उससे वह सब कहा जो उसके ससुर ने उससे अपने पति से कहने के लिये कहा था।

पर वह ब्रेसलैट उसने उससे नहीं लिया क्योंकि उसको लगा कि वह उसको ले कर उससे जुआ खेलने के लिये चला जायेगा। उसने

खुद ही अपनी कमाई करने का विचार किया। उसने अपनी पत्नी को उसके पिता के घर भेज दिया और उसकी माँ उसका घर सँभालने लगी। वह भी कात कर कुछ पैसा कमा लेती थी।

यह नौजवान इधर उधर घूमते घूमते एक शहर में पहुँचा और वहाँ जा कर एक अमीर व्यापारी के साथ काम करने लगा। पहले तो उसको यह काम करना बहुत मुश्किल लगा क्योंकि वह तो बड़ी अमीरी में पला बढ़ा था और उसको किसी की सेवा करने की आदत नहीं थी।

बाद में जब उसने अपने मालिक का विश्वास जीत लिया तो उसको उसके मालिक ने उसको और जिम्मेदारी वाले काम सौंप दिये तब वह कुछ खुश हुआ।

वह अपनी कमाई का एक बड़ा हिस्सा बचा कर रख लेता था ताकि वह उसे अपनी माँ को भेज सके जिससे वह उसको ठीक से इस्तेमाल कर सके।

एक दिन ऐसा हुआ कि उसके मालिक ने उससे कहा कि उसके बेटे की शादी एक दूसरे अमीर व्यापारी की दूसरी बेटी से होने वाली है जो उसी शहर में रहता था जिससे वह आया था। यह अमीर व्यापारी और कोई नहीं बल्कि उसका ससुर खुद था और वह लड़की उसकी साली थी।

उसने इस मामले में अपने मालिक की खुशी से ज़्यादा कोई रुचि नहीं दिखायी और मालिक के बेटे की खुशहाली और खुशी की प्रार्थना की। वह उस दिन का इन्तजार करता रहा।

ठीक समय पर उसका मालिक मालिक का बेटा कुछ और लोगों के साथ लड़की के घर शादी के लिये जाने के लिये तैयार हुए और वहॉ सुरक्षित पहुॅच गये। नौकर बेटा भी उनके साथ गया था। उनको वह घर कुछ अजीब सा लगा।

शादी की तैयारियॉ बहुत ही बड़े पैमाने पर की गयी थीं। बहुत सारे नौकर इधर से उधर घूम रहे थे। बहुत सारे लोग तमाशा देखने और इनाम पाने की उम्मीद में थे क्योंकि वह घर बहुत अमीर था और देश में उसका बड़ा नाम था।

शाम को खाना लगा तो बारात खाने के लिये बैठी। नौकर बेटा भी उन सबके साथ खाने के लिये बैठा। वह अपने काम वाले कपड़ों में ही था। इसके अलावा वह सबसे आखीर में और जहॉ नीचे लोग बैठे थे वहॉ बैठा था।

इस तरह करने में उसको अपना बड़प्पन लगा इसी लिये उसने ऐसा किया था। वह किसी भी तरह से उस अमीर परिवार से अपना कोई रिश्ता दिखाना नहीं चाहता था पर वह अपनी पत्नी को दोबारा देखना चाहता था।

आखिर उसने अपनी पत्नी को देख ही लिया। वह शाम के खाने की देखभाल कर रही थी। उसके हुक्म से नौकरों ने खाना

बहुत सारे मेहमानों को खिलाया। जब उसके अलावा सारे मेहमानों को खाना दे दिया गया तो नौकर बेटे ने देखा कि उसके लिये सारा मॉस खत्म हो गया था और केवल सब्जियॉ और चावल ही बचा था।

उसने कहा तो कुछ नहीं पर उसको दुख बहुत हुआ। हालॉकि वह खाना किसी शाही खाने से कम नहीं था और उसकी सुन्दर पत्नी उसकी देखभाल कर रही थी पर उसके लिये कुछ नहीं था जबकि और दूसरे नीच लोगों के लिये और उससे नीचे तबके के लोगों के लिये खूब पेट भर कर खाना था।

वह इस तरह भुला दिया गया था जैसे वह उस समय धरती पर था ही नहीं।उसने अपने पीतल के बर्तन में सब्जी और चावल लिये और वह दावत वाला कमरा छोड़ कर चला गया। वह सीढ़ी से नीचे उतर कर बाहर ऑगन में गया और वहॉ की एक खिड़की की दीवार पर अपना खाना रख कर लेट कर रोने लगा।

एक डेढ़ घंटे बाद सब मेहमान वहॉ से जाने लगे पर वह गरीब बेटा व्यापारी तभी भी वहीं लेटा रो रहा था। जब दो घंटे रात गुजर गयी तो उसकी पत्नी किसी काम से ऑगन में आयी तो यह देख कर कि सब भिखारियों को खाना दे दिया गया था उसने एक आदमी को बुलाया और उसको दरवाजे पर इन्तजार करने के लिये कहा क्योंकि उस आदमी के पास करने के लिये और कोई काम नहीं था।

वह फिर घर में गयी और एक लैम्प और बहुत सारी मिठाई से भरी एक थाली ले कर बाहर आयी वह थाली उसने उस आदमी को पकड़ायी और उसको अपने पीछे पीछे आने के लिये कहा। उस आदमी ने वह थाली अपने कन्धे पर रखी और उसके पीछे पीछे चल दिया।

नौकर बेटा भी उनके पीछे पीछे चुपचाप छिप कर चल दिया। रास्ते में उस आदमी को ठोकर लग गयी और वह नीचे गिर पड़ा। उसकी थाली की सारी मिठाई इधर उधर बिखर गयी। उसकी पत्नी ने उसको लापरवाही से चलने के लिये बहुत डॉटा और उससे उसके साथ दोबारा घर जा कर एक थाली भर कर और मिठाई लाने के लिये कहा।

वे दोनों घर की तरफ चल दिये और वह नौकर बेटा उनका वहॉ धीरज रख कर इन्तजार करता रहा। इस बीच वह अपनी पत्नी के जो उसको बहुत प्यारी थी इस अजीब व्यवहार पर आश्चर्य करता रहा।

वह बिल्कुल भी आराम नहीं कर रही थी और बस काम करने में जुटी हुई थी। उसने अपनी इज़्ज़त को बनाये रखा हुआ था। अपने पति के ऊपर जो उसके पिता को गुस्सा आ रहा होगा उसको भी उसने सहा होगा। किसी बात का भी बिल्कुल ख्याल न करते हुए वह दोबारा घर वापस मिठाई लाने के लिये गयी ताकि वह उस आदमी को मिठाई दे सके जिसके लिये वह उसे ले कर जा रही थी।

वे लोग बहुत जल्दी ही मिठाई की दूसरी थाली ले कर वहाँ आ पहुँचे उसकी पत्नी लैम्प लिये आगे आगे और नौकर मिठाई की थाली लिये हुए पीछे पीछे। वे उस नौकर बेटे के पास से गुजरे और पास में ही रह रहे एक दूसरे बड़े व्यापारी के मकान में गये।

दरवाजे पर पहुँच कर उसकी पत्नी ने मिठाई की थाली नौकर से ले ली और उससे वापस जाने के लिये कहा और खुद उसने उसके घर का दरवाजा खटखटाया।

अब हुआ यह कि यह व्यापारी किसी बात पर बहुत गुस्सा था और उस समय किसी से भी बात नहीं करना चाहता था सो जब उसने दरवाजे पर खटखटाने की आवाज सुनी तो वह तुरन्त बाहर आया और एक डंडी से उसकी पत्नी को मारा। इसके अलावा उसको इस खराब समय पर आने और उसे तंग करने के लिये उसे गालियाँ भी दीं।

उस डंडी के मारे जाने उसकी पत्नी का वह ब्रेसलैट टूट गया जो उसको उसके ससुर ने अपने मरने से पहले उसे दिया था।

वह बोली — "श्रीमान आप नाराज न हों। यह मेरी गलती नहीं है कि मैं इतनी देर से रात को आयी। आज मेरी बहिन की शादी थी सो जब हम आ रहे थे तो वह आदमी जो मिठाई ले कर आ रहा था वह रास्ते में ठोकर खा कर गिर पड़ा और उसकी सारी मिठाई नीचे गिर पड़ी। इसलिये हमको वापस जा कर दूसरी मिठाई लानी पड़ी। बस उसी में देर हो गयी।"

व्यापारी यह सुन कर चुप खड़ा रह गया और उसकी पत्नी भी। उसकी पत्नी अभी भी दरवाजे में ही खड़ी थी उसने अपने सोने के ब्रेसलैट के टुकड़े उठाये और अन्दर चली गयी। वह नौकर बेटा भी अपनी पत्नी के पीछे पीछे घर के अन्दर चला गया और जा कर एक तरफ बैठ गया।

उसने देखा कि वह व्यापारी और उसकी पत्नी दोनों एक साथ मिठाई खा रहे थे। और जब उन्होंने पेट भर कर मिठाई खा ली तो उसने सुना कि वह व्यापारी उसकी पत्नी से उसका सोने का टूटा हुआ ब्रेसलैट दिखाने के लिये कह रहा था कि शायद वह उसको ठीक करा सके।

उसकी पत्नी ने वे टूटे हुए ब्रेसलैट के टुकड़े उसके हाथ में दे दिये। जब वह व्यापारी उनको देख रहा था तो उसने उसमें रखी हुई एक लम्बी लिस्ट देखी। उसने वह लिस्ट निकाल ली और उसको पढ़ा तो वह तो बड़े आश्चर्य में पड़ गया।

जब उसकी पत्नी ने उसके चेहरे पर आश्चर्य के भाव देखे तो उसने व्यापारी से पूछा कि क्या बात है। इसमें कुछ खास लिखा है क्या?”

व्यापारी बोला — “तुम्हारा पति बहुत ही बदकिस्मत आदमी था। जुआ जुआ हर समय जुआ। वह कितना बेवकूफ था। उस व्यापारी का यह बड़ा अच्छा विचार था।”

पत्नी ने पूछा — “तुम्हें कैसे पता? और कौन सा विचार अच्छा था?”

व्यापारी बोला — “मुझे इस कागज से पता चला। देखो इस कागज में सब लिखा है। ऐसा लगता है कि तुम्हारे ससुर एक बहुत ही अमीर आदमी थे जैसा कि हम लोग भी सोचते थे पर यह हमको बाद में पता चला कि वह उतने अमीर नहीं थे।

पर वह अपना सारा पैसा अपने बेटे यानी तुम्हारे पति को बताना नहीं चाहते थे ताकि कहीं ऐसा न हो कि वह सारा पैसा जुए में लगा दे और उसे बर्बाद कर दे। इसलिये उन्होंने ऐसा किया। उन्होंने दिखाया कि वह बहुत गरीब हो गये हैं और केवल थोड़ा सा पैसा छोड़ कर उन्होंने अपना सारा पैसा जमीन में गाड़ दिया।

तुम उनका यह पैसा अपने पति के घर में नीचे के तल्ले में अलग अलग जगहों पर गड़ा हुआ देख सकती हो। देखो यह उन जगहों की लिस्ट है जहॉ जहॉ उन्होंने अपना पैसा गाड़ा है और किस किस जगह में क्या क्या है।

तुम्हारे ससुर एक अक्लमन्द आदमी थे। उन्होंने सोचा कि मेरा बेटा इस पैसे को जुआ खेल कर उड़ा देगा जब तक कि वह बिल्कुल गरीब न हो जाये। गरीब होने के बाद ही शायद वह कुछ सीख पाये।

यह सोने का ब्रेसलैट और दूसरी कीमती चीज़ों की तरह ही पैसे में बदला जा सकता है सो जब वह इसको बेचेगा तब इस गड़े हुए

पैसे को भी पा लेगा। यह सुन कर कि वह फिर से अमीर हो गया है आगे के लिये शायद वह फिर सावधान हो जाये।

हो सकता है तब वह यह भी समझ सके कि मैंने कितनी मेहनत कर के इतना पैसा जमा किया है और इसकी देखभाल ऐसे करे जैसे यह पैसा उसने खुद ने ही कमा कर जमा किया हो।"

उसकी पत्नी बोली — "ओह मुझे अब पता चला कि मेरे ससुर जी ने यह ब्रेसलैट मुझे क्यों दिया और इसे मुझे ही रखने के लिये क्यों कहा। उन्होंने मुझसे कहा था कि मैं यह ब्रेसलैट उनको तभी दूँ जब वह अपने ज़िन्दगी से बिल्कुल ही नाउम्मीद हो जायें।"

उसकी पत्नी को गले लगाते हुए उस व्यापारी ने उससे पूछा कि क्या वह अपने पति को उससे ज़्यादा प्यार करती है तो उसकी पत्नी ने कहा — "नहीं मैं तुमको ज़्यादा प्यार करती हूँ क्योंकि मेरे पति ने मुझको बहुत तंग किया हुआ है। और अब पता नहीं कहाँ चले गये हैं। भगवान ही जानता है कि मैं उनको कभी देख भी पाऊँगी या नहीं।"

व्यापारी बोला — "तब ठीक है। अब मैं तुम्हारे ससुर के घर के बारे में सब कुछ जानता हूँ। अब मैं वहाँ जाऊँगा और वहाँ से सारा खजाना निकाल लूँगा। उसके बाद हम उसको यहाँ सुरक्षित रूप से ताले में रख देंगे। और बस इसके बाद हम दोनों अपनी सारी ज़िन्दगी खुशी से बितायेंगे।"

उसकी पत्नी राजी हो गयी और उससे कहा कि तुम यह सब काम जल्दी ही कर लो क्योंकि मैं अब तुम्हारे साथ हमेशा के लिये रहना चाहती हूँ।

अब उस नीच पति की हालत तो देखो जो आधे खुले दरवाजे के बाहर बैठा ये सब बातें सुन रहा था। उसकी हालत तो बस सोची ही जा सकती है बतायी नहीं जा सकती।

वह वहाँ से बहुत ही नाउम्मीद हो कर अपने घर की तरफ चल दिया। वह अपनी पत्नी की बेवफाई पर बहुत ही दुखी था पर वह इस बात पर खुश भी था कि वह एक बार फिर से अमीर हो जायेगा।

इस तरह खुशी और दुख दोनों तरह की भावनायें उसके मन में उछल कूद कर रही थीं। उसको यही पता नहीं था कि वह रोये या हँसे।

एक घंटे बाद वह अपने घर पहुँच गया और अपनी प्यारी माँ से मिला। उसने उसका ऐसे स्वागत किया जैसे वह मर कर ज़िन्दा हो कर वापस आ गया हो। उससे वह सब बातें कर लेने के बाद उसको यह भी बताया कि जबसे वह घर छोड़ कर गया था उनके साथ क्या क्या हुआ। फिर बेटे ने उसको बताया कि उसके पिता इतने गरीब क्यों मरे थे।

उसने माँ से कहा — “माँ हमें इस पैसे को निकालना है। और क्योंकि कि यह कहाँ है इसका पता दूसरों को है और वे दूसरे हमारे

दोस्त नहीं हैं बल्कि पक्के दुश्मन हैं यह बहुत जरूरी है कि हम फावड़ा उठायें और अपना काम इसी समय से शुरू कर दें।"

उन्होंने ऐसा ही किया। आधी रात से पहले पहले ही उन्होंने सारा खजाना निकाल लिया – सोना चाँदी कीमती पत्थर आदि। सबका एक बड़ा ढेर लग गया जिसकी कीमत आँकी नहीं जा सकती थी। अगली सुबह होने से पहले ही उन्होंने उस खजाने को किसी दूसरी जगह गाड़ दिया और पुरानी जगहों पर कूड़ा करकट और पत्थर भर दिये।

अगली सुबह व्यापारी का बेटा अपने अच्छे कपड़ों में कहीं जा रहा था और उसकी माँ दरवाजे के पास बैठी कताई कर रही थी। उसके बेटे ने अपने मालिक की नौकरी उसी समय ही छोड़ दी थी और अपनी माँ के पास ही रहना शुरू कर दिया था। उन लोगों ने फिर से अपनी सामान्य ज़िन्दगी जीनी शुरू कर दी थी

अगले हफ्ते में व्यापारी की पत्नी के प्रेमी ने जिसने उस व्यापारी का खजाना खुद ढूँढा था अपना वेश बदला और यह बताया कि वह कहीं विदेश से आया है और बहुत सारे हीरे और कीमती पत्थर उस देश के राजा के लिये भेंट में देने के लिये लाया है।

यह सुन कर राजा ने उसे अपने पास बुलाया और जब उसने उसकी लायी हुई भेंटें देखीं तो वह बहुत खुश हुआ और उससे कहा कि वह हर तरीके से उसकी सहायता करेगा। उस विदेशी व्यापारी ने उसे धन्यवाद दिया और कहा कि उसको खुद के रहने के लिये

और अपना सामान रखने के लिये उसके शहर में थोड़ी सी जगह चाहिये।

राजा ने कहा कि उसको उसी के घर में रहना चाहिये पर व्यापारी उसके घर में रहना नहीं चाहता था। वह शहर में रहना चाहता था ऐसा जब उसने राजा से कहा तो राजा ने कहा "ठीक है मैं किसी आदमी को तुम्हारे लिये घर का इन्तजाम करने के लिये कह देता हूँ।"

सो राजा ने अपने वजीर को बुला कर एक ऐसी जगह का इन्तजाम करने के लिये कह दिया जो उसे पसन्द हो। वे लोग सारा दिन घूमते रहे और कई तरह के मकान देखे पर व्यापारी को कोई मकान पसन्द ही नहीं आया। शाम को जब वे महल वापस जाने लगे तब वे इस मरे हुए व्यापारी के घर के पास से गुजरे।

विदेशी व्यापारी को यह घर पसन्द आया क्योंकि इसकी बिल्डिंग भी अच्छी थी और यह शहर में बीच बाजार में भी था।

उसने वजीर से पूछा कि यह मकान किसका है तो वजीर ने कहा "शायद यह मकान किसी व्यापारी का है। वह व्यापारी तो अब मर गया है उसकी विधवा पत्नी यहाँ रहती है। मुझे पूरी उम्मीद है कि वह यह मकान या तो तुम्हें बेच देगी और या फिर किराये पर दे देगी।"

वजीर ने उस मकान का दरवाजा खटखटाया और पूछा यहाँ कोई है।

व्यापारी के नौजवान बेटे ने दरवाजा खोला और उनको अन्दर आने के लिये कहा। वजीर बोला — "मेरे इन दोस्त को मकान किराये पर चाहिये। तुमको इसका कितना पैसा चाहिये।"

व्यापारी के बेटे ने कहा — "दो हजार रुपये महीना।"

व्यापारी बोला "मंजूर है।"

पर वजीर को ऐसी उम्मीद नहीं थी कि इतना बड़ा सौदा इतनी आसानी से हो जायेगा फिर भी वह बोला — "दो हजार रुपये? अरे यह तो बहुत हैं। क्या तुम ठीक बोल रहे हो? यह तो उससे भी ज़्यादा है जितना में ऐसी जगह के लिये एक साल के लिये दूँगा।"

फिर उसने विदेशी व्यापारी से कहा — "तुम मकान ले लो और इसको एक कौड़ी भी नहीं देना। मैं देखता हूँ कि यह तुम्हें बिल्कुल तंग नहीं करेगा।"

हालाँकि इस तरह का सौदा चाहे किसी और समय पर ठीक रहता पर इस समय पर विदेशी व्यापारी के लिये यह ठीक नहीं था। वह सोच रहा था कि यह दो हजार रुपये क्या चीज़ है मुझे तो इस मकान के कमरों में दबी बहुत सारी दौलत मिलने वाली है। और यह सौदा हो गया।

विदेशी व्यापारी ने व्यापारी को उसका माँगा हुआ पैसा दे दिया और व्यापारी की विधवा पत्नी और उसका बेटा उनको वह मकान दे कर कहीं और रहने चले गये।

विदेशी व्यापारी ने पहला मौका मिलते ही उन जगहों को खोदना शुरू किया जहाँ उस मकान के व्यापारी ने उसे गाड़ा था जिसकी लिस्ट उसको उस व्यापारी के बेटे की पत्नी के ब्रेसलैट से मिली थी पर वहाँ तो उसे कूड़ा करकट और पत्थरों के सिवा कुछ भी नहीं मिला।

वह बोला — "यह कैसी बदकिस्मती है कि यहाँ मुझे कुछ नहीं मिला। या तो उस मरे हुए व्यापारी ने वह लिस्ट सबको धोखा देने के लिये बनायी और उस ब्रेसलैट में रख दी और या फिर किसी और को इसकी भनक पड़ गयी और उसने उसे निकाल लिया।

सत्यानाश हो इस जगह का। सत्यानाश हो उन लोगों का जो उस खजाने से सम्बन्धित हैं। सत्यानाश हो उनके परिवारों का भी। उनका उनके काम पर भी सत्यानाश हो। ओह मैं तो बर्बाद हो गया।"

इस तरह सबको गालियाँ देते हुए उसने अपना फावड़ा और जूते उठाये और पागलों की तरह अपने घर भाग गया जो शहर से बाहर वहाँ से थोड़ी ही दूर पर था।

जैसे ही व्यापारी की विधवा और बेटे को पता चला कि वह विदेशी व्यापारी उनका मकान छोड़ कर भाग गया है तो वे अपने घर लौट आये और अपने घर में ही रहने लगे।

धीरे धीरे व्यापारी के बेटे ने अपनी असली हालत लोगों को दिखानी शुरू की ताकि किसी को कोई शक पैदा न हो कि इनके

पास इतना सारा पैसा एक साथ कहाँ से आ गया। कुछ ही समय में वह अपने शहर का एक बहुत बड़ा व्यापारी बन गया। उसकी भी उतनी ही इज़्ज़त हो गयी जितनी उसके पिता की हुआ करती थी।

एक दिन उसकी माँ ने कहा — "बेटे भगवान का लाख लाख धन्यवाद है कि तुम अपने देश के बहुत बड़े व्यापारी बन गये हो। अब तुम्हारे लिये यह ठीक रहेगा कि तुम अपनी पत्नी को घर बुला लो।"

बेटा बोला — "माँ तुम इस बारे में मुझसे बात ना ही करो तो अच्छा है।"

माँ ने उससे तो कुछ नहीं कहा पर उसने अपने मन में इरादा बना लिया था कि वह अब बहू को घर ले कर ही आयेगी सो वह बहू के घर गयी और उसके माता पिता से यह वायदा लिया कि वे अपनी बेटी को ससुराल भेज देंगे।

एक दो दिन बाद ही उन्होंने अपने जमाई जी को अपने घर बुलाया और उसको अपने घर आने के लिये इतना कहा कि उसको वहाँ जाना ही पड़ा।

उसका घर में बहुत शानदार स्वागत हुआ। उन्होंने घर बहुत अच्छे से सजाया हुआ था। बहुत अच्छा खाना बनवाया गया था। बहू के माता पिता उसका बहुत ख्याल रख रहे थे।

उसकी पत्नी भी बहुत खुश खुश घूम रही थी। क्योंकि वह बहुत दिनों तक उससे दूर था वह उसकी तरफ न ज़्यादा देख रही

थी न उसके लिये कुछ कर रही थी। और क्योंकि उसने यह कहा था कि वह उसको कभी देख पायेगी या नहीं इसलिये उसको रोना भी आ रहा था।

रात को जब वह उसी कमरे में सो रही थी जिसमें उसका पति सो रहा था और सब शान्त था तो अचानक पति उठा और ज़ोर से चीख पड़ा — "ओह क्या यह सच है? क्या यह सच हो सकता है?" और बिस्तर पर फिर से गिर पड़ा।

जब उसको कुछ होश सा आया तो बोला — "उफ़ मैंने कितना भयानक सपना देखा था। क्या सपना था।"

उसकी पत्नी ने उससे पूछा कि उसने क्या सपना देखा था। पति बोला — "मैंने देखा कि इस घर में एक बड़ी सी शादी हो रही है। तुम्हारी छोटी बहिन की शादी एक बड़े अमीर व्यापारी के बेटे से हो रही है जो किसी दूर देश से आया है।

मैंने देखा कि मैं उस व्यापारी के नौकरों का सरदार हूँ और उस व्यापारी और दुलहे के साथ यहाँ आया हूँ। दूसरे मेहमानों के साथ मैं भी खाना खाने बैठा हूँ।

तुम सबको खाना देने का काम सँभाल रही हो कि सबको माँस और मसाले आदि ठीक से मिल जायें। पर तुमने कुछ ऐसा किया कि ये चीज़ें बाकी सबको तो मिल गयीं बस मुझे ही नहीं मिल पायीं। क्योंकि मैं तुम्हारी नजर में सबसे नीचा था।

मुझे बहुत शर्म आयी पर मैंने अपनी भावनाओं पर काबू किया और चावल और सब्जी की प्लेट ले कर बाहर ऑगन में आ बैठा जहॉ दूसरे भिखारी लोग खाना खा रहे थे।

कुछ समय बाद तुम आयीं और तुमने सबको खाना दिया। फिर तुमने उनमें से एक को रोक कर कहा कि वह मिठाई की एक थाली लाने में तुम्हारी सहायता करे। वह मिठाई की थाली तुम किसी के घर ले जाना चाहती थीं।

फिर मैंने तुम्हें एक लैम्प और मिठाई की एक थाली लिये घर से बाहर निकलते देखा। तुमने मिठाई की थाली उस आदमी को दी और उस घर की तरफ चल दीं जहॉ तुम्हें जाना था।

मैं भी तुम्हारे पीछे पीछे चल दिया। बीच रास्ते में आदमी को ठोकर लगी और वह गिर गया। वह थाली भी गिर गयी और उसमें रखी मिठाई भी बिखर गयी।

और तब मैंने देखा कि तुम दोबारा घर गयीं और दूसरी मिठाई की थाली ले कर आयीं और दोबारा उस घर की तरफ बढ़ीं। मैं भी तुम दोनों के पीछे था। मैं तुम लोगों को देखता रहा जब तक तुम दोनों उस व्यापारी के घर तक पहुॅचे।

फिर तुमने उस आदमी से मिठाई की थाली ले ली और उसको वापस भेज दिया और उस व्यापारी के घर का दरवाजा खटखटाया। ज़ाहिर है कि वह व्यापारी बहुत गुस्से में था क्योंकि तुम्हें उसके घर पहुॅचने में देर हो गयी थी क्योंकि मैंने देखा कि

दरवाजा खोल कर उसने तुमको मारा। और उस मारने में तुम्हारा ब्रेसलैट टूट कर नीचे गिर गया।

यह सब मैंने सपने में इतना साफ देखा जैसे कि मैं तुम्हें अब देख रहा हूॅ इसी लिये मैं चौंक गया। जब वह अपना सपना सुनाते हुए यहॉ तक पहुॅचा तब तक उसकी पत्नी को पसीना आ गया।

इस विचार से ही कि वह पकड़ी गयी है और उसका पति उसे कोई सपना नहीं सुना रहा बल्कि हकीकत बयान कर रहा है उसकी हालत खराब हो गयी और उस धक्के की वजह से वह वहीं उसी समय मर गयी।

जब पति ने देखा कि उसकी पत्नी तो हिल ही नहीं रही है और बिल्कुल पत्थर की हो गयी है तो वह उसको अपनी ऑखें फाड़ फाड़ कर घूरता रहा। वह बहुत डर गया था उसने सोचा कि उसने अपनी पत्नी को मार दिया है।

पर उसको इस बात का कोई दुख नहीं था क्योंकि दुख तो उसकी बेवफाई याद करके उसके साथ ही खत्म हो गया था। अब तो वह केवल डरा हुआ था कि जब लोगों को इन हालातों का पता चलेगा तो उसकी पत्नी के माता पिता उसे क्या कहेंगे और इसके अलावा शहर वाले भी उसके ऊपर क्या क्या फिकरे कसेंगे।

उसने अपने मन में सोचा कि वह इस लाश को कहीं ठिकाने लगा दे सो उसने उसको एक बड़ी चादर में लपेटा उसको अपने कन्धे पर डाला और उसी व्यापारी के घर की तरफ ले चला जिसने

उसे बहकाया था। उसके घर के दरवाजे पर रख कर उसने उसके घर का दरवाजा खटखटाया।

व्यापारी ने सोचा कि शायद वही स्त्री होगी जो इस समय उसके पास आती थी सो उसने गुस्से में भर कर दरवाजा खोला और उसको अपने पति के साथ इतनी देर तक रहने के लिये गालियॉ देनी शुरू कीं। यह सब उसने बिना देखे ही किया कि दरवाजे पर वह स्त्री थी भी या नहीं।

पर जब न तो किसी ने उनका कोई जवाब दिया और ना ही कोई अन्दर आया तो वह दोबारा उठ कर देखने गया। जब उसने दरवाजे पर एक लाश देखी तो वह भौंचक्का रह गया। उसने सोचा कि यह वह स्त्री ही मर गयी होगी क्योंकि वही दरवाजा खटखटा रही थी।

उसने उसकी लाश को पट्टु[21] के एक थान में लपेटा और उसको अपनी दूकान की एक खुली हुई आलमारी में रख दिया।

यह सब उस नौजवान व्यापारी पति ने खिड़की के बाहर से देखा और वहॉ से चला आया। सुबह को वह देर से उठा। और वह तब भी नहीं उठता अगर उसका ससुर उसको नाश्ते के लिये न आने के लिये नहीं पूछता।

पति ने कहा कि रात को वह बहुत थक गया था। रात के पहले प्रहर में तो वह अपनी पत्नी के अजीब से व्यवहार की वजह

[21] Pattu is a coarse woollen cloth manufactured in Kashmir

से बिल्कुल सो ही नहीं सका। वह रात में उठ कर कहीं बाहर चली गयी थी। न जाने कहाँ और फिर लौटी ही नहीं।"

यह सुन कर उसकी सास जिसको अपनी बेटी और पड़ोसी व्यापारी के बारे में सब कुछ पता था बल्कि यह सोचते हुए कि उसकी बेटी का पति मर गया है उसने उसको वहाँ जाने के लिये बढ़ावा भी दिया था उसके इस अजीब व्यवहार के लिये उसके पति से माफी माँगी।

वह बोली — "शायद मेरी बेटी की तबियत ठीक नहीं रही होगी सो वह किसी दूसरे कमरे में सोने चली गयी होगी। मैं जा कर देखती हूँ कि क्या मामला है।"

जब नौजवान व्यापारी की सास इस बात की जानकारी लेने के लिये गयी तो उसने अपने ससुर से उसको उनकी दूकान ले जाने के लिये कहा क्योंकि वह उनकी दूकान से कई चीज़ें खरीदना चाहता था जो उसकी अपनी दूकान में नहीं थी।

उसका ससुर राजी हो गया और वे उसकी दूकान की तरफ तुरन्त ही चल दिये। वहाँ जा कर वह जो कुछ खरीदना चाहता था वह उसको दिखायी नहीं दिया तो उसके ससुर ने उसको किसी दूसरे व्यापारी की दूकान पर चलने के लिये कहा।

यह व्यापारी उसके ससुर का बड़ा अच्छा दोस्त था और उसको यह विश्वास था कि उसकी दूकान पर वह सब सामान मिल जायेगा जो उसके जमाई बाबू खरीदना चाहते थे।

उसने कहा — "उसके लिये थोड़ी दूर तो जाना पड़ेगा पर सड़क अच्छी है। साथ ही वह व्यापारी भी चतुर और अच्छा है। तुमको उससे जान पहचान बना लेनी चाहिये।"

सो वे दोनों उस व्यापारी के घर की तरफ चल दिये। यह व्यापारी इत्तफाक से वही व्यापारी था जिसने उसकी पत्नी को बहकाया था। भगवान की कृपा से एक अजीब सा इत्तफाक अब उसकी बर्बादी ले कर आया था।

जब वे वहाँ पहुँचे तो उसने उनका दिल खोल कर स्वागत किया और अपना बहुत सारा और बहुत कीमती सामान उनको दिखाया। पर उनमें कुछ थान पट्टू पशमीने[22] रेशम और दूसरे किस्म के कपड़ों के भी नौजवान व्यापारी को नजर आये थे जिन्हें उसने देखना चाहा।

पर व्यापारी बोला कि वह तो बहुत मामूली माल है और करीब करीब वैसा ही है जैसा कि तुम देख चुके हो सो उसको निकालने की जरूरत नहीं है। फिर भी नौजवान व्यापारी ने उसके देखने की जिद की और कमरे के उस तरफ चला गया जहाँ वह सामान रखा था।

व्यापारी ने देखा कि अब वह उसको बिना दिखाये बच नहीं सकता तो यह उम्मीद करते हुए कि पट्टू का वह थान जिसमें उस

[22] Pashmina is a kind of woollen cloth manufactured in Kashmir. The finest goat's wool is brought from Toorfaan, a Yarkand Territory. This is called Toorphani Phamb others are called Kashmiri Phamb.

स्त्री की लाश लिपटी हुई थी उस नौजवान व्यापारी की निगाह से बच जाये वह और दूसरे कपड़े निकाल लाया।

अफसोस जब वह यह कर रहा था तो पट्टु का वह थान भारी होने की वजह से अपनी जगह से गिर पड़ा और उसमें से लाश बाहर निकल आयी।

यह देख कर उन तीनों की क्या हालत हुई होगी इसका तो बस अन्दाजा ही लगाया जा सकता है। ससुर जी तो अपनी बेटी की लाश देख कर अपने होश ही खो बैठे। उनको तो दौरा पड़ गया था। इस खोज से उनका दोस्त व्यापारी डर के मारे इतना कॉप उठा कि वह गिरते गिरते बचा उसको खड़े होने के लिये दीवार का सहारा लेना पड़ा

और नौजवान व्यापारी तो दुख के मारे चिल्लाता हुआ कि मेरी पत्नी मर गयी मेरी पत्नी मर गयी उस कमरे में इधर उधर दौड़ने लगा। वह इस कत्ल की और यह कत्ल करने वाले का पता लगाने के लिये कोतवाल को बुलाना चाहता था।

दोस्त व्यापारी बोला — "चुप रहो चुप रहो। क्या तुम इस तरह से चिल्ला चिल्ला कर इस स्त्री के कत्ल का इलजाम मेरे सिर लगाना चाहते हो?"

नौजवान व्यापारी दोस्त व्यापारी का हाथ जो उसके कन्धे पर रखा था झिड़कते हुए बोला — "तुम मुझे अकेला छोड़ दो। मैं पुलिस को सारी बातें समझा दूॅगा।"

दोस्त व्यापारी बोला — “ज़रा सोचो। एक और मौत से तुमको क्या फायदा होगा। भगवान जानता है कि मैं इसका कातिल नहीं हूँ।”

नौजवान व्यापारी फिर चिल्लाया — “मुझे अकेला छोड़ दो। मुझे न्याय चाहिये। तुमको अपने इस बेरहम काम का नतीजा भुगतना ही पड़ेगा।”

दोस्त व्यापारी बोला — “दोस्त मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि अपने आपको ज़रा रोको। जो तुम्हारी इच्छा हो वह तुम मुझसे माँग लो मैं तुम्हें वही दे दूँगा पर मेहरबानी कर के चुप हो जाओ।

सच तो यह है कि यह लाश मैंने अपने घर के बाहर वाले दरवाजे के बाहर पायी थी। सो उसको मैंने अपने पट्टु के थान में लपेट दिया था। अगर इस बात का एक शब्द भी बाहर गया तो यह मेरे खिलाफ गवाही देने के लिये काफी है।

तुम मेरा सारा पैसा ले लो सारा सामान ले लो मेरा सारा कुछ ले लो पर मेरे परिवार और मेरे नाम को बचा लो।”

इस समय तक पत्नी के पिता को होश आ चुका था। जब उसको उसकी बेटी की मौत के बारे में बताया गया तो उसने भी समझ लिया कि वह अपनी ही मौत मरी है। भगवान ने ही उसको उठा लिया है और उसका दोस्त व्यापारी का इसमें कोई दोष नहीं है। और इसी लिये उसके दोस्त व्यापारी से उसका कोई पैसा या सामान लेना ठीक नहीं है।

सो ससुर और दामाद घर वापस लौट आये। लौटते समय दामाद ने उससे अपने घर जाने के लिये कहा जिसे उसके ससुर ने मान लिया और वह अपने घर लौट गया।

उसको घर बिना पत्नी को साथ लिये इतनी जल्दी वापस आया देख कर उसकी माँ को बहुत आश्चर्य हुआ। पूछने पर बेटा बोला कि वह उसको बाद में लायेगा।

पर वह इस भेद को बहुत समय तक नहीं छिपा सका क्योंकि उसके दोस्तों और पड़ोसियों ने फिर उससे यह पूछना शुरू कर दिया था कि वह उसको बाद में क्यों लायेगा।

फिर उसे झूठ बोलना पड़ा कि उसकी अचानक मौत हो गयी। इस पर उसको दोबारा शादी करने के लिये कहा गया तो उसने यह कह कर मना कर दिया कि उसका सब स्त्रियों पर से विश्वास उठ गया है।

उन्होंने उसे समझाने की बहुत कोशिश की कि सारी स्त्रियाँ एक सी नहीं होतीं। जहाँ कुछ खराब होती हैं वहाँ कुछ अच्छी भी होती हैं। कुछ बुनी[23] पेड़ की तरह सुन्दर होती हैं जिनके साये में लेट कर आदमी तरोताजा हो जाता है। और दूसरी गली की कुतिया की तरह से नीच होती हैं जो हर आने जाने वाले को काटती हैं।

ऐसा जब उसके दोस्तों ने समझाया तो आखिर उसने कहा — "शायद मेरे लिये यह अच्छा होता कि मैं दोबारा शादी कर लेता पर

[23] Buni is a kind of tree which is very beautiful found in Kashmir valley.

इस शादी में मैं अपने कपड़े अपने आप बनवाऊँगा। जिस किसी स्त्री की शक्ल सूरत बोली ढंग चाल मुझे अच्छी लगेगी मैं उसी से शादी करूँगा और किसी से नहीं।"

कुछ दिन बाद से ही उसके लिये एक पत्नी की तलाश जारी हो गयी। वह उस देश में उस व्यापारी के घर गया जिसके यहाँ वह पहले नौकरी करता था और जिसके बेटे की शादी उसकी साली से हुई थी।

उसने देखा कि वह अभी भी सुन्दर दिखायी देता था सो उसने उसके घर जा कर उसके घर में उसके रसोइये की जगह काम करना शुरू कर दिया।

इस व्यापारी की अपनी एक बहुत ही अक्लमन्द और सुन्दर लड़की थी। उसकी अक्लमन्दी और सुन्दरता देश भर में मशहूर थी। इस बात को पक्का करने के लिये कि वह उतनी ही अच्छी थी जितनी कि उसको होना चाहिये था उसने उसके पिता के घर में फिर से नौकरी ली थी।

एक दिन उस व्यापारी ने एक मेला देखने जाने का विचार किया जो उसके घर से बहुत दूर लग रहा था। वह अपने परिवार को भी उस मेले में साथ ले कर जाना चाहता था पर उसको यह पता नहीं था कि वह उन सबको कैसे सँभालेगा।

उसने अपनी पत्नी से इस बारे में बात की तो उसने सलाह दी कि वे अपनी बेटी को घर पर छोड़ जाते हैं। वह यहाँ रह कर घर

और घर का सामान देखेगी भालेगी। इसके अलावा अब वह बड़ी भी हो गयी है तो उसको ज़्यादा बाहर निकलना भी नहीं चाहिये। वह यहाँ बूढ़ी दाई और रसोइये के साथ सुरक्षित रहेगी। दाई उसके कमरे में खाना ले जायेगी।

उन्होंने रसोइये को तुरन्त ही इस बात का हुक्म दिया कि वह घर की देखभाल करेगा और लड़की के खाने का ख्याल रखेगा। पर वह किसी भी हालत में लड़की के कमरे नहीं जायेगा नहीं तो उसको भारी जुर्माना देना पड़ेगा और उसको निकाला भी जा सकता है।

उसके बाद वे लोग लड़की को दाई और रसोइये को घर में छोड़ कर मेला देखने चले गये।

जिस दिन व्यापारी और उसका परिवार मेले के लिये गया उस देश के राजा के वज़ीर का बेटा इत्तफाक से वहाँ से गुजरा और उस सुन्दर लड़की को बाहर दरवाजे पर खड़ा देखा तो वह तो उसकी सुन्दरता देख कर बेहोश सा ही हो गया।

जब वह अपने होश में आया तो वह उसी दरवाजे से घर में घुसा जिस पर वह लड़की खड़ी हुई थी। रास्ते में उसको रसोइया मिल गया तो उसने उससे उस लड़की से मिलवाने के लिये कोशिश करने के लिये कहा। और कहा कि अगर उसने ऐसा कर दिया तो उसको कोई कीमती भेंट भी देगा।

रसोइये ने कहा — "जनाब आपकी कोशिश बेकार है। मेरे मालिक ने तो मुझे भी उसके कमरे में उसका खाना तक ले जाने के लिये मना कर रखा है।"

वज़ीर का बेटा बोला — "पर मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि एक बार तुम मुझे उससे मिलवा देने की कोशिश तो करो।"

रसोइया बोला — "जनाब यह नहीं हो सकता। केवल दाई ही उसके कमरे में जा सकती है। आप उससे केवल बात ही कर सकते हैं।"

वज़ीर के बेटे ने कहा — "ठीक है तो तुम उसको बुलाओ। अगर यह मुलाकात हो गयी तो तुम दोनों को भारी इनाम मिलेगा।"

कुछ ही पल में दाई वहाँ आ गयी। उसने बहुत सारे पैसे के लालच में वज़ीर के बेटे को लड़की के कमरे में भेज दिया। जैसे ही वह लड़की के कमरे में घुसा तो व्यापारी की बेटी ने पूछा — "कौन हो तुम और कब आये।" इससे पहले कि वह उसका स्वागत करती उसने उससे ये दो सवाल पूछे।

वज़ीर का बेटा बोला — "तुम्हारी सुन्दरता से खिंचा मैं तुमसे बात करने चला आया। मैं वज़ीर का बेटा हूँ।"

लड़की बोली — "जो कुछ भी हो पहले तुम यह जान लो कि इससे पहले कि तुम मुझसे एक शब्द भी आगे बोलो तुम मुझे एक लाख रुपया दो।"

वज़ीर के बेटे ने तुरन्त ही अपनी जेब में हाथ डाला और एक लाख रुपये का एक नोट निकाल कर उसके हाथ पर रख दिया।

व्यापारी की बेटी बोलाी — "तुम तो बड़े बहादुर निकले। क्या तुम्हें पता है कि तुम मुझसे ये बातें कितना बड़ा खतरा मोल ले रहे हो। अगर तुम्हारे पिता को यह पता चल जाये कि तुमने मुझसे बात की है तो वह बहुत नाराज होंगे। और अगर मेरे पिता को तुम्हारे यहाँ आने का पता चल जाये तो वह मुझे कभी माफ नहीं करेंगे।"

फिर उसने दाई की तरफ देखा जो वहीं दरवाजे के पास ही बैठी थी और उससे कुछ पीने के लिये लाने के लिये कहा। जब दाई उसे ले आयी तो उसने उसको दो गिलासों में पलटा एक अपने लिये एक वजीर के बेटे के लिये।

उसने छिपा कर वज़ीर के बेटे के गिलास में कोई दवा मिला दी। वजीर के बेटे को यह पता ही नहीं चला और एक ही घूँट में वह सारा गिलास पी गया। उसके बाद इन दोनों के बीच केवल कुछ ही बातचीत हुई क्योंकि वह एक बहुत ही ताकतवर दवा थी और उसने वज़ीर के बेटे पर बहुत जल्दी ही असर करना शुरू कर दिया था।

बहुत जल्दी ही वजीर का बेटा सो गया। जब व्यापारी की बेटी ने यह पक्का कर लिया कि वह सो गया तो उसने दाई से उसको अपने अस्तबल में ले जाने के लिये कहा। पर दाई उसको अकेली

अपने आप नहीं उठा सकी सो उसने रसोइये को सहायता के लिये बुलाया।

जब वजीर के बेटे को होश आया तो वह यह देख कर आश्चर्य में पड़ गया कि वह तो एक अस्तबल में पड़ा था और उसके चारों तरफ घोड़े ही घोड़े थे। उसने मन में सोचा कि उस लड़की ने उसको धोखा दिया और वहाँ से बाहर चला गया।

वह डरा नहीं और अगले दिन वह फिर उससे मिलने गया और दाई से उसको उससे फिर से मिलवाने के लिये कहा। इस बार भी उसने उसको बहुत सारा पैसा दिया। व्यापारी की बेटी ने उससे फिर कहलवा दिया कि वह उससे कोई बात नहीं करेगी जब तक वह उसको एक लाख रुपया नहीं देगा। उसने उसको पैसा दिया और फिर उसके सामने पहुँच गया।

इस बार उसने वजीर के बेटे के लिये कुछ खाने के लिये मँगवाया और उसकी प्लेट के खाने में कुछ दवा मिला दी। वह प्लेट उसने अपने मेहमान के सामने रखी तो उसने फिर से कोई शक नहीं किया और उसे खा लिया। उसे खाने के तुरन्त बाद ही उसकी आँखों में नींद आने लगी और वह जल्दी ही एक तरफ को लुढ़क गया।

इसके बाद उस लड़की ने फिर से दाई और रसोइये को बुलवाया और उसको अस्तबल में घोड़ों के बीच घास पर लिटवा दिया। दवा का असर खत्म हो जाने पर जब वजीर के बेटे की

ऑख खुली तो उसने देखा कि व्यापारी की बेटी ने उसको फिर से धोखा दिया है।

इस बार उसे शर्म भी आयी और गुस्सा भी आया फिर भी वह नाउम्मीद नहीं हुआ और उससे मिलने का फिर से इरादा बना लिया। अगली सुबह वह उससे मिलने के लिये फिर से उसके घर गया। इस बार उसने सोच रखा था कि वह वहॉ न कुछ खायेगा और न पियेगा।

जब वह उसके घर पहुॅचा तो फिर से उससे एक लाख रुपये की मॉग की गयी जो उसने तुरन्त ही दे दिये और वह तुरन्त ही अन्दर बुला लिया गया। पहले की तरह उसने इस बार भी उसके सवालों का बड़ी नम्रता से जवाब दिया और दाई को कुछ खाने के लिये लाने के लिये कहा।

वजीर का बेटा बोला — "आप परेशान न हों मुझे इस समय कोई भूख प्यास नहीं है। मेरी तबियत कुछ ठीक नहीं है। फिर भी यह सोचते हुए कि आप मुझसे खाने की जिद करेंगी मैं अपने घर से अपने लिये हकीम[24] का बताया खास खाना ले कर आया हूॅ।"

व्यापारी की बेटी बोली — "तब तो तुमने यह गलत किया है। यह कैसी अजीब सी बात है कि मेहमान अपना खाना अपने आप ले कर आया है।"

[24] The Doctor who treats his patients by Greek medical system.

वजीर का बेटा बोला — "आप मुझे माफ करें अगर आप इसमें से कुछ खाना चाहें तो आप इसे मेरे नौकर को दे कर गर्म करवा दें।"

व्यापारी की बेटी ने दाई को बुला कर कहा कि वह उसका खाना गर्म करवा दे। दाई उसका खाना ले कर चली गयी और व्यापारी की बेटी का इशारा पा कर उसने उस खाने में दवा मिला कर खाना वजीर के बेटे के नौकर को दे दिया।

जैसे ही खाना गर्म हो गया वजीर के बेटे का रसोइया उसकी प्लेट ले कर वहाँ आया और दाई व्यापारी की बेटी की प्लेट ले कर आयी। यह सोच कर कि इस बार कुछ भी गलत नहीं हो सकता था पर फिर भी वजीर के बेटे ने उसमें से थोड़ा सा ही खाया।

पर उसको खाने के बाद भी वह फिर बहुत जल्दी ही सो गया। तीसरी बार फिर दाई और रसोइया उसको अस्तबल में ले गये।

एकाध घंटे में ही उसको होश आ गया और जब उसे पता चला कि उसको फिर से धोखा दिया गया है तो उसने अपने मन में कहा "मैं भी कितना बेवकूफ हूँ। मैंने इस लड़की के ऊपर तीन लाख रुपये बर्बाद किये। आगे से मैं सावधान रहूँगा।" ऐसा सोच कर वह अपने घर चला गया।

रसोइये ने जब उस लड़की की पवित्रता और होशियारी देखी तो वह उसका दीवाना हो गया। उसने कहा "मैंने बहुत सी लड़कियाँ देखीं जो पवित्र थीं सुन्दर थीं और होशियार भी थीं पर इतनी पवित्र

सुन्दर और होशियार लड़की मैंने पहले कभी कहीं नहीं देखी। मैं इसी से शादी करूँगा।"

जल्दी ही व्यापारी और उसका परिवार मेले से लौट आये। रसोइये ने उससे अपने पैसे लिये और जाने की इजाज़त माँगी कि वह अपनी माँ से मिलना चाहता था। व्यापारी को उसकी बात माननी पड़ी पर ऐसे रसोइये को छोड़ने में उसको बहुत दुख हो रहा था। इस तरह रसोइया अपने घर चला गया।

जैसे ही वह घर पहुँचा तो उसके दोस्त और रिश्तेदार उससे सवाल पूछने के लिये आ पहुँचे क्योंकि उसे पत्नी ढूँढने के लिये गये काफी दिन हो गये थे और वे लोग यह जानने के लिये बहुत इच्छुक थे कि उसको उसकी मनचाही पत्नी मिली या नहीं।

उसने उनको बताया कि उसको एक लड़की मिल गयी है। उसने यह भी बताया कि वह उस व्यापारी की लड़की है जिसके घर में वह रसोइये का काम करता था और जो फलाँ फलाँ शहर में रहता था। वे सब यह सुन कर बहुत खुश हुए और उससे जल्दी से जल्दी शादी करने के लिये कहा।

एक शादी कराने वाले को उस व्यापारी के पास शादी तय कराने के लिये भेजा गया। सब कुछ ठीक था सो एक अच्छा दिन देख कर उन दोनों की शादी हो गयी। उससे ज़्यादा शानदार शादी हो ही नहीं सकती थी क्योंकि इस शादी में दोनों परिवारों ने खूब मन लगा कर पैसा खर्च किया।

दुलहे और दुलहिन की सुन्दरता और अमीरी के चर्चे सभी की जबान पर थे। शादी के दिन और फिर उसके बाद तक भी उनकी शादी की सारे शहर में बहुत खुशियाँ मनायी गयीं।

जब दुलहिन दुलहे के घर पहुँच गयी और वे लोग बिल्कुल अकेले थे तो वह उसके सामने बैठ कर उसे ध्यान से देख रही थी कि क्या वह वाकई में उतना ही अक्लमन्द और तेज़ था जितना कि उसने सुना था।

पर वह बोला — "मैं कोई वजीर का बेटा नहीं हूँ जिसको तुम धोखा दे लो और जिससे तुम लाखों रुपया ऐंठ लो।"

यह सुन कर तो वह भौंचक्की रह गयी। उसको शक हो गया कि शायद यह वही आदमी है जो उसके पिता के घर में रसोइये का काम करता था और इसी लिये उसके सब भेद जानता था।

यह उसको बिल्कुल अच्छा नहीं लगा और वहाँ से वह एक अलग कमरे में सोने चली गयी। ऐसा कई दिन तक चलता रहा। इस बीच उन दोनों में बहुत कम बातचीत हुई। वह उससे अलग ही रही जब तक वह दोबारा अपने पिता के घर वापस नहीं गयी।

यहाँ वह कई साल तक रही क्योंकि नौजवान व्यापारी ने उसको बुलाया ही नहीं। जब उसने देखा कि उसका पति उसे नहीं चाहता है तो उसने कहा "अगर ऐसा है तो मैं इसके खिलाफ आवाज उठाऊँगी।"

उसने एक बहुत सुन्दर काला घोड़ा और एक बहुत ही सुन्दर जीन[25] और लगाम खरीदी जो बहुत कीमती कपड़े से ढकी हुई थी और उस पर बहुत कीमती जवाहरात लगे हुए थे। फिर उसने अपने पिता से इधर उधर घूमने की इजाज़त माँगी जो उसे मिल गयी।

अपने पिता की इजाज़त ले कर उसने एक नौजवान व्यापारी का वेश रखा और अपने सुन्दर घोड़े पर चढ़ कर एक छोटे से कारवाँ के साथ बहुत तरह का सामान ले कर व्यापार करने चल दी। वह कई देश गयी और फिर आखीर में उस देश में आ पहुँची जिसमें उसका पति रहता था।

वहाँ पहुँच कर वह वहाँ के राजा से मिली और उसको बहुत से कीमती जवाहरात भेंट किये। उसने राजा से कहा कि वह एक व्यापारी का बेटा था और वहाँ व्यापार करने की इच्छा से आया था।

राजा उस नकली व्यापारी से मिल कर बहुत खुश हुआ। उसके लिये उसने एक खास घर का इन्तजाम कर दिया जिसमें वह तब तक रह सकता था जब तक वह उस शहर में था।

यह नकली व्यापारी अपनी सुन्दरता कुलीन व्यवहार और अक्लमन्दी भरी सलाह के लिये शहर भर में बहुत जल्दी ही मशहूर

---

[25] Translated for the word “Saddle”. See its picture above.

हो गया। राजा के खास बुलावे पर कभी कभी वह राजा के दरबार में भी जाता था और राजा के साथ बाहर घूमने भी जाता था जब वह घोड़े पर सवारी के लिये जाते थे।

एक दिन राजा ने उससे उसका घोड़ा उसको बेचने के लिये कहा तो उसने कहा कि राजा को वह वह घोड़ा दे देगा अगर राजा साहब उसको चार लाख रुपया दें तो।

राजा बोला — "चार लाख? छोड़ो इतने पैसे में मुझे इसकी इतनी जरूरत भी नहीं है।"

नकली व्यापारी ने अपने पति से भी दोस्ती कर ली। हालाँकि उसका पति उसको दरबार में अक्सर देखता था और बात करते सुनता था पर उसको उसकी असलियत का बिल्कुल भी पता नहीं था। वह अपने इस दोस्त को बहुत चाहने लगा था खास कर के जब उसने उसे बताया कि वह अब अपने देश जाने वाला है तो वह यह सुन कर बहुत दुखी हुआ।

नकली व्यापारी बोला — "मुझे भी तुम्हें यहाँ छोड़ते हुए बहुत दुख हो रहा है पर हमको एक दूसरे का दुख और बढ़ाना नहीं चाहिये। बोलो मैं तुम्हें अपनी इस दोस्ती की क्या निशानी दूँ।"

उसका पति व्यापारी बोला — "तुम्हारी एक चीज़ जो जब से मैं तुमसे मिला हूँ मुझे अच्छी लगी है वह है तुम्हारा सुन्दर घोड़ा। यह घोड़ा तुम मुझे देते जाओ।"

नकली व्यापारी बोला — "अफसोस मैं इसे चार लाख रुपये से कम में अपने से अलग नहीं कर सकता।"

उसका पति बोला — "क्यों। यह तुम क्या मजाक कर रहे हो। मुझे साफ साफ बताओ कि तुम्हें इसके लिये क्या चाहिये मैं वास्तव में तुम्हारा घोड़ा लेना चाहता हूँ।"

नकली व्यापारी बोला — "मैं तुम्हें यह घोड़ा तीन लाख रुपये में दे दूँगा।"

पति बोला — "नहीं नहीं इसकी यह कीमत ठीक नहीं है। तुम मुझे इसकी असली कीमत बताओ मैं तुमको वह तुरन्त ही दे दूँगा।"

नकली व्यापारी बोला — "ठीक है तुम मुझे दो लाख रुपये दे दो और घोड़ा तुम्हारा।"

पति बोला — "नहीं नहीं तुम अभी भी मुझसे इसकी ज़्यादा कीमत माँग रहे हो।"

नकली व्यापारी बोला — "तो तुम इसका एक लाख दे दो। यह मैं इतना कम इसलिये ले रहा हूँ क्योंकि तुम मेरे बहुत अच्छे दोस्त हो।"

पति बोला — "तो अच्छे दोस्तों के साथ ऐसे बर्ताव थोड़े ही किया जाता है कि तुम उससे सौदा कर के उससे उसका पैसा छीन लो।"

नकली व्यापारी बोला — "अच्छा अच्छा ठीक है चलो मैं तुम्हें घोड़ा बेचूँगा नहीं। तुम इसको ऐसे ही रख लो क्योंकि मैं तुम्हें बहुत

चाहता हूँ और मैं चाहता हूँ कि यह घोड़ा तुम्हारे पास रहे। तुम इसे ले लो और इसके बदले में मुझे दो चुम्बन दे दो।"

पति ने कहा — "ठीक है।" क्योंकि उसने सोचा कि अगर कोई इसे देख नहीं रहा है तो इसमें कोई हर्जा नहीं है। वह बोला — "पर तुम इसको किसी से कहना नहीं।"

तब नकली व्यापारी ने अपनी दोनों हथेलियों के बीच अपने पति का सिर पकड़ा और उसको इतनी ज़ोर से चूमा कि उसने उसके गाल पर घाव कर दिया। उसके बाद उसने उसको विदा कहा और वहाँ से चला गया।

कुछ समय बाद उसके दोस्तों ने उससे पूछना शुरू कर दिया कि वह अपनी पत्नी को बुलाता क्यों नहीं "क्या वह मर गयी है या फिर तुमने उसे छोड़ दिया है।"

वह बोला — "अरे नहीं नहीं ऐसी कोई बात नहीं है। जैसे ही मुझे ज़रा सी सुविधा होगी मैं उसको ले आऊँगा।"

सो एक सुबह वह अपने उस घोड़े पर चढ़ा जो उसने अपने दोस्त से दो चुम्बन के बदले में खरीदा था और अपने ससुर के घर की तरफ चल दिया। वहाँ वह करीब करीब एक महीने रहा। वहाँ उसका बहुत शानदार स्वागत हुआ। उन्होंने उसको बड़ी इज़्ज़त और प्यार से रखा।

जितने दिन भी वह वहाँ रहा हालाँकि वह खुद भी बहुत अमीर आदमी था फिर भी उसने वहाँ उसने अपने घोड़े को और अच्छी

तरह से रखा। वह रोज उसकी मालिश करता था उसको हरी हरी मुलायम घास खिलाता था और वह सब कुछ करता था जो उसकी तन्दुरुस्ती के लिये जरूरी था।

यह देख कर एक दिन उसकी पत्नी ने उससे पूछा कि वह इस काम के लिये एक नौकर क्यों नहीं रख लेता क्योंकि यह तो सचमुच में बड़ी मेहनत का काम था। और इसके अलावा यह उस जैसे बड़े आदमी के लिये बहुत नीचा काम था।

उसने उससे कहा कि यह घोड़ा उसके लिये बहुत कीमती था। उसकी कीमत चार लाख रुपये थी। और वह उसका यह काम किसी और को नहीं करने दे सकता था कि कहीं उससे उसके घोड़े को कुछ हो जाये तो।

उसकी पत्नी हँस कर बोली — "क्या आपने मुझे बिल्कुल ही बेवकूफ समझ रखा है। चार लाख रुपये। कोई घोड़ा इतनी कीमत का कैसे हो सकता है। इतने पैसे में तो सबसे अच्छी नस्ल के बहुत सारे घोड़े आ जायें। किसी ने आपको जरूर ही धोखा दिया है।"

पति अपनी पत्नी की बात पर कुछ गुस्सा होते हुए बोला — "तुम मानो या न मानो यह तुम्हारी मर्जी। पर मैं तुम्हें बता रहा हूॅ कि इस घोड़े के मैंने चार लाख रुपये दिये हैं।"

पत्नी बोली — "मुझे आपकी बातों पर विश्वास नहीं होता क्योंकि मेरा विचार आपसे बिल्कुल अलग है और मेरा विचार ठीक

है। क्या आपने यह घोड़ा दो चुम्बन के बदले में नहीं खरीदा था जिनके निशान अभी भी आपके गाल पर मौजूद हैं।"

जब पति ने यह बात सुनी तो शर्म से उसका सिर नीचे लटक गया। पत्नी आगे बोली — "एक बार आपने अपनी चालाकी और अक्लमन्दी की बहुत डींग हॉकी थी। मैंने उसी समय सोच लिया था कि मैं आपके साथ एक चाल खेलूँगी और आपको बताऊँगी कि आप उतने तेज़ और अक्लमन्द नहीं हैं जितना कि आप अपने आपको सोचते हैं।"

पति बोला — "यह ठीक है। तुमने मुझे सबक पढ़ा दिया। तुम मेरी गुरू हो और मैं तुम्हारा चेला। मेरी उस डींग को माफ करो और मुझे उतना ही प्यार करो जैसा कि तुम पहले करती थीं। चलो अब घर चलो।"

पत्नी राजी हो गयी और वे दोनों उस नौजवान व्यापारी के देश के लिये रवाना हो गये। वहॉ वे फिर बहुत साल तक शान्ति और खुशहाली से रहे।

47 दिन का चोर और रात का चोर[26]

एक बार की बात है कि एक स्त्री के दो पति थे। उनमें से एक पति के साथ वह दिन में रहती थी और दूसरे पति के साथ वह रात में रहती थी। ये दोनों आदमी चोर थे। इनमें से एक का नाम था धुलीसूर क्योंकि वह रोज दिन में चोरी करता था और दूसरे का नाम था रातुलीसूर क्योंकि वह हमेशा रात को चोरी करता था।

इन दोनों में से किसी को यह पता नहीं था कि उसकी पत्नी का कोई दूसरा पति भी है क्योंकि दिन वाला चोर सुबह होते ही घर से चला जाता था और रात गये तक नहीं लौटता था। और रात वाला चोर अँधेरा होते ही चला जाता था और काफी दिन निकल आने के बाद ही घर वापस लौटता था।

एक दिन वे दोनों मिल गये और एक दूसरे को जान गये। उनको यह जान कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वे दोनों एक ही घर में रह रहे थे और उनकी एक ही पत्नी थी। पहले तो उनको इस बात का विश्वास ही नहीं हुआ कि ऐसा हो सकता था पर जब वे घर गये और अपनी पत्नी से पूछा कि वह उन दोनों में से किसकी पत्नी थी। तब उनको यह मामला साफ हुआ कि वह तो दोनों की पत्नी थी।

---

[26] The Day-Thief and the Night-Thief (Tale No 47)

अब यह मामला चाहे कितना भी ठीक क्यों न हो और जब तक वे इस बात से बेखबर थे शायद चलता भी रहता पर जानने के बाद यह सब नहीं चल सका।

एक दिन उन्होंने अपनी पत्नी से कहा — "हम दोनों तुम्हारे पति नहीं हो सकते इसलिये अब तुम यह बताओ कि तुम हम दोनों में से किसको अपना पति चुनती हो। जो तुम्हारा पति है वह यहीं रह जायेगा और दूसरा आदमी कहीं और चला जायेगा।"

स्त्री बोली तुममें से जो भी मुझे ज़्यादा कीमती चीज़ ला कर देगा वही मेरा पति होगा। चोर राजी हो गये।

अगली सुबह दिन का चोर जल्दी ही उठा अपने कीमती कपड़े पहने और रात के चोर से कहा कि वह उसका नौकर बन कर उसके साथ चले। रात का चोर मान गया और दिन के चोर के साथ उसका नौकर बन कर उसके साथ चल दिया।

दिन का चोर एक बहुत ही बड़ी गहनों की दूकान में बड़ी शान से घुसा और उसको नमस्कार करते हुए बोला — "राजा ने मुझे यहाँ कुछ कीमती जवाहरात खरीदने के लिये भेजा है।"

जौहरी बोला — "यकीनन यकीनन। यह आपकी बड़ी मेहरबानी है कि आपने मुझे याद किया। लीजिये यह कुछ खाने के लिये लीजिये।" यह कह कर वह उन चोरों को अपनी दूकान के पिछले वाले हिस्से में ले गया और बढ़िया बढ़िया खानों की कई प्लेटें उनके सामने रख दीं।

जब तक उन्होंने अपना खाना खत्म किया तब तक उस जौहरी ने बहुत अच्छे अच्छे गहनों के डिब्बे उनके देखने के लिये सजा कर रखे हुए थे।

"आहा। आपने इनको इतने अच्छे से सजा रखा है कि गहने चुनने में मुझे बहुत देर नहीं लगेगी। मुझे ये कुछ हीरे ये कुछ मोती और ये कुछ अँगूठियाँ दे दीजिये।"

फिर उसने इधर उधर देखते हुए अलग अलग जवाहरातों के एक ढेर की तरफ इशारा करते हुए कहा — "और हाँ कुछ ये चीज़ें भी।"

जब वह जौहरी वह सब पैक कर चुका तो दिन का चोर बोला — "उम्मीद है कि आपको इसमें कोई ऐतराज नहीं होगा अगर राजा साहब पहले इनको देख लें।"

जवाब सुने बिना ही उसने रात के चोर से कहा कि वह उन चीज़ों को ले कर तुरन्त ही राजा साहब के पास चला जाये और जो चीज़ें भी वह चुन लें उनकी कीमत शाही खजाने से निकाल कर तुरन्त ही वापस आये।"

वह आगे बोला — "तुम इधर उधर मत रह जाना मैं यहीं तुम्हारा इन्तजार कर रहा हूँ।"

रात वाला चोर तुरन्त ही वह सब सामान उठा कर वहाँ से रवाना हो गया और वह सब सामान ले जा कर अपनी पत्नी को दे

दिया। इस बीच जौहरी की दूकान में बैठ कर दिन के चोर ने एक नींद ले ली। फिर कुछ चाय पी।

एकाध घंटे बाद वह उठा उसने एक बड़ी सी ॲगड़ाई ली और जौहरी से टौयलेट की जगह पूछी। जौहरी ने उसको टौयलेट दिखा दिया और उसे वहॉ छोड़ कर चला आया। यही उस दिन के चोर ने उससे उम्मीद की थी।

उसको मालूम था कि उस टौयलेट का एक दूसरा दरवाजा भी था जो वहॉ से दूसरी सड़क पर खुलता था। बस वह वहॉ से बाहर निकल गया और बहुत जल्दी ही अपनी पत्नी और रात वाले चोर से जा कर मिल गया।

वे अपनी सफलता पर बहुत देर तक हॅसते रहे। जौहरी को जब पता चला तो वह तो इस धोखे पर अपना सिर पीटता रह गया।

शाम को रात वाले चोर ने दिन वाले चोर को बुलाया और उससे कहा कि उसने उसे दिन में सहायता की थी अब उसको उसकी रात को सहायता करनी चाहिये। दिन वाला चोर राजी हो गया।

रात को वे दोनों चोरी करने निकले। वे लोग राजा के महल पहॅुचे जहॉ रात वाला चोर ऊपर चढ़ कर राजा के सोने वाले कमरे की खिड़की की तरफ पहॅुच गया। वहॉ से वह उसके कमरे में अन्दर चला गया। वहॉ उसने एक दासी राजा के पैरों के पास बैठी हुई

देखी। वह उससे बोला — "तुम्हारा एक शब्द मुँह से बाहर और तुम मरीं।"

इशारे से उसने उससे कहा कि वह अपनी जगह से हट जाये और उसको वहाँ बैठ जाने दे। इसी समय राजा की आँख खुल गयी और उसने अपनी दासी जो उसने सोचा था कि वह वहाँ बैठी थी एक कहानी सुनाने के लिये कहा।

इस पर रात वाले चोर ने राजा को दो चोरों की एक कहानी सुनायी – धुलीसूर और रातूलीसूर की। कहानी खत्म होने से पहले ही राजा सो गया। तब रात वाले चोर ने दासी से कहा कि वह उसको वह जगह बताये जहाँ राजा अपने जवाहरात रखता था।

अपनी ज़िन्दगी के डर से उसने उसको वह जगह बता दी जहाँ राजा अपनी कीमती चीज़ें रखता था। उसने कहा कि वह अपने कीमती जवाहरात एक सोने की मछली में रखता था जो उसके तकिये के अन्दर रखी हुई जिस पर उसका सिर रखा हुआ था।

रात वाले चोर ने राजा के गुदगुदी की जिससे उसने करवट बदली। इस करवट बदलने से उसका सिर तकिये पर से हट गया जिससे रात वाले चोर ने वह सोने की मछली आसानी से उसके तकिये में से निकाल ली।

म्छली निकाल कर उसने फिर से दासी को चेतावनी दी कि वह शोर बिल्कुल न मचाये और राजा के सोने के कमरे में से उसी रास्ते

से बाहर निकल आया जिस रास्ते से वह अन्दर गया था और घर चला गया।

जब स्त्री ने देखा कि उसके दोनों पतियों की चोरी की गयी चीज़ों की कीमत करीब करीब एक सी थी तो उसने कहा कि वे दोनों बराबर के थे और उन दोनों को फिर से कोशिश करनी चाहिये।

सो अगले दिन सुबह वे दोनों फिर से अपनी किस्मत आजमाने के लिये घर से बाहर निकले। उनको एक कारवॉ मिला जिसमें लोग बहुत सारा खजाना ले कर किसी दूर देश से आ रहे थे। उन लोगों ने प्लान बनाया कि वह बिना उन लोगों के जाने उनका कुछ खजाना चोरी कर लेंगे।

दिन वाले चोर ने यह देख लिया था कि उस खजाने में उनके पास एक गठरी बहुत सुन्दर जूतों की थी जिन पर सोने का काम किया गया था। बस उसके दिमाग में एक विचार कौंधा।

वह उस घोड़े पर कूद गया जिस पर यह गठरी लदी हुई थी और कारवॉ के पीछे पीछे भागने लगा जैसे कि वह कुछ और सामान लूटने के लिये जा रहा हो। फिर अचानक एक तरफ जाने वाली सड़क पर मुड़ गया जो उसके घर को जाती थी।

जब वह उस सड़क पर कुछ दूर चल लिया तो उसने यह पक्का किया कि रात वाला चोर उसके पीछे आ रहा है या नहीं। जब उसने देखा कि वह नहीं आ रहा तो उसने उस गठरी में से एक जूता

निकाल कर सड़क पर फेंक दिया। फिर वह कुछ और आगे गया और एक दूसरा जूता सड़क पर फेंक दिया। उसके बाद वह अपने घोड़े को ले कर एक हैज के पीछे छिप गया।

रात वाले चोर की समझ में ही नहीं आया कि दिन वाले चोर को इतना समय क्यों लग रहा है। उसने उसका बहुत देर तक इन्तजार किया फिर थक कर अपने घर वापस चला गया।

उसने अपने मन में कहा "नीच आदमी। वह इतने ही सामान को लूटने से सन्तुष्ट नहीं था जितना कि मैंने लूटा। लगता है कि वह पकड़ा गया। उम्मीद है कि वह मेरे बारे में कुछ नहीं बतायेगा।"

ऐसा कहते हुए वह उसी सड़क पर चला जा रहा था जिस पर दिन वाले चोर ने जूते फेंके थे। उसको एक जूता मिला तो उसने उसको उठा लिया पर उसने देखा कि वहाँ तो केवल एक ही जूता था सो उसने उसे फिर फेंक दिया।

पर थोड़ा आगे चलने पर उसको वैसा ही एक जूता और मिला। उसने उसे उठाते हुए कहा — "उफ़ कितनी खराब बात है कि यह दूसरा जूता मुझे अब मिल रहा है। काश वह पहले वाला जूता मैंने उठा लिया होता तो अब मेरे पास उसकी जोड़ी होती।

खैर अभी बहुत समय नहीं हुआ है मैं अपना घोड़ा इस पेड़ से बाँध देता हूँ और वापस जा कर उस जूते को ले आता हूँ। वह

ज़्यादा दूर नहीं है इसलिये मुझे उसे लाने में ज़्यादा समय नहीं लगेगा।" ऐसा सोच कर वह अपना घोड़ा पेड़ से बाँध कर दूसरे जूते को लेने चल दिया।

उसके जाने के बाद दिन वाले चोर ने रात वाले चोर के घोड़े को खोला और उसको हाँकते हुए सीधा घर आ गया।

घर पहुँच कर वह अपनी पत्नी से बोला — "देखो देखो मैं तुम्हारे लिये दो घोड़े के बोझ जितना खजाना ले कर आया हूँ। जबकि रात वाला चोर केवल दो जूते ले कर ही आ रहा है।

अब मेरी बात सुनो। मैं इस शाम उससे बात करने वाला नहीं हूँ इसलिये मैं मरने का बहाना करूँगा। जब वह यहाँ आये तो तुम आँखों में आँसू भर कर उससे कहना कि मैं अचानक मर गया।"

रात वाला चोर उस दिन बहुत देर से घर पहुँचा क्योंकि उसका घोड़ा तो दिन वाला चोर ले गया था सो उसको पैदल चल कर ही घर आना पड़ा। वह बहुत गुस्से में था सो आते ही उसने दिन वाले चोर के बारे में पूछा।

उसकी पत्नी रोती हुई बोली — "वह तो अचानक मर गया।"

रात वाले चोर को इस बात पर यकीन ही नहीं आया। वह बोला — "मर गया? क्या? यह तुम क्या कह रही हो। यह नहीं हो सकता। कहाँ है उसकी लाश। मैं उसे अभी जगाता हूँ।"

उसकी पत्नी ने कोने में पड़ी हुई एक गठरी की तरफ इशारा कर दिया। वह उसके ऊपर चल कर बोला "देखता हूँ कि यह

हिलता है कि नहीं।" फिर उसने एक बोतल उबलता हुआ गर्म पानी उसके पैरों पर डाला पर दिन वाला चोर तो बिल्कुल भी नहीं हिला।

रात वाला चोर बोला — "लगता है कि यह तो मर गया। मैं इसको बाहर ले जा कर इसको गाड़ देता हूँ।"

सो वह उसको गाड़ने के इरादे से बाहर ले गया। उसने उसको गाड़ने से पहले उसके लिये कब्र खोदी पर उसे गाड़ने से पहले वह यह देखने के लिये पास में लगे एक पेड़ पर चढ़ा कि वह दिन का चोर अभी भी उसे कहीं धोखा तो नहीं दे रहा।

वह यह सब देख ही रहा था कि इतने में डाकुओं का एक गिरोह वहाँ आ निकला। उस गिरोह के पास बहुत सारा खजाना था। वह लाश देख कर उनमें से एक चिल्लाया — "देखो देखो यह एक पवित्र जगह है। यहाँ एक मुर्दा खुली कब्र में से निकल आया है।"

दूसरा बोला — "यह तुम क्या बेवकूफी की बात कर रहे हो। ऐसा भी कहीं होता है क्या। इधर देखो मैं इस बेवकूफ आदमी को हम जैसे भोले भाले आदमियों को गुमराह करने और डराने के जुर्म में सजा दूँगा।" ऐसा कह कर उसने एक पत्थर उठा कर लाश के मुँह पर दे मारा और उसके कुछ दाँत तोड़ दिये।

दिन वाले चोर के लिये यह बहुत ज़्यादा था वह चिल्ला पड़ा "ओह ओह।" तो रात वाले चोर को मौका मिल गया वह चिल्लाया

— "ओ कमीनों तुम लोग यहाँ से चले जाओ। तुम लोग लाशों को क्यों परेशान कर रहे हो।"

यह सुन कर चोर अपना खजाना तो वहीं भूल गये और वहाँ से भाग लिये। बहुत जल्दी ही वे वहाँ से गायब भी हो गये। दिन वाला चोर तब उठा उसने रात वाले चोर की सहायता की और वहाँ से सारा खजाना ले कर घर आ गया।

अगली सुबह राजा ने देखा कि उसके जवाहरात का खजाना तो किसी ने चुरा लिया है। उसने जौहरी की दूकान पर की चोरी के बारे में भी सुना। उसने सोचा कि ऐसे कामों को रोकने के लिये उसको कोई जबरदस्त कदम उठाना चाहिये सो उसने शहर भर के सारे चोरों को पकड़ने और उनको मारने का हुक्म जारी कर दिया।

दिन का चोर और रात का चोर इस लिस्ट में शामिल नहीं थे क्योंकि उनके खिलाफ पहले कभी कोई रिपोर्ट ही नहीं लिखवायी गयी थी और इस तरह से वे बड़े ईमानदार और इज़्ज़तदार लोगों में गिने जाते थे।

बाद में राजा को अपने इस हुक्म पर बड़ा पछतावा हुआ सो जब चोरों को मारने का समय आया तो उसने एक और ऐलान किया कि अगर कोई चोर अपना जुर्म स्वीकार कर ले तो उसको पूरी तरीके से माफ कर दिया जायेगा।

यह ऐलान सुन कर दिन का चोर और रात का चोर राजा के पास गये और उनके आगे सिर झुका कर सब बताया कि कैसे

उन्होंने यह सब किया था। राजा यह सब सुन कर आश्चर्य में भी पड़ गया पर साथ में खुश भी बहुत हुआ।

जब राजा ने उनके साहस और होशियारी की कहानी सुनी तो उनको बहुत सारी भेंटें दीं पर उस स्त्री को उसने मरवा दिया। उसका कहना था कि ये दोनों ऐसा कभी नहीं करते अगर उसने इनको नहीं उकसाया होता।

दिन के चोर और रात के चोर दोनों ने लूटा हुआ खजाना वापस कर दिया और फिर बाद में शान्ति की ज़िन्दगी बिताने लगे।

48 चालाक सुनार[27]

एक बार की बात है कि एक सुनार छोटे छोटे कस्बों और गाँवों में जा जा कर सोने के पानी चढ़े पीतल के कंगन बेचा करता था। वह यह दिखाता था कि वे सोने के हैं और वैसे ही उनसे दाम भी लेता था। इस तरह से वह बहुत सारे भोले भाले लोगों को धोखा देता था।

एक दिन वह पकड़ा गया। एक किसान की पत्नी को उसका ढंग चाल कुछ अच्छा नहीं लगा तो उसने उससे खरीदे हुए सोने की जाँच करनी चाही।

वह उसको अपनी एक दोस्त को दिखाने के लिये ले गयी और वहाँ उसने पाया कि उसका वह गहना तो सारा पीतल का था उस पर केवल सोने का पानी चढ़ा था। वह सोने का था ही नहीं।

वह इस बात पर बहुत गुस्सा हुई और उसने उससे इस बात पर सुनार से झगड़ा करने की सोची। उसने अपने पति से एक घड़े में मिट्टी भरने के लिये कहा और उसके ऊपर एक पौंड घी[28] भरने के लिये कहा और फिर उसे एक पौंड घी के दाम में सुनार को बेचने के लिये कहा। जैसा कि उम्मीद की जाती थी क्योंकि किसान ने उसका दाम कम रखा था इसलिये सुनार ने वह घड़ा खरीद लिया।

---

[27] The Cunning Goldsmith (Tale No 48)

[28] Ghee means clarified butter

अगले दिन जब उसका धोखा पकड़ा गया तो वह सुनार किसान की इस बात से बजाय गुस्सा होने के इतना खुश हुआ कि उसने किसान को बुलवा भेजा और उससे पूछा कि क्या वह उसके यहाँ नौकरी करना चाहता था क्योंकि अगर वह उसके यहाँ नौकरी करना चाहता था तो उसके पास उसके लिये कुछ काम था।

किसान राजी हो गया और अपनी चतुर पत्नी की सहायता से उस सुनार की उसकी धोखाधड़ी करने में सहायता करने लगा।

कुछ समय बाद शहर में एक अमीर व्यापारी मर गया। उसको दफनाने तीन चार दिन बाद सुनार ने किसान से कहा — "देखो मैं इस आदमी का अभी भी कुछ कर सकता हूँ। तुम जा कर उसकी कब्र में लेट जाओ और मैं मरे हुए व्यापारी के परिवार के पास जा कर उसको यह विश्वास दिलाता हूँ कि यह व्यापारी मेरा दस हजार रुपये का कर्जा बिना दिये ही मर गया है।

अगर वे लोग इस कर्जे को मना करेंगे कि व्यापारी ने कोई कर्जा नहीं लिया और ऐसा होगा ही कि वे मना तो करेंगे ही तो मैं उनसे कहूँगा कि वे लाश से आ कर खुद ही पूछ लें। जब वे ऐसा करेंगे तो मैं यह चाहता हूँ कि तुम दैवीय आवाज में उनसे यह कहो कि "हाँ तुमने यह कर्जा मुझसे लिया है।"

किसान बोला "ठीक है।" और जा कर व्यापारी की कब्र में लेट गया। सुनार उस मरे हुए व्यापारी के घर गया और उसकी जमींदारी पर अपना हक जताया कि क्योंकि वह उसका दस हजार

रुपये का कर्जा बिना दिये ही मर गया है सो अब यह जायदाद उसकी है।

व्यापारी के परिवार वाले यह सुन कर बड़े आश्चर्य में पड़े। उन्होंने बताया कि उन्होंने कई बार व्यापारी से लम्बी लम्बी बातें की हैं उनकी सारी हिसाब की कापियाँ भी देखी हैं पर उन्होंने हमें इस कर्जे के बारे में कभी नहीं बताया।

उनके ऊपर यह कर्जा कैसे हुआ। क्या उन्होंने तुमसे इसे उधार लिया था और या फिर उसका सामान खरीदा था। और उसको देने का क्या तरीका था।

इन सब सवालों के जवाब सुनार ने बड़े अच्छे तरीके से दिये पर फिर भी उसने देखा कि उनको इस कर्जे का विश्वास ही नहीं हो रहा तो उसने उनको अगली सुबह एक निश्चित समय पर कब्र पर बुलाया जब वह अपने दावे को सही साबित कर सकेगा।

अगली सुबह सुनार के साथ व्यापारी का सारा परिवार प्रार्थना करते हुए कब्र के पास इकट्ठा था कि लो कब्र से एक कराहने की आवाज आयी और फिर दोबारा कराहने की आवाज आयी और उसके बाद एक आदमी की बड़ी हल्की सी आवाज आयी।

"ओ कोई मेरी सहायता करो। अल्लाह ने मुझे नरक में डाल रखा है क्योंकि मेरे ऊपर सुनार का दस हजार रुपये का कर्जा है और मैं उसको दिये बिना ही मर गया। तुम अपने दान खाते में से

यह रुपया सुनार को दे दो और मुझे इस कष्ट से छुटकारा दिलाओ।"

यह सुन कर व्यापारी के रिश्तेदारों और दोस्तों ने सुनार से माफी मॉगी और उसको अपने साथ घर चलने के लिये कहा जहॉ वे उसको उसका बताया हुआ पैसा दे देते। सुनार उनके साथ उनके घर चला गया और वहॉ से रुपये ले कर अपने घर आ गया।

इस तरह सुनार ने उस लाश से पैसे तो कमा लिये पर वह किसान को कब्र में ही भूल गया। पूरे दो दिन तक किसान ने उस गन्दे गड्ढे में सुनार का इन्तजार किया पर उसके बाद उसको वहॉ रहना सहन नहीं हुआ तो वह उसकी मिट्टी हटा कर बाहर निकल आया।

कब्र से बाहर निकल कर वह सीधा सुनार के घर गया। सुनार ने जब किसान को आते देखा तो वह अपनी पत्नी से बोला — "देखो मैं यहॉ मरे जैसा लेट जाता हूॅ। तुम दरवाजे पर जा कर उससे मिलो और उससे ऊॅची और गुस्से भरी आवाज में पूछो कि उसने मेरे साथ यह क्या किया है।"

जब किसान दरवाजे पर आया और उसने सुनार की लाश फर्श पर पड़ी देखी और सुनार की पत्नी का गुस्से से भरा चेहरा देखा तो वह इस डर से वहॉ से भाग लिया कि किसान के कत्ल का इलजाम कहीं उसके सिर न लग जाये और उसको सजा न हो जाये।

वह रोता हुआ बोला — "हर कोई जानता है कि मैं उसका नौकर हूँ और वह यह भी मानेगा कि मैंने उसका कत्ल उन पैसों की वजह से किया है जो उसके पास अभी अभी आये हैं।"

यह सोच कर वह और उसकी पत्नी जल्दी से जल्दी वहाँ से बच कर किसी दूसरे देश भाग लिये और तबसे उनका अब तक कोई पता नहीं है।

49 राजकुमारी ने अपना पति को कैसे पाया[29]

एक बार की बात है कि एक राजा अपने बेटे की शादी करना चाहता था सो उसने अपने वज़ीर को उसके लिये कोई ठीक लड़की देखने के लिये इधर उधर भेजा। वजीर चल दिया और घूमते घूमते एक दूसरे राज्य के वज़ीर से मिला जो उस देश के राजा की सुन्दर बेटी के लिये कोई अच्छा राजकुमार ढूॅढ रहा था।

जब वे आपस में मिले और उनको एक दूसरे के घूमने का उद्देश्य पता चला तो वे बोले — "हम लोग अच्छे मिले। हमारे राजा लोग आपस में दौलत और ताकत में एक से हैं। इसके अलावा राजकुमार और राजकुमारी भी एक दूसरे के लायक हैं। तो हम अब अपने अपने देश लौट जाते हैं और इस शादी को करवाने की कोशिश करते हैं।"

यह कोई बहुत मुश्किल काम नहीं था क्योंकि दोनों राजाओं ने एक दूसरे का रिश्ता स्वीकार कर लिया। शादी का दिन तय हो गया। पर अफसोस शादी का दिन आने से पहले ही राजकुमार के पिता की मौत हो गयी। यह देख कर राजकुमारी के पिता ने इस शादी के लिये मना कर दिया और एक दूसरे राजकुमार से उसकी शादी पक्की कर दी।

---

[29] How the Princess Found Her Husband (Tale No 49)

इस शादी के लिये भी एक दिन तय किया गया और यह नया राजकुमार अपनी बारात खूब गाजे बाजे के साथ ले कर राजकुमारी के घर आया। रास्ते में उस राजकुमार का देश भी पड़ता था जिसके पिता की मौत हो गयी थी क्योंकि राजकुमारी के देश पहुँचने का वही एक रास्ता था।

पहले राजकुमार ने नये राजकुमार के बारे में सब कुछ सुना कि वह कहाँ जा रहा था तो उसने उससे दोस्ती कर ली। नये राजकुमार ने उसको अपनी शादी का न्यौता भी दे दिया। सो अपने एक तेज़ घोड़े पर सवार हो कर और एक नौकर को दूसरे घोड़े पर ले कर पहला राजकुमार दूसरे राजकुमार की शादी में शामिल होने गया।

जब वह वहाँ पहुँचा तो उसको बड़ी इज़्ज़त के साथ दावत खाने के लिये एक जगह बिठाया गया पर उसने खाया कुछ नहीं। वह अपने पिता की मौत और इस राजा के अपनी बेटी की शादी उससे न करने पर बहुत दुखी था।

रीति रिवाज के अनुसार दुलहिन भी इस मौके पर वहाँ थी। उसने राजकुमार को दुखी और कुछ न खाते हुए देखा तो उसको उस पर दया आ गयी। उसने अपनी एक दासी को उसके पास भेज कर उससे पुछवाया कि वह दूसरे मेहमानों की तरह आनन्द ले कर खाना क्यों नहीं खा रहा था। इस पर राजकुमार ने जवाब दिया कि उसको दावत खाना मना था।

राजकुमारी तब उसके पास खुद गयी और उससे इस सबकी वजह पूछी क्योंकि वह इस खुशी के मौके पर दुखी चेहरा नहीं देख पा रही थी।

राजकुमार बोला — "राजकुमारी तुम कानूनन मेरी पत्नी हो पर तुम्हारे पिता तुम्हें किसी और को दे रहे हैं। क्या मेरे पिता की मौत की यह सजा मुझे मिल रही है। क्या उसने मुझे इतना अपवित्र कर दिया है कि मैं उनकी बेटी से शादी करने लायक नहीं रह गया। अगर नहीं तो फिर उन्होंने मेरे साथ ऐसा क्यों किया।"

राजकुमारी बोली — "यह तो मुझे नहीं पता पर मैं तुमसे शादी करूँगी। अगर तुम्हारे पास कोई तेज़ भागने वाला घोड़ा है तो तुम रात को मेरा फलॉ फलॉ समय पर इन्तजार करना। मैं आऊँगी और फिर तुम जहॉ मुझे ले चलोगे मैं तुम्हारे साथ वहीं चलूँगी।"

आधी रात का समय निश्चित किया गया सो राजकुमार और राजकुमारी दोनों राजकुमार के तेज़ घोड़े पर सवार हो कर आगे आगे और एक नौकर घोड़े पर सवार हो कर उनके पीछे पीछे चुपचाप महल से चल दिये।

वे वहॉ से कई मील निकल गये थे कि राजकुमारी को याद आया कि वह अपने कुछ जवाहरात तो घर पर ही छोड़ आयी थी जिनको वह अपने पास रखना चाहती थी और उनको अपने साथ लाना चाहती थी।

जब राजकुमार ने देखा कि वह उनको लाने के लिये बहुत बेचैन है तो वह बोला — "छोड़ो भी। तुम मुझे बता दो कि वे कहाँ हैं मैं उनको जा कर ले आऊँगा। जब वे लोग मुझे देखेंगे तो उनको कोई शक नहीं होगा और नौकरों को तो मैं आसानी से घूस दे सकता हूँ। तुम मुझे जाने दो और तुम यहीं इस नौकर के साथ ठहरो। सब ठीक हो जायेगा। अब तुम सो जाओ। मैं बहुत जल्दी वापस आऊँगा।"

राजकुमारी ने उसको बता दिया कि वे जवाहरात कहाँ रखे थे और राजकुमार उन्हें लेने चला गया। लोगों के बिना जाने ही वह उनको लेने में सफल भी हो गया पर अफसोस, बहुत बहुत अफसोस।

जब वह लौट कर आया तो राजकुमारी वहाँ नहीं थी जहाँ वह उसको छोड़ कर गया था। असल में उसके जाने के बाद एक डाकू वहाँ आया था। नौकर सो रहा था तो वह उसको दूसरे घोड़े पर बिठा कर वहाँ से ले गया।

उधर जब राजा ने अपनी बेटी को महल में नहीं देखा तो बहुत दुखी हुआ। उसको पता नहीं था कि वह कहाँ थी और वह क्या करे। उसने सोचा कि शायद वह किसी और के साथ भाग गयी है या फिर कोई डाकू उसको उठा कर ले गये हैं। वह बेचारा उसकी कुशल की आशा करता रहा और अपनी दूसरी बेटी की शादी उस आये हुए राजकुमार से कर दी।

इधर अँधेरा होने की वजह से राजकुमारी ने डाकू को देखा नहीं। उसने उसको राजकुमार समझा और उससे राजकुमार की तरह से ही बात की — "अरे तुम तो बड़ी जल्दी आ गये। क्या तुम्हें सब जवाहरात मिल गये।"

डाकू बोला — "हॉ पर अभी बात मत करो। बात तो हम बाद में भी कर सकते हैं। अभी तुम चलो।" डाकू ने उसी समय अपने आपको उसे बताने की कोशिश नहीं की कि वह कौन है। उसे डर था कि राजकुमारी कहीं चिल्ला न पड़े और नौकर की ऑख खुल जाये इसी लिये उसने ऐसा जवाब दिया।

उसने घोड़े को बहुत तेज़ भगाया जब तक कि वे जंगल के किनारे तक नहीं आ गये। वहॉ आ कर वे एक छोटे से गॉव की तरफ मुड़े जहॉ राजकुमारी ने थोड़ा आराम करने की इच्छा प्रगट की। उसने कहा — "जाओ और कुछ खाने के लिये ले कर आओ। घोड़े को इस पेड़ से बॉध दो और जाओ।"

यह सुन कर डाकू वहॉ से यह सोच कर चला गया कि यह तो लड़की है अकेले घोड़े पर कैसे चढ़ेगी पर वह गलती पर था। राजकुमारी को तो घुड़सवारी की तबसे आदत थी जबसे वह छोटी बच्ची थी। वह बिगड़े से बिगड़े घोड़े पर भी चढ़ने को तैयार रहती थी। जैसे ही डाकू वहॉ से गया वह घोड़े पर चढ़ी और वहॉ से भाग ली।

वह कई मील तक चलती रही। आखिर वह एक सुनार के घर आ पहुँची। उसने वहाँ रुक कर उससे पीने के लिये पानी माँगा। सुनार उसकी सुन्दरता देख कर उस पर मोहित हो गया और उससे शादी करने की इच्छा करने लगा।

उसने ऐसा उससे कहा भी। राजकुमारी उससे शादी करने के लिये इस शर्त पर राजी हो गयी कि वह उसको वहीं उसी समय सौ रुपये की कीमत के कान के बुन्दे[30] देगा तो वह उससे शादी कर लेगी।

इत्तफाक से उसने उसी समय रानी के लिये कई तरह के गहने बनाये थे तो उस समय उसके पास वह चीज़ थी जो वह चाहती थी। उसने सोचा कि उस समय वे गहने वह राजकुमारी को दे देगा और उससे शादी कर लेगा फिर बाद में वह उससे उन्हें ले लेगा।

उसने ऐसा ही किया और शादी अगले दिन की तय हो गयी। पर राजकुमारी वहाँ से भी भाग गयी। वह फिर कई मील चलती रही और एक झोंपड़ी के सामने जा कर रुक गयी। वह झोंपड़ी एक गरीब आदमी और उसकी पत्नी की थी।

वहाँ पहुँच कर उसने अपने वह कान के बुन्दे जो उसने सुनार से लिये थे और दूसरी कीमती चीज़ें उनको दीं और उनसे रहने की जगह और खाना माँगा। वह वहाँ रात भर ठहरी। अगले दिन उसने एक आदमी का वेश बनाया और वहाँ से भी चल दी।

---

[30] Translated for the word "Earrings". See their picture above.

वह अपने घोड़े पर सवार एक शहर में आयी जहाँ का राजा तभी तभी मरा था और तब तक कोई दूसरा राजगद्दी पर नहीं बैठा था।

वहाँ का यह नियम था कि एक राजा के मरने के बाद वहाँ का शाही हाथी दूसरा राजा चुनता था सो वहाँ के वज़ीरों ने उस शाही हाथी को दूसरा राजा चुनने के लिये बाहर निकाल दिया था। यह हाथी जिस किसी के आगे झुक जाता था उसी को राजा बना दिया जाता था।

इत्तफाक से जब यह राजकुमारी वहाँ से गुजर रही थी तो उसको यह हाथी मिल गया और वह इसके सामने झुक गया सो वहाँ के लोगों ने इसको राजा बना दिया।

इस बीच राजकुमार का नौकर जिसको राजकुमार राजकुमारी के पास छोड़ कर गया था जाग गया। उसने देखा कि न तो वहाँ पर घोड़ा था और न ही राजकुमारी। अपने आपको अकेला पा कर उसका दुनियाँ से दिल हट गया और वह जोगी बन गया।

उधर उस डाकू ने भी देखा कि राजकुमारी उसको किस तरह से धोखा दे कर चली गयी तो उसका दिल भी दुनियाँ से हट गया और वह भी जोगी बन गया।

राजकुमारी के जाने के बाद सुनार भी धार्मिक ज़िन्दगी बिताने लगा क्योंकि उसे लगा कि अब राजा उसको मरवा डालेगा क्योंकि रानी के कान के बुन्दे तो राजकुमारी के साथ ही चले गये थे।

इस तरह से ये तीनों जोगी हो गये और अपनी किस्मत पर रोते हुए बहुत ही दुखी ज़िन्दगी बिताते घूमने लगे।

राजकुमारी के राज में उसका राज्य खूब फला फूला। उसने अपना वेश इतनी अच्छी तरीके से बदल रखा था कि किसी को यह शक भी नहीं हुआ कि वह कोई लड़की है। बार बार उसको शादी करने के लिये कहा गया पर बड़ी मुश्किल से उसने अपने आपको सॅभाला।

पर वह खुश नहीं थी। उसकी यह इच्छा बहुत ज़ोर पकड़ती जा रही थी कि किसी तरह उसको उसका राजकुमार मिल जाये। वह उसको देखना चाहती थी उससे बात करना चाहती थी।

एक दिन उसने एक बहुत अच्छे ड्राइंग बनाने वाले को बुलाया और उससे अपनी तस्वीर बनाने के लिये कहा जिसमें उसको चाकू मार दिया हो और जैसे वह मरने वाली हो। यह काम सबसे छिपा कर किया गया। केवल वह पेन्टर ही इस बारे में जानता था और उसको इस बात के छिपाने के लिये काफी पैसा दिया गया था।

जब यह तस्वीर तैयार हो गयी तो उसे शहर में एक ऐसी दीवार पर टॉग दिया गया जहॉ आने जाने वालों की नजरें हमेशा उस पर पड़ें। वहीं एक जासूस भी लगा दिया गया जो हर उस आदमी पर नजर रखता था जिसने उसके बारे में कुछ भी कहा। ऐसे आदमी को राजकुमारी के पास लाने के लिये कहा गया।

एक दिन वह डाकू उस तस्वीर के पास से गुजरा और बोला — "अरे यह तस्वीर तो उस लड़की की है। वह कैसे भाग गयी और फिर कैसे मार दी गयी।" यह सुन कर जासूस ने उसे पकड़ लिया और राजकुमारी के पास ले गया। राजकुमारी ने उसे जेल में डलवा दिया।

दूसरे समय राजकुमार का नौकर उधर से गुजरा तो उसके मुँह से निकला — "ओह राजकुमार तुम्हें तो अपने साथ ले कर चला गया और मुझे जंगल में मरने के लिये छोड़ गया। पर तुम मरीं कैसे।" जैसे ही उसने यह कहा जासूस उसको भी पकड़ कर राजकुमारी के पास ले गया जिसको राजकुमारी ने अपनी सेना का सेनापति बना दिया।

इसके बाद सुनार उधर से गुजरा तो वह बोला — "ओह तो तुम ही वह लड़की हो जिसने मुझे धोखा दिया था। अच्छा हुआ जो तुम मर गयीं।" यह सुन कर जासूस उसको भी पकड़ कर राजकुमारी के पास ले गया जिसने उसको जेल में डलवा दिया।

उसके बाद वे बूढ़े और बुढ़िया आये जो उसके ऊपर इतने दयालु थे कि जिनके घर में उसने खाना खाया और रात को रही।

जब उन्होंने वह तस्वीर देखी तो उन्होंने भी उसको पहचान लिया और उसको देखते ही रो पड़े। उनको भी राजकुमारी के पास ले जाया गया। उनको उसने अपने महल में ही रख लिया और हुक्म दिया कि उनकी हर जरूरत का पूरा ख्याल रखा जाये।

आखीर में राजकुमार ने उस तस्वीर को देखा तो वह तो उसको देखते ही बेहोश हो गया। उसको उसी हालत में राजकुमारी के पास ले जाया गया।

जब वह होश में आया तो उसने अपने आपको राजकुमारी के सामने पाया। राजकुमारी ने उससे उसका हाल पूछा और उससे अपने महल में ही रहने के लिये कहा। यह देख कर सबको बड़ा आश्चर्य हुआ कि कुछ ही दिनों में उसने उस आदमी को अपना बड़ा वज़ीर बना लिया।

यह सब कुछ दिन तक तो चलता रहा पर फिर राजकुमारी से और ज़्यादा सहन नहीं हो सका। उसने अपना भेद राजकुमार पर खोल दिया। राजकुमार तो यह देख सुन कर बेहद खुश हुआ कि राजा और कोई नहीं उसकी अपनी पत्नी थी।

फिर एक अच्छा सा मौका देख कर राजकुमारी ने जनता को अपनी असलियत बता दी कि वह कौन थी और उनसे प्रार्थना की वह उसके पति को अपना राजा बना लें जिसे लोगों ने तुरन्त ही स्वीकार कर लिया सो राजकुमार वहॉ का राजा बन कर वहॉ राज करने लगा।

राजकुमार और राजकुमारी बहुत दिनों तक हॅसी खुशी जिये। उनके कई बच्चे हुए। वे दोनों बहुत बड़ी उम्र तक जिये और जब वे मरे तो लोग उनके लिये बहुत दुखी हुए।

50 होशियार तोता[31]

एक फ़कीर के पास एक बहुत ही बातूनी तोता था। वह उसके लिये बहुत कीमती था और वह उसे बहुत प्यार करता था।

एक दिन फ़कीर की तबियत कुछ ठीक नहीं थी तो उसने तोते से कहा — "तुम मुझे कोई खबर नहीं सुनाते तुम तो मुझे कुछ भी नहीं सुनाते।"

तोता बोला — "ठीक है मैं सुनाता हूँ। अब तक मैं ऐसा करने से डर रहा था कि कहीं ऐसा न हो कि तुम मेरे मुँह से कुछ ऐसी बात सुन लो जो तुम्हें सुनने में अच्छी न लगें।"

फ़कीर बोला — "उसकी तुम चिन्ता न करो तुम मुझे सब बता दो जो तुम्हें कहना हो।"

अगली सुबह फ़कीर को किसी दूसरे गाँव जाना था तो वहाँ जाने से पहले उसने अपनी पत्नी से कहा कि उस दिन उसके लिये वह एक मुर्गा पकाये जिसमें से आधा वह खा ले और बाकी आधा गर्म करके उसके लिये रखा रहने दे।

पत्नी ने उसके कहे अनुसार मुर्गा पकाया तो पर उसने वह सारा मुर्गा खा लिया। उसको बहुत ज़ोर की भूख लगी थी और वह मुर्गा भी इतना स्वादिष्ट बना था कि वह अपने आपको उसे पूरा खाने से

---

[31] The Clever Parrot (Tale No 50)

रोक ही नहीं सकी। फ़कीर जब शाम को घर लौटा तो उसने उससे पूछा कि उसका मुर्गा कहॉ है तो उसने कह दिया कि वह तो बिल्ली खा गयी।

फकीर बोला — "अच्छा। तब तो कुछ नहीं किया जा सकता। तुम मुझे कुछ और खाने को दे दो क्योंकि मुझे बहुत भूख लगी है। मैं जबसे घर छोड़ कर गया हूॅ तबसे मैंने कुछ नहीं खाया है।" पत्नी खाना बनाने चली गयी।

जब वह खाना बना रही थी तो वह तोते के पास गया और बोला — "ओ मेरे प्यारे तोते बता आज की क्या नयी खबर है।"

तोता बोला — "तुम्हारी पत्नी ने तुमसे झूठ बोला है। मुर्गे को बिल्ली ने नहीं खाया बल्कि वह खुद खा गयी है। मैंने खुद उसको सारा मुर्गा खाते देखा है।"

जाहिर है पत्नी ने तोते के इस कहने को सरासर झूठ बताया पर फ़कीर ने घर में शान्ति बनाये रखने के लिये पत्नी की बात पर विश्वास करने का बहाना बनाया।

अब यह भी साफ था कि पत्नी ऐसी चिड़िया को अपने घर में रखने के बिल्कुल पक्ष में नहीं थी। वह उससे बिल्कुल भी खुश नहीं थी क्योंकि ऐसा करने से उसकी पोल खुलती थी।

ऐसा नहीं था कि वह किसी और आदमी को अपने घर बुलाती थी या चोर थी पर अगर वह कोई भी काम पति से छिपा कर करना चाहती तो वह उस चिड़िया के जाने बिना नहीं कर सकती थी और

वह चिड़िया उसके पति को उसकी हर बात की खबर देती रहती थी।

सो एक दिन उसने अपने पति से कहा — “अच्छा हो अगर हम लोग अलग हो जायें तो। ऐसा लगता है कि यह तोता ही अब तुम्हारे लिये सब कुछ है। तुम्हें मुझसे ज़्यादा अब उसके ऊपर विश्वास है। तुम मुझसे ज़्यादा उससे बात करना पसन्द करते हो।

मुझसे अब यह और सहन नहीं होता। या तो तुम मुझे बाहर निकाल दो या फिर इस तोते को बाहर निकाल दो क्योंकि हम तीनों अब एक छत के नीचे शान्ति से नहीं रह सकते।”

फ़कीर अपनी पत्नी को बेहद प्यार करता था। जब उसने अपनी पत्नी के मुॅह से यह सब सुना तो वह बहुत दुखी हुआ। उसने अपनी पत्नी से वायदा किया कि वह तोते को बेच देगा।

अगली सुबह वह अपने घोड़ी पर चढ़ा और तोते को बेचने के लिये चला तो रास्ते में तोते ने कहा — “ओ मेरे मालिक सुनो तुम मुझे किसी ऐसे आदमी को मत बेचना जो तुम्हें मेरा कहा हुआ पैसा न दे।

फ़कीर बोला — “ठीक है। मैं समझ गया।”

चलते चलते वे लोग समुद्र के किनारे तक चले गये जो उसके घर से बहुत दूर था वहॉ उन्होंने रात बिताने की सोची।

आधी रात हो गयी फ़कीर सो नहीं सका। उसको नींद ही नहीं आ रही थी। उसने तोते से कहा — “मैं बहुत थक गया हॅू मुझे नींद

नहीं आ रही है। मुझे डर है कि तुम और मेरी घोड़ी दोनों मेरे सोने का फायदा उठा कर यहॉ से भाग जाओगे।"

तोता बोला — "कभी नहीं। तुम क्या हमें इतना बेवफा समझते हो कि हम तुम्हें इस तरह का धोखा देंगे। हम पर विश्वास रखो। घोड़ी को आजादी से घूमने दो। मुझे भी मेरे पिंजरे से निकाल दो। मैं तुम्हें छोड़ कर कहीं नहीं जाऊॅगा। मैं पास के एक पेड़ पर जा कर बैठ जाऊॅगा और तुम्हारी और तुम्हारी घोड़ी दोनों की रखवाली करूॅगा।"

यह विश्वास करते हुए कि वह तोता उसका वफादार था फ़कीर ने उसकी बात मान ली। उसने घोड़ी को खोल दिया और तोते को पिंजरा खोल कर बाहर निकाल दिया। फिर वह सोने के लिये लेट गया। तोता उनकी रखवाली करता रहा।

रात को उसने पानी में से एक घोड़े जैसा जानवर[32] निकलते देखा और देखा कि वह घोड़ी पर कूदा और फिर वापस पानी में चला गया।

फ़कीर की ऑख सुबह जल्दी ही खुल गयी। उसने अपने तोते को बुलाया और उसको पिंजरे में बन्द किया। तोते ने उसको रात में हुई उस अजीब सी घटना के बारे में फकीर को कुछ नहीं बताया। फ़कीर ने अपनी घोड़ी ली और समुद्र के किनारे किनारे चल दिया।

[32] Here it means River Horse.

चलते चलते वह एक बहुत ही खुशहाल शहर में आ गया जहॉ वह वहॉ के कोतवाल से मिला। कोतवाल ने उसको सलाम करने के बाद उससे पूछा कि क्या वह अपना तोता बेचना चाहता था। फ़कीर ने कहा कि हॉ वह उसे बेचना चाहता था।

तोता बोला — "पर तुम मुझे नहीं खरीद सकते।"

कोतवाल के मुॅह से निकला — "अरे वाह यह तो बड़ा अच्छा तोता है। मैं तुम्हारे आने की खबर वज़ीर को देता हूॅ क्योंकि वह ऐसा तोता खरीदने के लिये बहुत दिनों से तलाश में हैं। चलो तुम मेरे साथ जल्दी चलो कहीं ऐसा न हो कि वह दरबार चले जायें।"

सो वे तीनों वजीर के घर गये। वजीर ने कोतवाल को उसके इस तोते वाले को उसके घर लाने के लिये बहुत धन्यवाद दिया फिर बोला — "पर मैं ऐसी चिड़िया खुद नहीं खरीद सकता जब तक कि मैं यह न जान लूॅ कि राजा को ऐसी चिड़िया की जरूरत है या नहीं। एक बार मैंने उनको ऐसी चिड़िया के बारे बात करते सुना था।"

सो वे सब राजा के महल गये। जब राजा ने उनके आने का उद्देश्य सुना तो उन्होंने पूछा कि इस चिड़िया का दाम क्या है।

जवाब तोते ने दिया — "दस हजार रुपये।"

राजा चिड़िया की साफ आवाज सुन कर इतना खुश हुआ कि उसने तुरन्त ही फकीर को **10** हजार रुपये दे कर वह चिड़िया खरीद ली। इतना सारा पैसा पा कर फ़कीर बहुत खुश हुआ। तोते ने

अच्छा मौका देख कर फ़कीर से राजा को यह वायदा करा दिया कि वह अपनी घोड़ी का अगला बच्चा राजा को दे देगा।

इसके बाद तो तोता बड़ी शान से महल में रहने लगा। वह एक बहुत ही सुन्दर चाँदी के पिंजरे में रहता था और चाँदी के बर्तनों में ही खाना खाता था और पानी पीता था। यह पिंजरा राजा के जनानखाने में लटका रहता था।

बहुत जल्दी ही तोता सबका प्यारा हो गया। और राजा की रानियाँ तो उससे हमेशा ही खेलती रहती उसे प्यार से थपथपाती रहतीं और बात करती रहती थीं।

इस तरह सबके दिन बड़े अच्छे और हँसी खुशी गुजर रहे थे कि एक दिन राजा की पत्नियाँ तोते के पास आयीं और उससे पूछा कि उनमें सबसे सुन्दर कौन है। तोते को कोई शक नहीं हुआ उसने उस बात को हँसी में लेते हुए कहा कि वे सब सुन्दर थीं सिवाय एक के।

उसने उस एक का नाम भी बताया। इत्तफाक से वह राजा की सबसे प्यारी पत्नी थी। उसने कहा कि उसका चेहरा बहुत भद्दा था जिसको सुन कर वह बेहोश हो गयी।

जैसे ही वह होश में आयी उसने कहा कि राजा को बुलाओ सो राजा को बुलाया गया। रानी बोली — "मैं बहुत बीमार हूँ। तुम मुझे इस तोते का माँस खाने के लिये दो नहीं तो मैं मर जाऊँगी।"

राजा ने जब यह सुना तो वह बहुत दुखी हुआ पर क्योंकि वह अपनी पत्नी को बहुत प्यार करता था उसने तोते को मारने का हुक्म दे दिया।

बेचारी चिड़िया बोली — "राजा साहब मेहरबानी कर के मुझे छह दिन की मोहलत दीजिये कि मैं जहाँ चाहूँ वहाँ जा सकूँ। उसके बाद में वायदा करता हूँ मैं अपनी पूरी वफादारी के साथ आपके पास लौट आऊँगा फिर आप जो चाहें मेरे साथ कीजियेगा।"

राजा ने उसको इजाज़त दे दी और चेतावनी दी कि वह छह दिन के बाद जरूर वापस आ जाये। तोते को आजाद कर दिया गया और वह तुरन्त ही उड़ गया। वह अभी वहाँ से बहुत दूर नहीं गया था कि वह **12** हजार तोतों से मिला। वे सब एक ही दिशा में कहीं जा रहे थे।

राजा का तोता चिल्ला कर बोला — "रुक जाओ रुक जाओ। तुम सब लोग कहाँ जा रहे हो।"

वे बोले — "हम सब एक ऐसे देश जा रहे हैं जहाँ एक राजकुमारी हमें मोती और मिठाई खाने के लिये देती है। तुम अगर हमारे साथ चलना चाहो तो तुम भी हमारे साथ चलो। तुम भी वहाँ मोती और मिठाई खाना।"

राजा का तोता राजी हो गया और वह भी उनके साथ उस राजकुमारी के देश चल दिया। वे जल्दी ही उस टापू पर पहुँच गये और वहाँ उनका उसी तरह से स्वागत हुआ जैसा कि उन **12** हजार

तोतों ने उससे कहा था। जब सब खा पी चुके तो सारे तोते वहाँ से वापस आने के लिये उड़े पर राजा का तोता बीमार पड़ गया। वह जमीन पर लेट गया।

उसको वहाँ लेटा देख कर राजकुमारी बाहर आयी और उससे पूछा — "ओ सुन्दर चिड़िया तुम्हें क्या हुआ। क्या तुम बीमार हो। मेरे साथ आओ। मैं तुम्हारी देखभाल करूँगी। तुम जल्दी ही ठीक हो जाओगे।"

सो राजकुमारी उसको अपने महल में ले गयी। वहाँ ले जा कर उसने उसके लिये एक छोटा सा घोंसला बनाया और खुद उसकी देखभाल की। उसने उसको और मोती और और मिठाई खाने के लिये दी। मगर तोते को जैसे इस किसी चीज़ की परवाह ही नहीं थी।

तोता बोला — "राजकुमारी जी आप तो बहुत दयालु और बहुत अच्छी हैं। आप हमें मोती और मिठाई खाने के लिये देती हैं। मगर मेरे मालिक राजा साहब जिनका राज्य उत्तर से दक्षिण तक और पूर्व से पश्चिम तक फैला हुआ है वह इस टापू पर भी है हालाँकि यह बात आपको मालूम नहीं है।

वह तो मोती और मिठाई अपने मुर्गों को खिलाते हैं। काश आप उनको जान पातीं। आप उनसे शादी कर लीजिये क्योंकि वह आपके लायक हैं और आप उनके लायक हैं राजकुमारी जी।"

तोते की बातें सुन कर राजकुमारी बहुत खुश हुई। वह दौड़ी दौड़ी अपने पिता के पास गयी और उनसे प्रार्थना की वह ऐसे राजा से एक बार मिलना चाहती है और अगर मुमकिन हो तो शादी करना चाहती है।

राजा बोला — "मैं तुम्हें इस तरह वहॉ नहीं जाने दे सकता पर हॉ मैं उस राजा को एक चिट्ठी लिखूँगा और उसे इस तोते के हाथ भिजवा दूँगा। मैं उस राजा से कहूँगा कि वह एक निश्चित दिन शादी के लिये यहॉ आ जायें।

अगर यह चिड़िया सच कहती है तो वह राजा उस दिन शादी के लिये जरूर यहॉ आयेंगे। तुम चिन्ता मत करो मैं तुम्हारी शादी उस राजा से कर दूँगा।"

राजकुमारी राजी हो गयी और तोते को इस मजमून की एक चिट्ठी लिख कर राजा के पास भिजवा दी गयी। तोता पॉचवें दिन की शाम को राजा के पास पहुँचा और वह चिट्ठी उसको दी।

राजा बोला — "तुम ठीक समय से आ पहुँचे।"

तोता ज़ोर से बोला — "राजा साहब मुझे मारना नहीं। मैंने आपका या आपके परिवार के किसी का कोई बुरा नहीं किया। आपकी रानियों ने मुझसे पूछा कि मैं उनके बारे में क्या सोचता हूँ सो मैंने उसका जवाब उन्हें दे दिया। मैंने कोई झूठ नहीं बोला राजा साहब।

मुझे यकीन हे कि आप अपनी पत्नी की किसी भी छोटी सी सनक के लिये मुझे नहीं मारेंगे। वह तो नहीं मरेगी जबकि मैं ज़िन्दा रहूँगा। मेरे मरने से उनको ज़िन्दगी नहीं मिलेगी। और अगर ऐसा है भी तो मैं आपको उनसे भी सुन्दर पत्नी दिलवा दूँगा।

यह देखिये मैं दुनियाँ की सबसे सुन्दर राजकुमारियों में से एक राजकुमारी के पिता की यह चिट्ठी ले कर आया हूँ जिसमें उनके लिये बस आपकी हाँ की जरूरत है।"

राजा बोला — "तुम बहुत न्यायपूर्वक बोल रहे हो और तुमने हमारे साथ हमेशा ईमानदारी का व्यवहार किया है इसलिये मैं तुम्हें बिल्कुल नहीं मारूँगा। मैं तुम्हारी इस प्रार्थना को सुनूँगा और इस राजकुमारी से शादी करूँगा। पर मैं उस टापू पर पहुचूँगा कैसे जहाँ ये लोग रहते हैं।"

तोता बोला — "आप चिन्ता न करें। मैंने यह सलाह आपको बिना सोचे विचारे नहीं दी है। अगर आप उस फ़कीर को हुक्म करें जिसने मुझे आपको बेचा था तो वह अपनी घोड़ी का बच्चा आपको दे देगा। उस पर बैठ कर आप इस टापू पर आसानी से जा सकेंगे।"

राजा बोला "अच्छा ठीक है।" और फकीर से उसकी घोड़ी का बच्चा भेजने के लिये कहा।

अब फकीर को तो उस घोड़ी के बच्चे के लक्षणों का पता नहीं था सो उसने उसे बिना किसी ना नुकुर के वह बच्चा राजा साहब को

भेज दिया। उस बच्चे से उसे और क्या चाहिये था वह तो अब बहुत अमीर हो गया था और वह भी एक छोटी सी चीज़ के बदले में। और वह भी उस आदमी को दे कर जिसने पहले ही उसे कितनी अच्छी तरह से अमीर बना दिया था।

बच्चे के आने पर राजा उस घोड़े पर चढ़े और तोते को साथ ले कर उस टापू की तरफ चल पड़े जिस पर वह राजकुमारी रहती थी। जब राजा समुद्र के किनारे पहुँचे तो इतना बड़ा समुद्र देख कर तो वह बहुत ही नाउम्मीद हो गये और वापस जाने लगे कि वह इतना बड़ा समुद्र कैसे पार करेंगे।

उन्होंने तोते से पूछा — "इतना बड़ा समुद्र हम कैसे पार करेंगे?"

तोता बोला — "इस समुद्र को पार करने में तो कोई परेशानी ही नहीं है। आपका यह घोड़े का बच्चा कोई साधारण घोड़ा नहीं है। इस पर सवार हो कर ही आप इस समुद्र को पार कर सकते हैं।

आप डरिये नहीं बस इसको पानी में हॉक दीजिये। यह पानी में भी उतनी ही आसानी से चला जायेगा जितनी आसानी से यह जमीन पर चलता है।"

राजा ने तोते की बात का विश्वास करके उस घोड़े को पानी में हॉक दिया और वह जल्दी ही उस टापू पर पहुँच गया।

टापू के राजा ने उसका दिल से स्वागत किया और राजकुमारी तो उसको देख कर बहुत खुश हुई। राजा भी राजकुमारी को देख

कर बहुत खुश हुआ और देखते ही उसे प्यार करने लगा। राजा ने राजकुमारी के पिता से कहा कि क्या वह अपनी बेटी की शादी उससे जल्दी से जल्दी कर देगा।

अब क्योंकि सब के मन में एक ही बात थी तो शादी भी जल्दी ही हो गयी। जैसे ही सारी रस्में खत्म हुईं तो राजा और राजकुमारी दोनों अपने घोड़े पर सवार अपने घर वापस चल दिये। तोता उनके आगे आगे उनको रास्ता दिखाता हुआ उड़ा।

वे उसी रास्ते से वापस नहीं गये जिस रास्ते से वे वहॉ आये थे। इस जाने वाले रास्ते में एक ऐसा टापू पड़ता था जिस पर कोई नहीं रहता था। उस टापू को देख कर राजा बोला कि वह बहुत थक गया था और थोड़ी देर वहॉ आराम करना चाहता था।

तोता बोला — "नहीं राजा साहब यहॉ नहीं। यहॉ बहुत खतरा है।"

राजा बोला — "कोई बात नहीं पर मैं अब आराम किये बिना आगे नहीं जा सकता। मैं यहॉ थोड़ा सो लूँ तब यहॉ से आगे चलेंगे।"

सो राजा और उसकी पत्नी दोनों उस टापू पर उतर गये और सो गये। तोता वहीं एक पेड़ पर बैठ गया और उनका पहरा देने लगा। एक घंटे के अन्दर ही एक पानी का जहाज़ उधर से गुजरा। उस जहाज़ के कप्तान ने देखा कि उस टापू पर दो आदमी सो रहे थे तो वह उनको देखने के लिये उस टापू पर उतर गया।

रानी की सुन्दरता देख कर वह उस पर मोहित हो गया और उसको उठा कर वह अपने जहाज़ पर ले गया। वह घोड़े के बच्चे को भी साथ ले गया बस राजा को वहीं अकेला सोता छोड़ गया।

तोता पेड़ पर बैठा बैठा यह सब देख रहा था पर वह राजा को को इस बात से सावधान करने से डर रहा था ताकि कहीं ऐसा न हो कि वह कप्तान उसे गोली मार दे। इस तरह वह जहाज़, रानी और घोड़े को ले कर चलता बना।

जब वे चले गये तो तोते ने राजा को उठाया। राजा उठते ही बोला — "ओह मेरे तोते काश मैंने तुम्हारी सुनी होती और मैं यहाँ आराम करने के लिये न रुका होता। अब मैं क्या करूँ। यहाँ तो मेरे लिये खाना भी नहीं है। यहाँ तो कोई ऐसा जानवर भी नहीं है जो मुझे इस समुद्र के पार ले जाये। तुम्हीं बताओ मेरे तोते कि मैं अब क्या करूँ। तुम्हीं मेरी कुछ सहायता करो।"

तोता बोला — "राजा साहब अब आपके लिये बस एक ही रास्ता बचा है। इस पेड़ को काट कर इसका तना पानी में फेंक दो और फिर इस तने पर चढ़ कर भगवान जिधर आपको ले जाना चाहे आप उधर ही चले जाऐं। इसके अलावा मैं और कोई रास्ता नहीं जानता।"

यह सुन कर राजा ने पेड़ काटा और उसको काट कर उसका तना पानी में डाल कर उस पर बैठ गया और अपने आपको भगवान के हवाले कर दिया।

भगवान की कृपा से उसी समय एक गरुड़[33] उड़ता हुआ उधर आया जो उस समय वहीं पास में उड़ रहा था। उसने उस पेड़ को समुद्र में तैरता हुआ देखा तो वह उसको अपनी चोंच में दबा कर ले उड़ा। वह उसको ले कर एक जंगल में चला गया और वहाँ जा कर उसे नीचे गिरा दिया। इस तरह राजा बच गया।

तोता भी उसके पीछे पीछे उड़ता आ रहा था। वह राजा से बोला — "राजा साहब अब आप यहीं ठहरिये। यहाँ से कहीं जाना नहीं। मैं जाता हूँ और रानी जी और घोड़े की खोज करता हूँ और फिर वापस आता हूँ।"

राजा ने उससे वायदा किया कि वह वहीं रहेगा कहीं नहीं जायेगा और तोता रानी और घोड़े को ढूँढने निकल गया। काफी इधर उधर घूमने के बाद उसको रानी मिल गयी। कप्तान उसको अपने घर ले गया था और वहाँ वह उसके सईस[34] की हैसियत से रह रही थी।

जैसे ही उसने तोते को देखा तो वह खुशी से चिल्ला पड़ी — "ओ तोते तुम कहाँ थे और राजा साहब कहाँ हैं। वह ज़िन्दा तो हैं न।"

[33] Translated for the word "Eagle". See its picture above.

[34] Whoever drives and takes care of the horse.

तोते ने उसे सारा हाल बताया तो राजकुमारी बोली — “तोते तुम यहाँ से तुरन्त ही चले जाओ और जा कर उन्हें मेरा सारा हाल बताओ। ये जवाहरात साथ में लेते जाओ शायद उन्हें खाना खरीदने के लिये जरूरत पड़े।

उनसे यहाँ जल्दी आने के लिये कहना और कहना कि वह यहाँ आ कर इस कप्तान के घर में सईस की नौकरी कर लें। तब हम यहाँ से घोड़े पर बच निकलने की कोशिश कर सकेंगे। एक बार हम उस घोड़े पर बैठ गये तो फिर चाहे हम जमीन पर हों या समुद्र में हमें कोई नहीं रोक सकेगा।”

यह सुन कर तोता वहाँ से जल्दी से जल्दी उड़ गया और राजा के पास पहुँच कर उसको रानी का सारा हाल बताया। उसने उसको सलाह दी कि वह जल्दी से जल्दी रानी के पास चले और उसको उस कप्तान के चंगुल से छुड़ाये।

राजा तैयार हो गया और कुछ ही दिनों में रानी के पास पहुँच गया। वे दोनों एक दूसरे को देख कर बहुत खुश हुए। वे लोग तो एक दूसरे से मिलने की आशा ही छोड़ चुके थे पर भगवान उन पर बहुत दयालु था जो उसने उन्हें फिर से मिला दिया।

उसी दिन शाम को राजा और रानी दोनों अपने घोड़े के बच्चे पर चढ़े और शहर से बाहर चल दिये। उनका तोता उन्हें रास्ता दिखा रहा था। जल्दी ही वे राजा के देश पहुँच गये। वहाँ उनके लोगों ने उनका दिल से स्वागत किया।

उसके बाद राजा और रानी अपने आखिरी दिनों तक खुशी खुशी रहे। तोते को उन्होंने अपना खास वजीर बना लिया। उसने उनके राज्य की खुशहाली को बढ़ाने में उनका बहुत साथ दिया।

51 असन्तुष्ट आदमी ठीक हुआ[35]

एक दिन एक बहुत ही असन्तुष्ट आदमी एक अखरोट के पेड़ के नीचे बैठा हुआ था। पास में ही उसके काशीफल की बेल पर एक काशीफल[36] लगा हुआ था।

उनको देख कर उसके मुँह से निकला — "हे भगवान तुम भी कितनी बेवकूफी के काम करते हो। ये छोटे छोटे अखरोट तो तुमने इतने बड़े पेड़ पर लगा दिये और ये इतने बड़े बड़े काशीफल तुमने इतनी छोटी बेल पर लगा दिये।

अब अगर ये छोटे छोटे अखरोट इस बेल पर लगे होते और ये बड़े बड़े काशीफल इतने बड़े पेड़ पर लगे होते तब मैं तुम्हारी अक्लमन्दी की तारीफ करता।"

वह यह सब कह ही रहा था कि ऊपर से एक अखरोट टूट कर उसकी पगड़ी पर गिर पड़ा जिससे वह कुछ चौंक सा गया।

तब उसकी समझ में आया वह बोला — "नहीं भगवान तुम ठीक हो। अगर इस अखरोट की जगह यह काशीफल होता और

---

[35] The Malecontent Cured (Tale No 51)

[36] Translated for the words "Walnut" and "Pumpkin". See their pictures above – walnut is up and pumpkin below it.

वह इतने ऊँचे से मेरे सिर पर गिरता तो मेरा तो सिर ही फूट गया होता। तुमने अच्छा किया भगवान जो अखरोट इतने बड़े पेड़ पर लगाये और ये काशीफल यहाँ इस बेल पर लगा दिये। तुम वाकई बहुत अक्लमन्द और महान हो।”

52 बेवकूफ किसान[37]

पहली कहानी

एक दिन एक किसान अपने सारे दिन के खाने के लिये दस चपाती[38] अपनी लुंगी[39] में बॉध कर अपने काम पर निकला।

वह अभी थोड़ी ही दूर गया था कि उसको भूख लग आयी सो वह उन्हें खाने के लिये बैठ गया। वह पहले एक फिर दो फिर तीन चार चपाती खा गया पर उसका पेट नहीं भरा। फिर उसने पॉचवीं छठी सातवीं और आठवीं चपाती खायी पर फिर भी वह भूखा ही रहा। सो फिर वह उठा और अपने काम पर चल दिया।

उसने सोचा "मुझे ऐसा नहीं करना चाहिये था। काम शुरू करने से पहले ही मुझे सारी चपातियॉ नहीं खा लेनी चाहिये थीं। अगर मैंने ऐसा किया तो फिर मैं सारे दिन क्या खाऊॅगा। और मेरा पेट तो अभी भी नहीं भरा।"

पर ये सब बातें तो अब उसके लिये बेकार थीं। उसको भूख बहुत ज़ोर की लगी थी। वह बाकी की बची दो चपाती भी खाने

---

[37] The Stupid Peasant (Tale No 52)

[38] Chapati is the Indian unleaven flat bread made of any kind of flour but normally of wheat flour.

[39] Translated for the word "Loincloth". See its picture above. This is full Lungi but sometimes it may be worn upto the knees also. This is very common in Muslims and in South India.

बैठ गया। उन दो चपातियों को खाने के बाद कहीं जा कर उसको शान्ति मिली। अब वह सन्तुष्ट था।

उसने सोचा "मैं भी कितना बेवकूफ था अगर मैंने ये दो आखिरी चपाती पहले ही खा ली होतीं तो मेरी भूख पहले ही मिट जाती और मेरे पास सारे दिन के लिये आठ चपाती बच रहतीं। अब तो मैं सारा दिन भूखा ही रहूँगा।"

दूसरी कहानी

एक बार 10 किसान सड़क के किनारे खड़े हो कर रो रहे थे। उनको लग रहा था कि उनमें से एक रास्ते में कहीं खो गया था। क्योंकि उन्होंने जब भी अपने आपको गिना तो वे नौ ही निकले।

पास से एक आदमी गुजर रहा था तो उसने उन सबको रोते हुए देखा तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने उनसे पूछा कि वे क्यों रो रहे थे। क्या मामला था।

किसान बोले — "जनाब हम जब गॉव से चले थे तो हम लोग 10 थे पर अब हमने गिना तो हम केवल नौ हैं।"

आदमी ने उनको देखा तो उनकी बेवकूफी पर मन ही मन में हॅसा। उसने उनसे कहा कि वह उनके 10वें साथी को वापस ला देगा। यह सुन कर वे बहुत खुश हुए।

उसने उन सबको अपनी अपनी टोपी उतार कर एक जगह रखने के लिये कहा। उन्होंने ऐसा ही किया। फिर उसने उनको

गिनने के लिये कहा तो उन्होंने उनको गिना तो वे **10** थे। यह देख कर वे बहुत खुश हुए कि वे लोग जितने गाँव से चले थे उतने ही थे।

असल में जब भी उन्होंने अपने साथी गिने तब हर आदमी अपने आपको गिनना भूल गया था। पर यह उनको कभी पता नहीं चला कि उस आदमी के गिनने से उनका खोया हुआ साथी उनके साथ कहाँ से आ गया था।

तीसरी कहानी

एक बार एक किसान एक बनिये की दूकान पर एक पैसे की काली मिर्च खरीदने गया। बनिये ने उसको मुट्ठी भर कर काली मिर्च दे दीं। किसान ने यह सोच कर कि ये उसने केवल चखने के लिये दी थीं उनको उसने अपने मुँह में डाल लिया।

उनको खा कर उसने अपना थैले का मुँह खोल कर वह उस बनिये से बोला — "अरे ये तो बहुत तेज़ मिर्च है। कोई बात नहीं तुम मुझे एक पैसे की काली मिर्च दे दो।

चौथी कहानी

एक किसान रोज भगवान की प्रार्थना करता था कि वह उसको एक घोड़ा दे दे। एक दिन वह घर से बाहर निकलते हुए चिल्लाया — "हे भगवान मुझे एक घोड़ा दे दे।"

उसी समय एक पठान अपनी घोड़ी पर सवार हो कर उधर से निकला। इत्तफाक से जब वह घोड़ी उस किसान के पास तक आयी तो उसने एक बच्चे को जन्म दिया।

अब जन्म लेते ही तो वह बच्चा अपनी मॉ के पीछे नहीं चल सका सो पठान ने किसान से कहा कि वह उसके बच्चे को ले कर उसके पीछे पीछे उसके घर तक आये।

जब तक वह उस पठान के घर तक पहुॅचा वह इतना थक चुका था कि उसने अपना मन बदल दिया। वह चिल्लाया — “हे भगवान तेरा लाख लाख धन्यवाद है कि तूने मुझे यह घोड़े का बच्चा दे दिया पर मुझे माफ करना अगर मैं इसको वापस कर दूॅ तो। मुझे अब घोड़ा नहीं चाहिये।”

ऐसा कह कर उसने घोड़े को पठान के घर के दरवाजे पर छोड़ा और वहॉ से चला गया।

पॉचवीं कहानी

अक्टूबर का महीना था एक किसान अपनी कपास बेचने के लिये शहर गया। वह पहली बार शहर जा रहा था। जब वह बाजार से हो कर गुजर रहा था तो उसने देखा कि सुनार अपने सोने के गहनों को बार बार आग में रख रहा था और फिर उसमें से निकाल कर बेच देता था।

उसने सोचा कि यह तो जरूर ही कोई होशियारी की बात होगी। मुझे भी ऐसा ही करना चाहिये। मैं इतनी सारी कपास को ले कर सारे में क्यों घूमूँ जबकि मैं इस तरह से अपने खरीदारों को आकर्षित कर सकता हूँ।

सो वह एक लोहार की दूकान पर गया और अपनी टोकरी भरी कपास उसकी भट्टी में डाल दी। वह बेचारा उसमें से कुछ निकलने का इन्तजार करता रहा पर उसमें से तो कुछ भी नहीं निकला। उसमें से कुछ निकलना तो दूर उसकी कपास भी जल कर राख हो गयी।

छठी कहानी

श्रीनगर में एक कहावत है कि "रुपया रुपये को खींचता है।"[40] एक बार एक बेवकूफ किसान ने यह कहावत कहीं सुन ली उसने उसका शाब्दिक मतलब लिया और एक उधार देने वाले की दूकान पर पहुँचा जहाँ उसने चाँदी और ताँबे के सिक्कों के दो तीन ढेर देखे।

उसने अपनी जेब से एक रुपये का एक सिक्का निकाला और उसको एक दीवार के सहारे रख कर बोला — "आजा मेरे रुपये के पास आजा।"

[40] In English it is called "Money brings money"

पर उसने वह रुपया दीवार पर इतनी दूर रखा था कि वह लुढ़क कर दूकान में गिर गया और जा कर दूकान वाले के रुपयों के ढेर में जा कर मिल गया। वह बेचारा रोता हुआ घर चला आया। दूकान वाले के रुपयों ने किसान के रुपये को खींच लिया था।

कुछ समय बाद वह उस आदमी से मिला जिससे उसने यह कहावत सुनी थी। उसने उससे कहा कि उसने उसको झूठ साबित कर दिया था।

पर वह आदमी बोला — "नहीं बिल्कुल नहीं। मैंने तुमसे बिल्कुल झूठ नहीं कहा था सच ही कहा था। तुम्हारा रुपया उस दूकानदार के रुपयों में जा कर मिल गया। क्योंकि उसके रुपये ज़्यादा थे इसलिये उसके रुपयों में ज़्यादा ताकत थी इसलिये उन्होंने तुम्हारा रुपया खींच लिया।"

53 कर्म या धर्म[41]

एक बार की बात है कि एक ब्राह्मण अपने कोई बेटा न होने की वजह से बहुत दुखी रहता था। इस आशा में कि उसके एक बेटा हो जाये वह दिन रात परमेश्वर से प्रार्थना करता बहुत बार पुजारियों को दान देता मन्दिरों में दान देता।

आखिर परमेश्वर ने उसकी सुनी और उसके घर एक बेटा हुआ तो घर में बहुत खुशियाँ मनायी गयीं। पुजारियों को बहुत दान दिया गया। जब उसका बेटा 12 साल का हो गया तो उसको स्कूल भेजा गया।

इत्तफाक से इसके कुछ समय बाद ही वह ब्राह्मण मर गया। उसका बेटा भी बहुत बीमार पड़ गया। काफी दिनों तक वह ज़िन्दगी और मौत के बीच झूलता रहा। ब्राह्मण की बेचारी पत्नी का बहुत बुरा हाल था। पत्नी का अभी अभी तो अपना पति मरा था और अब उसका बेटा जाने को तैयार बैठा था।

वह बेचारी हमेशा भगवान से यही प्रार्थना करती रहती — “हे भगवान हम पर दया कर और मेरे बेटे को बचा।” भगवान ने एक दिन उसकी सुन ली।

---

[41] Karm Or Dharm (Tale No 53)

एक दिन एक जोगी उसके घर आया तो उसने कहा कि अगर वह उसके कहे अनुसार करेगी तो शायद उसका बेटा बच जाये। उसने उससे कहा कि वह मछली ले कर उसे पका ले और उसके सामने ला कर रख दे। उसने ऐसा ही किया। जब वह मछली पक गयी तो उसने उसे जोगी के सामने रख दिया।

जोगी उसे देख कर बोला — "हॉ यह ठीक है।" कह कर उसने उस मछली के तीन हिस्से किये। उसका एक हिस्सा तो उसने खुद खाया उसका दूसरा हिस्सा ब्राह्मणी को खाने के लिये दिया और तीसरे हिस्से के ऊपर कुछ मन्त्र पढ़ कर उसने बीमार बच्चे को खिलाने के लिये कहा। वह मछली खा कर बच्चा ठीक हो गया।

जब स्त्री ने देखा कि उसका बच्चा ठीक हो गया तो वह उस जोगी की बहुत कृतज्ञ हो गयी। वह जोगी के पैरों पर गिर पड़ी और उससे प्रार्थना की कि वह उसे कभी छोड़ कर न जाये।

वह बोली — "मेहरबानी कर के आप हमारे पास ही ठहरिये। हमारे पास थोड़ा ही है पर परमेश्वर की कृपा से और आपकी सहायता से बहुत कुछ हो जायेगा।"

जोगी बोला — "तुम चिन्ता न करो। तुम्हारे भविष्य में ऊॅच नीच तो है पर वह खुशहाल है।"

कुछ दिन बाद जोगी ने बच्चे की ऑखों में काजल[42] लगाया तो बच्चे के पंख उग आये और वह चिड़िया की तरह से उड़ने लगा।

---

[42] Translated for the word "Collyrium"

तब जोगी ने उससे कहा कि वह शाही खजाने जाये वहाँ खिड़की से हो कर उसके अन्दर घुसे और वहाँ से जितना पैसा हो सके ले आये। लड़का वहाँ गया और वहाँ से इतना पैसा ले आया जितना उसको अपनी सारी ज़िन्दगी के लिये जरूरी था।

जब राजा के नौकरों को यह पता चला कि राजा के खजाने में चोरी हो गयी है तो वे बहुत डरे। वे बहुत दुखी हो कर राजा के पास गये और जा कर उनको सब बताया। उन्होंने चोर को ढूँढने की बहुत कोशिश की पर वे चोर का पता नहीं लगा सके।

तब जोगी उनके पास गया और राजा का गुस्सा देख कर उसको विश्वास दिलाया कि चोर ढूँढने में वह उसकी सहायता करेगा।

फिर उसने राजा से एक खास जगह पर बड़ी सी आग जलाने के लिये कहा। यह जगह ब्राह्मण के घर के पास थी। राजा ने तुरन्त ही आग जलाने का हुक्म दिया और आग जला दी गयी।

आग की लपट और धुँआ देख कर लड़का आग के पास आ कर खड़ा हो गया। पर इस आग का धुँआ उसके लिये बहुत ज़्यादा था सो उसको आग से दूर हटना पड़ा और दूसरे देखने वालों की तरह वह भी अपनी ऑखें मलने लगा।

अफसोस इस मलने में उसने अपनी ऑखों का काजल पोंछ दिया और काजल के पुँछते ही उसके पंख चले गये जिससे उसे पहचान लिया गया।

तुरन्त ही जोगी चिल्ला कर राजा से बोला — “यह है चोर यह है चोर।” राजा ने उसको तुरन्त ही पकड़ लिया। लड़का और उसकी माँ को उस घर से निकाल दिया गया। अब वे घर घर भीख माँग कर अपना गुजारा करने लगे।

एक दिन एक बनिये को उनके ऊपर दया आ गयी। उसने लड़के को अपने यहाँ एक नौकरी दे दी। यह लड़का उस बनिये के घर अभी भी काम कर रहा था कि एक दिन उस देश के राजा ने अपनी दो सुन्दर बेटियों को बुला कर उनसे पूछा कि कर्म और धर्म में से कौन बड़ा है।

उसकी छोटी बेटी ने जवाब पहले दिया “कर्म” पर बड़ी बेटी बोली “धर्म”।[43] जब राजा ने अपनी बेटियों के ये जवाब सुने तो वह अपनी छोटी बेटी से बहुत गुस्सा हुआ और उसने उसकी शादी उस चोर लड़के से कर दी जो बनिये के घर काम कर रहा था। उसने कहा — “तुमने जो जवाब दिया अब उसका फल भुगतो।”

छोटी राजकुमारी के लिये यह बड़े दुख का समय था क्योंकि अव उसे दिन भर कातना पड़ता था और अपने और अपने पति की की मिली जुली थोड़ी से कमाई पर ज़िन्दा रहना पड़ता था।

पर उसको अपने कहे पर विश्वास था और उसको उम्मीद थी कि उनके अच्छे दिन जल्दी ही आयेंगे। वह रोज भगवान से प्रार्थना

---

[43] Karm means “Duty” especially prescribed by Ved and Dharm means “Destiny”.

करती और धैर्यपूर्वक इन्तजार करती पर यह उसके लिये काफी मुश्किल काम था।

आखिर उसके विश्वास और धैर्य ने काम किया। वहाँ पास में एक तालाब था जहाँ जो कोई भी जाता था वह अन्धा हो जाता था।[44] एक दिन बनिया उस ब्राह्मण लड़के से किसी छोटी सी बात पर बहुत नाराज हो गया और उसने उसे यह सोच कर उस तालाब से पानी लाने भेज दिया कि वहाँ जा कर वह अन्धा हो जायेगा।

लड़का पानी लाने चला गया। उसको उस तालाब की उस खासियत का कुछ भी पता नहीं था। सो जब वह उस तालाब के किनारे के पास पहुँचा तो उस तालाब में से एक आवाज आयी — "मेरे बच्चे मुझे तुझ पर दया आती है। तू यहाँ क्यों आया है। क्या तुझे यह नहीं पता कि जो कोई भी इस तालाब में से पानी लेता है वह अन्धा हो जाता है?"

लड़का बोला — "नहीं मुझे तो यह नहीं पता। मेरे मालिक ने मुझे यहाँ पानी लाने भेजा है।"

आवाज फिर बोली — "वह तो बहुत ही बेरहम आदमी है। लगता है कि वह तुझसे कुछ नाराज है। कोई बात नहीं मैं तुझे कोई नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा। तू अपना बर्तन पानी से भर और उसे अपने मालिक के पास ले जा।

---

[44] There is a spring sacred to the Goddess Kali in the middle of Srinagar city by Shah Hamadaan Ziyaarat. A big stone covers it. It is said that whosoever lifts this stone and looks into the spring becomes blind.

पर याद रखना कि तू फलॉ जगह से थोड़ी सी रेत ले कर अपने कपड़े में और बॉध लेना और ख्याल रखना कि उसे जब तक तू घर न पहुँच जाये तब तक उसे न खोलना।"

कह कर वह आवाज रुक गयी। लड़के ने अपना बर्तन उस तालाब के पानी से भरा थोड़ी सी रेत उस जगह से ले कर अपने कपड़े में बॉधी और अपने मालिक के पास चल दिया। जब वह उसकी दूकान पर पहुँचा तो पानी का बर्तन उसने अपने मालिक को दे दिया जिसने उसको इनाम में कुछ पैसे दिये।

बनिये के लिये यह एक बहुत ही नामुमकिन सी बात थी कि वह लड़का अन्धा नहीं हुआ था पर उसने सोचा कि शायद वह थोड़ी देर में अन्धा हो जायेगा और फिर उससे पैसे मॉगेगा। पर ऐसा कुछ भी नहीं हुआ।

रात को लड़का अपने घर गया और अपनी पत्नी से बोला कि देखो मालिक ने मुझे ये पैसे दिये हैं। मेरी यह बात समझ में नहीं आयी पर मैं तुम्हें एक अजीब सी बात बताता हूँ जो आज मेरे साथ हुई।

मैं इस सुबह जब फलॉ फलॉ जगह पर मालिक के लिये तालाब से पानी लेने गया तो मैंने उस पानी के किनारे एक आवाज सुनी जिसने मुझसे वहॉ से पानी ले जाने के लिये कहा एक खास जगह से कुछ रेत उठा कर कपड़े में बॉधने के लिये कहा और साथ में यह भी कहा कि मैं उसे घर पहुँच कर ही खोलूँ। तो लो तुम इसको खोलो।

उसकी पत्नी ने उस कपड़े की गॉठ खोली तो लो वह रेत तो बहुत कीमती जवाहरातों में बदल गया था। उसे देखते ही वह चिल्लायी — "कर्म बड़ा है कर्म बड़ा है। मेरा विश्वास गलत नहीं था। कर्म बड़ा है।"

बस इसके बाद तो ब्राह्मण का बेटा और उसकी पत्नी दोनों बहुत अमीर हो गये। कुछ दिन बाद उसने बनिये की नौकरी छोड़ दी। ब्राह्मण के बेटे ने अपनी अमीरी की बात धीरे धीरे खोली ताकि लोगों को उसके ऊपर कोई शक न हो जाये। उस देश में उसका ओहदा भी ऊँचा हो गया तो उसने एक दावत का इन्तजाम किया।

इस दावत में वहॉ के राजा को भी बुलाया गया तो वह भी आया। सब मेहमानों का बड़े शानदार तरीके से स्वागत किया गया। बहुत कीमती कीमती चीज़ें उनको दी गयीं। बढ़िया किस्म की खुशबुऐं हवा में अपनी गन्ध फैला रही थीं। मीठा मीठा संगीत चारों तरफ बज रहा था। मेहमानों के आराम के लिये सारी कोशिशें की गयी थीं। राजा यह सब देख कर बहुत खुश हुआ।

इस दावत में राजा की अपनी बेटी उसकी देखभाल कर रही थी पर उसको यह पता नहीं था कि वह उसकी अपनी बेटी थी क्योंकि शादी के बाद से वह काफी बदल गयी थी सो वह उसको पहचान ही नहीं सका। इसके अलावा वह जितनी बार भी अपने पिता के पास गयी अलग अलग पोशाक पहन कर गयी।

आखीर में जब राजा वहाँ से चलने लगा तो वह उसके पास गयी और उसे बताया कि वह उसकी छोटी बेटी थी जिसको उसने बनिये के गरीब नौकर से ब्याह दिया था।

उसने फिर पूछा — "पिता जी अब बताइये कि कर्म बड़ा है कि धर्म? आप मेरे पति का घर देखिये उनकी दौलत देखिये। इस देश में आपके सिवा आज उनके बराबर कोई भी अमीर नहीं है।"

तब राजा को विश्वास हुआ कि वह अपने विचारों में गलत था और उसने जो कुछ भी अपनी बेटी के साथ किया वह गलत किया। फिर उसने अपनी बेटी को गले लगाते हुए कहा कि वह अपने बाद उसके पति को ही अपना राज्य देगा क्योंकि किस्मत ने ऐसा ही लिखा है।

54 चार दुष्ट बेटे और उनकी किस्मत[45]

एक बार की बात है कि एक राजा था। उसके चार बेटे थे पर बदकिस्मती से उसके वे चारों बेटे बहुत नशा करते थे। एक को शराब पीने की आदत थी तो दूसरे को चरस की। तीसरे को अफीम की आदत थी और चौथे को भॉग की।[46] दुनियॉ में उनसे ज़्यादा कोई भी नीच आदमी नहीं मिल सकता था।

एक दिन राजा के वजीर ने जो उसका बहुत ही वफादार था राजा को उन चारों राजकुमारों की करनी बतायी और उससे प्रार्थना की वह देश जनता और घर की भलाई के लिये उन चारों राजकुमारों को सुधारने की कोशिश करे।

राजा ने जब अपने बेटों के बारे में सुना तो वह बहुत गुस्सा हुआ और उसने उन सबको देश निकाले का हुक्म सुना दिया। वह बजाय ऐसे नीच बेटे को अपनी राजगद्दी देने के किसी दूसरे परिवार से बेटा गोद ले कर उसको अपनी गद्दी देना बेहतर समझता था। इस वजीर से बदला लेने की कसम खा कर चारों राजकुमारों ने अपना कुछ जरूरी सामान बॉधा और देश छोड़ दिया।

कुछ ही हफ्तों में वे एक दूसरे देश में थे। वहॉ जा कर वे उस देश के राजा से मिले और उससे कोई काम मॉगा। पर उस देश का

---

[45] Four Wicked Sons and Their Luck (Tale No 54)

[46] Wine, Charas (made from Hemp flowers), Opium and Hemp (Bhaang)

राजा भी उन चारों की बुरी आदतों को जानता था इसलिये उसने भी उनको कोई काम नहीं दिया बल्कि उसने भी उनको अपना देश छोड़ कर चले जाने के लिये कहा। सो वे वह देश भी छोड़ कर चले गये।

कुछ समय बाद वे एक दूसरे देश में थे। जब वे उस देश के एक बड़े शहर में पहुँचे तो वहाँ रात होने वाली थी। उन्होंने वह रात एक बड़े पेड़ के नीचे बिताने का इरादा किया। खा पी कर वे वहाँ सोने के लिये लेट गये।

उसी रात उस शहर का एक बड़ा अमीर व्यापारी मर गया। उसके दोस्त और रिश्तेदार कुछ ऐसे आदमियों की तलाश में निकले जो उसकी लाश की उसके दफ़न करने तक देखभाल कर सकें। यह बड़ी अजीब सी बात थी कि उनको ऐसा कोई आदमी नहीं मिला जो यह काम कर लेता।

तभी उनमें से एक आदमी के दिमाग में यह बात आयी कि शायद शहर के बाहर कोई गरीब आदमी या भिखारी या अजनबी कुछ रुपये के लिये इस काम को करने के लिये तैयार हो जाये। सो वह शहर से बाहर चला गया जहाँ उसको ये चार राजकुमार एक पेड़ के नीचे सोते मिल गये।

उसने उनको उठाया — "अरे उठो। क्या तुम एक रात के लिये एक लाश की पहरेदारी कर सकोगे? इसका तुमको अच्छा पैसा मिलेगा।"

राजकुमार बोले — “हॉ हम तुम्हारा यह काम कर देंगे पर हमको इस काम का चार हजार रुपया चाहिये।”

वह आदमी उनको इतना रुपया देने के लिये तैयार हो गया और वे चारों उसके साथ चल दिये। मरे हुए व्यापारी के घर पहुँचने पर उन चारों को वह कमरा दिखा दिया गया जिसमें उसकी लाश रखी हुई थी।

उन्होंने चारों ने आपस में यह तय किया कि वे बारी बारी से उस लाश की पहरेदारी करेंगे। रात के पहले प्रहर में एक राजकुमार पहरा देने के लिये बैठा जबकि दूसरे राजकुमार सोये रहे। जब उसके पहरे का एकाध घंटा बीत गया तो वह मुर्दा उठा कर बैठ गया और उससे बात करने लगा।

उसने उससे पूछा — “क्या तुम मेरे साथ नर्द[47] का खेल खेलोगे?”

राजकुमार बोला — “हॉ हॉ क्यों नहीं। पर तुम दॉव पर क्या लगाओगे?”

लाश बोली — “अगर तुम हार जाओ तो तुम मुझे दो हजार रुपये देना।”

राजकुमार बोला — “यह तो एकतरफा का दॉव हुआ अब यह बताओ कि अगर तुम हार गये तो तुम मुझे क्या दोगे?”

[47] Game of Nard – a kind of dice game

लाश बोली — "ओह तुम उसकी चिन्ता मत करो। इस घर की फलाँ फलाँ जगह बहुत सारा खजाना गड़ा है। तुमसे जितना ले जाया जा सके तुम उतना ले जा सकते हो।"

राजकुमार बोला "ठीक है।" और दोनों का खेल शुरू हो गया। राजकुमार ने मरे हुए व्यापारी को दो बार हरा दिया और वह उसको तीसरी बाजी भी हरा देता अगर उसके पहरे का समय खत्म न हो गया होता। जैसे ही वह अपने दूसरे भाई को पहरा देने के लिये उठाने गया वह लाश फिर से चुपचाप लेट गयी।

राजकुमार ने अपने भाई को उठाते हुए कहा — "उठो। पहरा देने की अब तुम्हारी बारी है। पर ज़रा ख्याल रखना लगता है कि इस लाश में कोई आत्मा है।" सो पहला राजकुमार तो जा कर सो गया और दूसरा राजकुमार आ कर पहरे पर बैठ गया।

कुछ ही देर में उसको अपना नशा पीने की इच्छा हुई पर आग बाहर थी। वह लाश को एक पल के लिये भी अकेला कैसे छोड़ सकता था। चार हजार रुपये तो उनको उस लाश की केवल रखवाली के ही मिलने वाले थे।

राजकुमार ने सोचा "मुझे मालूम है कि मुझे क्या करना है। मैं यह लाश अपनी कमर पर अपनी कमर की पेटी से बाँध लेता हूँ।" ऐसा सोच कर उसने उसको अपनी पीठ से बाँध लिया और बाहर चला गया।

जब वह बाहर जा कर अपनी चिलम सुलगा रहा था तो उसने इधर उधर देखा और उसे ऐसा लगा जैसे कुछ गज की दूरी पर कोई दूसरी आग जल रही थी। पर वह आग नहीं थी। वह तो एक ऑख वाला शैतान था जो उसकी तरफ ऐसे देख रहा था जैसे वह उसको मार देगा।

राजकुमार ने पूछा — "तुम कौन हो। तुम्हें यहॉ से क्या चाहिये। तुम यहॉ से भाग जाओ नहीं तो मैं तुम्हें मार दूॅगा और अपनी पीठ पर उसी तरह से बॉध लूॅगा जैसे मैंने इस आदमी को बॉध रखा है।" कह कर उसने अपनी पीठ पर बॅधी लाश की तरफ इशारा किया।

एक ऑख वाला जिन्न यह देख कर डर गया और राजकुमार से दया की भीख मॉगने लगा और उससे वायदा किया कि वह उसे जो वह चाहेगा वही उसे दे देगा।

राजकुमार बोला — "मुझे कुछ नहीं चाहिये पर अगर तुम चाहो तो तुम जा कर नदी का रास्ता बदल सकते हो ताकि वह राजा के महल के बराबर से हो कर बहे।"

जिन्न बोला "यकीनन। मैं यह अभी करता हूॅ।" और वह नदी का रास्ता बदलने चला गया। उसने नदी का रास्ता बदल दिया। अब वह नदी उस देश के राजा के महल के पास से हो कर बहने लगी।

दूसरे राजकुमार के पहरे का समय खत्म होने आ रहा था सो उसने लाश को वहीं लिटा दिया जहाँ वह लेटी हुई थी और अपने तीसरे भाई को पहरे के लिये उठाने के लिये चला गया।

उसने अपने तीसरे भाई को उठाया और उसने भी अपने इस भाई को चेतावनी दी कि ध्यान रखे कि इस लाश में कोई आत्मा है और खुद सोने चला गया।

एकाध घंटे के अन्दर ही तीसरे भाई ने एक राक्षसी[48] की आवाज सुनी। वह आवाज उसे ऐसी लगी जैसे कोई बुढ़िया रो रही हो। उसने भी लाश को अपनी पीठ पर बाँधा और बाहर चला गया यह देखने के लिये क्या मामला था।

उसने देखा कि एक बुढ़िया घर के बाहर खड़ी है। उसने उसे एक राक्षसी समझते हुए अपना चाकू निकाल लिया और उससे उसे मारा। बुढ़िया ने समझ लिया कि वह क्या करने वाला है सो वह उसके वार से बचने के लिये वहाँ से भागी पर फिर भी उसकी एक टाँग कट गयी। बाकी बची बुढ़िया वहाँ से गायब हो गयी।

राजकुमार ने उसकी टाँग से उसका जूता निकाल कर अपनी जेब में रखते हुए कहा — "बड़ी अजीब बात है। वह एक टाँग से कैसे भाग गयी।"

[48] Translated for the word "Ogress". An ogre (feminine ogress) is a being usually depicted as a large, hideous, manlike monster that eats human beings.

उसके बाद वह घर में चला गया और अपने पहरे का समय पूरा करने लगा। पहरे का समय पूरा होने पर उसने अपने चौथे भाई को उठाया और अपने दूसरे भाइयों की तरह से उसे सावधान किया कि ज़रा ध्यान रखना इस लाश में कोई आत्मा है। कह कर वह तो सो गय और उसका चौथा भाई पहरा देने लगा।

यह राजकुमार जब लाश के पास बैठा था तो इसको एक जिन्न दिखायी दिया जो राजा की प्यारी सी बेटी को ले कर जा रहा था। उसने भी तुरन्त ही लाश को अपनी पीठ से बाँधा और उस जिन्न का पीछा किया। उसने देखा कि वह जिन्न राजकुमारी को करीब करीब एक मील दूर ले गया।

उसे वहाँ बिठा कर उसने उससे कहा कि वह वहाँ से कहीं न जाये और वह खुद बड़े तेज़ तेज़ कदमों से एक जंगल की तरफ चल दिया। वह राजकुमारी को पकाने के लिये लकड़ी और आग लेने गया था।

राजकुमार ने यह भाँप लिया सो वह राजकुमारी की तरफ दौड़ा और उससे कहा कि वह उसके कपड़े पहन ले और अपने कपड़े उसे पहनने के लिये दे दे। फिर वह उस व्यापारी की लाश के साथ घर चली जाये और वहाँ जा कर उसकी रखवाली करे।

उसने कहा कि वह वहीं बैठेगा और वह उसकी चिन्ता न करे। उसको किसी से कोई डर नहीं है।

जल्दी ही वह जिन्न कुछ लकड़ियाँ और आग और एक बड़ा तेल का बर्तन ले कर वहाँ आ पहुँचा। उसने आग जलायी और तेल का बर्तन उस आग पर रख दिया। जब तेल बहुत गर्म हो गया तो उसने राजकुमारी से कहा कि वह उसके चारों तरफ चक्कर लगाये पर राजकुमार ने ऐसा दिखाया जैसे कि उसकी समझ में कुछ आया ही न हो।

जिन्न बोला कि यह कोई मुश्किल काम नहीं था और उसने यह दिखाने के लिये कि उसका क्या मतलब है खुद उस आग के कुछ चक्कर काटे।

यह तो साफ जाहिर था कि इससे उसका मतलब यह था कि जैसे ही राजकुमारी चक्कर काटेगी वह उसे गर्म तेल के बर्तन में धक्का दे देगा। पर राजकुमार को उसके इरादों का पहले ही पता चल चुका था सो जब वह जिन्न चक्कर काट रहा था राजकुमार ने उसको तेल के बर्तन में धक्का दे दिया।

जिन्न का सिर तेल में पहुँचते ही बहुत ज़ोर से चीख मार कर गायब हो गया। ऐसा लगा जैसे धरती पर भूचाल आ गया हो। जिन्न को मार कर राजकुमार व्यापारी के घर वापस आ गया। उसने राजकुमारी के कपड़े उसे वापस कर दिये और उससे घर वापस लौट जाने के लिये कहा।

सब कुछ समय से खत्म हो गया। तभी उसके पहरे का समय भी खत्म हो गया था। सुबह हो गयी थी। व्यापारी के दोस्त और

रिश्तेदार आ गये थे।उन्होंने राजकुमारों को चार हजार रुपये दिये जैसा कि उन्होंने उनसे वायदा किया था पर राजकुमारों ने वे रुपये लेने से इनकार कर दिया।

उन्होंने उनसे इसके दोगुने पैसे मॉगे और साथ में धमकी दी कि अगर उन्होंने उनकी मॉगी हुई रकम नहीं दी तो वे जा कर राजा से उनकी शिकायत करेंगे। जब उनसे इस दोगुनी रकम मॉगने की वजह पूछी गयी तो उन्होंने उसकी वजह बताने से भी इनकार कर दिया। मरे हुए व्यापारी के लोग इतना पैसा देने के लिये तैयार नहीं थे।

सो चारों राजकुमार राजा के पास गये और जा कर उससे कहा — "राजा साहब हमको गलत फॅसाया गया है। हमारे आठ हजार रुपये इनकी तरफ बनते हैं और ये हमको केवल आधे पैसे ही दे रहे हैं। मेहरबानी कर के आप हमारे साथ न्याय करें।"

इस पर राजा ने मरे हुए व्यापारी के दोस्तों और रिश्तेदारों को अपने सामने हाजिर होने का हुक्म सुना दिया। इस मुकदमे ने सारे शहर में हलचल मचा दी थी सो राजा का दरबार खचाखच भरा हुआ था।

राजा ने पूछा — "सच सच बताओ कि मामला क्या है। ये लोग कहते हैं कि तुम लोगों को इनके आठ हजार रुपये देने हैं और तुम लोग इनको केवल चार हजार रुपये ही दे रहे हो।"

दोस्त और रिश्तेदार बोले — "राजा साहब ये लोग सच नहीं बोल रहे हैं। हम लोगों में चार हजार रुपये में सौदा तय हुआ था कि इस लाश की रखवाली के लिये हम इनको चार हजार रुपये देंगे। इस सौदे के कई गवाह मौजूद हैं।

राजा साहब आप हम लोगों को तो जानते ही हैं। हम लोग कोई बेईमान लोग नहीं हैं और न ही हम लोग इतने गरीब हैं कि हम किसी को उसको हक भी न दे सकें। अब आप ही फैसला करें।"

राजा ने चारों राजकुमारों की तरफ देखते हुए कहा — "सुना तुमने इन्होंने क्या कहा।"

राजकुमार बोले — "पर राजा साहब इनको यह नहीं पता कि इनसे सौदा होने के बाद हमारे साथ क्या क्या हुआ। आप हमारी भी सुन लें और फिर न्याय करें।

यह सौदा तय होने के बाद हम चारों ने यह तय किया कि हम चारों एक एक कर के उस लाश का पहरा देंगे। सो हममें से एक ने उस लाश के साथ नर्ड खेल खेला और उससे चार हजार रुपये जीत लिये। मरे हुए आदमी ने कहा कि वे रुपये हम उसके एक खास जगह गड़े खजाने में से ले लें।"

राजा ने रिश्तेदारों से पूछा — "तुमने सुना ये लोग क्या कह रहे हैं। क्या यह सच है?"

रिश्तेदार बोले — "नहीं राजा साहब हमारी जानकारी में ऐसा कोई खजाना नहीं है।"

तब राजा ने अपने कुछ सिपाही उस राजकुमार के साथ मरे हुए व्यापारी के घर भेजे जिसने लाश के साथ नर्द खेला था ताकि वे उस गड़े हुए खजाने की सच्चाई का पता लगा सकें। मरे हुए व्यापारी के घर के सारे कमरों के फर्श खोद डाले गये तब कहीं जा कर उनको उसके एक सोने वाले कमरे में गड़ा हुआ खजाना मिला।

राजकुमार और सिपाहियों ने राजा को वह गड़ा हुआ खजाना दिखाया तो राजा ने कहा कि इसको आठ हजार रुपये दे दिये जायें।

उसके बाद दूसरा राजकुमार राजा के सामने आया और बोला कि किस तरह से उसने जिन्न को डरा कर उससे राजा के महल के पास से नदी बहा दी थी। राजा ने इस बात को पक्का करवाया तो नदी वाकई राजा के महल के पास से बह रही थी। राजा यह सुन कर बहुत खुश हुआ और उसने उसको खास इनाम दिया।

इसके बाद तीसरा राजकुमार राजा के सामने आया। उसने उसे बताया कि वह उस रात को एक राक्षसी से लड़ा था और उसने उसकी टॉग काट ली थी। सबूत के तौर पर उसने राजा को राक्षसी का वह जूता दिखाया जो उसने उसके पैर से उतार कर अपनी जेब में रख लिया था।

राजा यह देख कर बहुत खुश हुआ और उसने उस राजकुमार को भी बहुत सारा इनाम दिया। अब चौथे राजकुमार की बारी थी। वह भी सामने आया और उसने राजा को बताया कि उसने

राजकुमारी को एक बहुत ही भयानक जिन्न से बचाया था और जिन्न को गर्म तेल के बर्तन में फेंक कर मार दिया था।

यह सुन कर तो राजा के आश्चर्य का वारापार न रहा। उसने तुरन्त ही अपनी बेटी को बुला कर उससे पूछा कि क्या वह राजकुमार सही कह रहा था।

जब उसे पता चला कि राजकुमार सही कह रहा था तो वह तुरन्त ही अपने सिंहासन से उठा और उसे गले लगा लिया।

उसने अपनी बेटी उसे दे दी कि "लो अब यह तुम्हारी है। बहुत सारे राजकुमारों ने इसका हाथ माँगा था मैंने उन सबको मना कर दिया था पर अब यह तुम्हारी है। मुझे ऐसा कोई और नहीं मिलेगा जो उसको इस तरह से मौत से बचाये।"

इस पर वहाँ बेठे सब लोग चिल्लाये "राजा की जय हो राजकुमारी को भगवान खुश रखे उसके पति को भी खुश रखे। भगवान करे वह बहुत लम्बी उम्र पायें और हमेशा खुशहाल रहें।"

उस दिन और फिर आने वाले कई दिनों तक सारे राज्य में इतनी खुशी मनती रही जैसी कि पहले न कभी मनी थी और न ही कभी आगे मनेगी।

चारों राजकुमार उस देश में कई साल तक रहे और बहुत अमीर हो गये। वह राजकुमार जिसने राजकुमारी को बचाया था उस देश के राजा का वारिस घोषित कर दिया गया। जबकि उसके तीनों भाइयों को उसके नीचे बहुत ऊँचे ऊँचे ओहदे मिले।

इतना सब पा कर भी वे पूरी तरीके से खुश नहीं थे। वे अपने घर जाना चाहते थे। राजा को उनकी इच्छा का पता चला तो उसने उनको जाने से बिल्कुल मना कर दिया। उसको डर था कि अगर वे वहाँ से एक बार गये तो शायद फिर न लौटें।

आखिर उनकी लगातार प्रार्थना पर उसने उनको जाने की इजाज़त दे दी। साथ में उनको रास्ते के लिये उसने पैसे और सिपाही भी दे दिये।

अपने देश पहुँच कर वे अपने पिता के सिपाहियों से लड़े और उनको हरा दिया। जब उनके पिता राजा ने उनके बारे में सुना कि उसके अपने बेटों ने उसके सिपाहियों को हरा दिया है तो वह खुद उन्हें लेने के लिये आया और उनसे प्रार्थना की कि वे इस लड़ाई को अब खत्म करें।

फिर उसने उनको बताया कि उसने उनको अपने प्रिय वज़ीर के कहने पर देश निकाला दिया था। उसके बाद दोनों में सुलह हो गयी और सब खुशी खुशी रहने लगे। सारे राज्य में खूब खुशियाँ मनायी गयीं। अगले दिन वज़ीर को मरवा डाला गया। उसके बाद वहाँ खुशहाली ही खुशहाली छा गयी।

उन चारों राजकुमारों में से दो राजकुमार उस दूसरे देश उस राजा की सहायता करने के लिये लौट गये जहाँ के राजा के यहाँ वे काम करते थे।

बाकी बचे दो राजकुमार अपने देश में ही रह कर अपने पिता की सहायता करते रहे।

55 शरफ चोर[49]

राणा रंजीत सिंह[50] के समय से कुछ पहले देश में चोरी और डकैती बहुत सामान्य थीं और हैपी घाटी में तो ये इतनी सफलतापूर्वक की जाती थीं कि भले और ईमानदार लोगों को अपनी मेहनत की कमाई बचाने के लिये अपनी सारी अक्ल लड़ानी पड़ जाती थी।

इन सब चोरों में एक चोर बहुत ही मशहूर था उसका नाम था शरफ सूर।[51] वह इतना चालाक और साहसी और सफल चोर था कि उसका नाम सुनते ही लोग कॉप उठते थे जबकि उसका चरित्र देवताओं का सा था।

सारे लोग यही सोचते थे कि उसकी नजर ही बुरी थी या फिर उसके अन्दर मैस्मैराइज़ करने का कोई गुण था जिसकी वजह से उनका उस पर कोई बस नहीं चलता था।

एक दो बार किसी तरह से उसे अदालत में भी लाया भी गया पर क्योंकि उसके खिलाफ कोई सबूत नहीं मिला सो उसके खिलाफ कुछ किया नहीं जा सका। लोगों ने अपना सामान चुराने के दुख में दुखी हो कर बस यही सोच लिया कि यह उनकी किस्मत थी।

---

[49] Sharaf the Thief (Tale No 55)

[50] Rana Ranjit Singh was born in 1780 AD.

[51] Sharaf Tsur. Tsur word in Kashmiri language is used for thief. This man was known as Asharaf in Punjab

शरफ सूर कबीर घनी का बेटा था जो काश्मीरी शाल बेचने वाला एक बहुत ही बड़ा और अमीर व्यापारी था। यह ज़ैन कदल पुल के पास रहता था जो झेलम नदी के ऊपर बने सात पुलों में से चौथा पुल था। झेलम नदी श्रीनगर के बीच से हो कर बहती है और नदी के दोनों तरफ बसे शहर के हिस्सों को मिलाने का मुख्य जरिया है।

यह मानते हुए कि उसको अपने पिता की सारी दौलत मिल जायेगी उसने कभी अपने पिता के व्यापार की कोई कला नहीं सीखी ताकि वह अपने रहने सहने का कोई जरिया सीख सके। इसका फल यह हुआ कि वह एक बहुत ही आलसी आदमी बन गया। ज़िन्दगी में वह बस खाता रहा पीता रहा और अपने पिता का पैसा उड़ाता रहा।

इसलिये इस बात में कोई आश्चर्य नहीं कि अपने पिता के मरने के बाद उसने अपने पिता का सारा सामान और दौलत सब दावतों नाच गानों और बुरी संगत में उड़ा दी। पर अब वह क्या करे। अब न तो वह भीख माँग सकता था और न ही कोई दौलत कहीं से खोद कर निकाल सकता था सो उसने चोरी की कला सीख ली।

वहाँ के कुछ लोग उसकी ये घटनायें बताते हैं जो वहाँ की लोक कथाओं का एक हिस्सा हैं —

पहली घटना

एक बार शरफ बहुत बढ़िया शानदार कपड़े पहन कर एक बागीचे में गया। कुछ बड़े आदमियों के कुछ बच्चे वहॉ पेड़ों के साये में खेल रहे थे।

शरफ ने देखा कि उनमें से कुछ बच्चों ने बहुत ही बढ़िया जूते पहन रखे थे। वह उनके पास गया और उनको बैठ जाने के लिये कहा। वहॉ के रीति रिवाज के अनुसार बच्चों ने अपने अपने जूते उतारे और बैठने लगे कि शरफ ने उनको ऐसा करने के लिये मना किया कि कहीं पास में शरफ चोर हो सकता था और वह उनके चुरा सकता था।

लड़के यह सुन कर हॅस पड़े और बोले — "ले लो इन्हें। तुम हमें क्या बताना चाह रहे हो। क्या हम अन्धे हैं या बेवकूफ हैं। ये जूते तो हमारे बराबर में हमारे पास रखे हुए हैं। हमारे जाने बिना इन्हें यहॉ से कौन ले जा सकता है।"

वेश बदले हुए चोर ने मौका पा कर उनसे कहा — "ज़रा देखो मैं तुम्हें बताता हॅू कि इन्हें यहॉ से कैसे ले जाया जा सकता है।"

कह कर शरफ उठ कर वहॉ से थोड़ी दूर गया और चारों तरफ की जगह का मुआयना किया और यह देख कर कि वहॉ आस पास में कोई नहीं था वह बच्चों के पास लौटा उनके जूते एक कपड़े में बॉधे और उनको ले कर चलता बना।

यह तो उसने उनको केवल दिखाने के लिये किया था पर जब उसने इसे दूसरी बार किया तो वह लौट कर ही नहीं आया हालाँकि बच्चे चारों तरफ चिल्लाते रहे और उसके वापस आने का इन्तजार करते रहे।

बाद में उनको यह शक हुआ कि वह और कोई नहीं खुद शरफ चोर ही था जो उनके जूते चुरा कर ले गया। सारे शहर में इस बात का शोर मच गया पर कुछ भी नहीं मिल पाया।

दूसरी घटना

श्रीनगर के पास बटमालुन[52] नाम का एक बड़ा गाँव है। काश्मीरी भाषा में बट[53] का मतलब होता है खाना जैसे पका हुआ चावल आदि और मालुन का मतलब होता है शायद खाने की इच्छा। इसलिये बटमालुन का मतलब होता होगा शायद फकीर यानी जिसके शरीर के अन्दर हमेशा खाने की इच्छा रहती हो।

खैर यहाँ एक बहुत बड़ी मस्जिद है जो एक फकीर की याद में बनी है जिसके नाम से इस गाँव और इस मस्जिद दोनों के नाम जुड़े हुए हैं। उस फकीर की कब्र भी इसी मस्जिद के पास ही है।

एक बार शरफ ने एक इमाम का वेश रखा और उस मस्जिद में जा कर अज़ान देने लगा।[54] अज़ान सुन कर बहुत सारे किसान वहाँ

---

[52] Batmaalun

[53] Bata. Bhaat, means rice, in the plains.

[54] Imaam is the Muslim priest and Azaan is the call for Muslim prayer.

अपनी पूजा करने पहुँच गये और इमाम का इशारा पा कर प्रार्थना के लिये ठीक से बैठ गये।

प्रार्थना शुरू करने से पहले शरफ ने उनसे उनकी चादर निकाल कर एक ढेर में रखने के लिये कहा। उसने कहा कि उसको पता था कि शरफ चोर इस बिल्डिंग के इधर उधर ही घूम रहा था और उसको इस बात से कोई मतलब नहीं था कि वह मस्जिद थी या बाजार था या फिर कोई बड़ी सड़क उसको तो बस चोरी करनी होती थी।

हर वह आदमी जिसने भी मुसलमानों को मस्जिद में प्रार्थना करते देखा है वह जानता है कि वे किस नियमितता के साथ प्रार्थना करते हैं। जैसे जैसे इमाम उनसे प्रार्थना करने के लिये कहता जाता है वैसे वैसे वे लोग करते जाते हैं।

सो एक बार नकली इमाम के कहने पर जब वे सब कुछ लम्बे समय के लिये नीचे झुके तो नकली इमाम यानी शरफ ने उनकी सारी चादरें उठायीं और बिना कोई आवाज किये हुए उनको उस बिल्डिंग के एक छोटे से रास्ते से ले कर भाग गया।

इस सारे समय सब लोग यही इन्तजार करते रहे कि इमाम अब उनको क्या करने के लिये कहता है। उनको लगा कि कहीं वह बेहोश तो नहीं हो गया। आखिर एक आदमी ने अपना सिर थोड़ा सा ऊँचा उठा कर देखा तो उसने देखा कि उनका इमाम और उनकी चादरें दोनों ही गायब हो चुके हैं।

वह तुरन्त ही ज़ोर से चिल्लाया — "भाई लोगों हम लुट गये। हम लुट गये। यहाँ शरफ सूर आया था। हमारी प्रार्थना तो किसी नकली इमाम ने करायी थी। हो सकता है कि वह नकली इमाम शरफ सूर ही हो।"

तीसरी घटना

एक दूसरे मौके पर एक जुलाहा अपना कपड़ा ले कर किसी गाँव से श्रीनगर उसे बेचने के लिये चला आ रहा था। इत्तफाक से शरफ भी उसी रास्ते से गुजर रहा था। उसने उस जुलाहे को सलाम किया और उससे पूछा कि वह अपना कपड़ा कितने में बेचेगा।

जुलाहा बोला — "तीन रुपये में।"

शरफ पहले तो उसकी बड़ाई करता रहा फिर उससे बोला कि वह उस कपड़े की अपनी आखिरी कीमत बताये। जुलाहे ने अल्लाह की कसम खाते हुए उससे कहा कि उसको उस कपड़े को बेचने में केवल आठ आने का ही फायदा है। उसकी मेहनत को देखते हुए यह कोई ज़्यादा फायदा नहीं था।

शरफ ने ऐसा दिखाया जैसे उसकी बात पर उसे विश्वास ही न हुआ हो। उसने नीचे से कुछ मिट्टी उठा कर उसको एकसार करते हुए एक शक्ल दी और जुलाहे से कहा कि वह मुहम्मद[55] की कब्र की कसम खा कर कहे कि वह सच बोल रहा था।

---

[55] Muslim Prophet

वह जुलाहा एक भला आदमी था सो उसने मिट्टी की उस शक्ल को मुहम्मद साहब की कब्र समझ कर उस पर हाथ रख कर कसम खा दी। जब वह जुलाहा पूरी इज़्ज़त के साथ उस कब्र पर झुक कर कसम खा रहा था तो शरफ ने नीचे से सूखी मिट्टी उठा कर उसकी ऑखों में झोंक दी और उसका कपड़ा ले कर भाग गया।

अब यह तो कहना बेकार ही है कि उस मिट्टी ने उस जुलाहे की ऑखें अन्धी कर दीं और उसने इस बात पर इतना आश्चर्य किया कि काफी देर तक न तो वह कुछ देख सका और न ही कुछ कर सका।

चौथी घटना

एक बार शरफ एक मकबरे के पास बैठा हुआ यह दिखा रहा था कि वह फातिहा[56] पढ़ रहा था। उसी समय वहॉ से एक आदमी गुजरा तो शरफ ने उसे अपने पास बुलाया।

वह आदमी उसके पास आया और उससे पूछा कि उसको क्या चाहिये। शरफ बोला — "अल्लाह तुम्हारा भला करे मुझे थोड़ी सी रोटी चाहिये। मैं तुम्हें पैसे दूॅगा। मैं अपने मरे हुए पिता के नाम पर गरीबों को रोटी बॉटना चाहता हूॅ।"

उस आदमी ने सोचा कि यह काम तो बहुत भला काम है वह इस काम के लिये राजी हो गया और शरफ से पैसे ले कर रोटी लाने

[56] The first chapter of Quran

चल दिया। जब वह कुछ दूर चला गया तो शरफ ने उसे बुलाया — “यहॉ आओ। अगर तुम वापस नहीं आओगे तो अपना यह शाल यहॉ रखते जाओ जब तक तुम रोटी ले कर आते हो।”

इस सौदे में उस आदमी को कोई शक नहीं हुआ तो उसने अपना शाल वहीं उसके पास छोड़ा और चला गया। जैसे ही वह शरफ की ऑखों से ओझल हुआ शरफ ने उसका वह शाल लिया और दूसरी दिशा में चला गया। यह तो बड़ा अच्छा सौदा था इतना कीमती शाल इतने कम पैसे में।

पॉचवीं घटना

बदकिस्मती से एक बार एक घोड़ा बेचने वाला शरफ से टकरा गया। घोड़ा बेचने वाला एक बहुत सुन्दर से तेज़ भागने वाले घोड़े पर सवार था। शरफ को वह घोड़ा बहुत अच्छा लगा सो उसने उसे लेने का विचार किया। उसने घोड़ा बेचने वाले से पूछा कि उसको घोड़े की क्या कीमत चाहिये।

घोड़ा बेचने वाला बोला — “सौ रुपया।”

शरफ बोला — “ठीक है। पहले मैं इसको देखूॅगा कि इसमें कोई बुरी आदत तो नहीं है सो मुझे इस पर बैठने दो।”

घोड़ा बेचने वाले ने उसे घोड़ा दे दिया जैसे ही शरफ उस घोड़े पर बैठा उसने उसके पेट में अपनी एड़ी मारी तो वह घोड़ा तो दौड़ गया और तुरन्त ही घोड़ा बेचने वाले की नजरों से ओझल हो गया।

वह तो उसकी चीख और चिल्लाहट की आवाज से भी बहुत दूर जा चुका था।

छठी घटना

एक बार एक पंडित एक नदी के किनारे अपना एक नया बहुत सुन्दर शाल ओढ़ कर घूम रहा था। जैसे ही शरफ ने यह देखा तो वह एक नाव में कूद पड़ा जो नदी के किनारे एक खूँटे से बँधी हुई थी।

उसने ऐसा दिखाया जैसे कि उसे नाव खेना बहुत अच्छी तरह से नहीं आता था सो वह उसकी सहायता कर दे। इसके बदले में पंडित को भी अपनी जगह जल्दी पहुँच जाना था और उसको नाव की सवारी भी मिल जायेगी। पंडित तुरन्त ही तैयार हो गया।

वे दोनों चले तो उनको अपनी जगह पहुँचने से पहले ही रात हो आयी तो शरफ ने पंडित से कहा कि वह उसका बहुत कृतज्ञ था। और उसका घर अभी वहाँ से कुछ दूर था इसलिये वह उसको खाना खिलाना चाहता था। फिर वह उसकी नाव में सो भी सकता था और सुबह को ताजा हो कर घर जा सकता था।

पंडित राजी हो गया सो शरफ ने उसको एक रुपया दे कर कहा कि वह बाजार जा कर उसका उन दोनों के लिये खाना खरीद लाये। पंडित ने उससे रुपया लिया और उससे खाना खरीदने के लिये बाजार चल दिया।

तभी शरफ ने उसे पुकारा और उससे कहा — “तुम बहुत थक गये होगे जबकि मैं अब काफी ठीक हूँ। मैं अब खाना लाने जा सकता हूँ। तुम नाव में बैठो मैं जा कर किसी नौकर को खाना बनाने के लिये ले कर आता हूँ। तुम मुझे अपना यह शाल दे दो ताकि वह नौकर उसमें तुम्हारा खाना ला सके।”

पंडित को इस बात में कोई शक नहीं हुआ सो उसने अपना शाल उतार कर शरफ को दे दिया और शरफ उसे ले कर वहाँ से खाना लाने चला गया।

पंडित कुछ देर तक तो धैर्यपूर्वक इन्तजार करता रहा पर फिर ठंड बढ़ती जा रही थी सो उसको अपने शाल की जरूरत पड़ने लगी। वह भूखा भी था से उसको खाना भी चाहिये था।

उसका धीरज छूटने लगा। कुछ देर बाद तो वह ज़ोर ज़ोर से रोने भी लगा — “यह जरूर ही शरफ सूर रहा होगा जो मेरा शाल ले कर चला गया।”

सातवीं घटना

यह एक और जुलाहे का किस्सा है कि एक जुलाहा पिछली बार के जुलाहे की तरह श्रीनगर अपना कपड़ा बेचने जा रहा था। हमें पिछली घटनाओं से पता चलता है कि शरफ को अच्छे कपड़े बहुत पसन्द थे।

सो जब शरफ ने उस जुलाहे को देखा तो वह कुछ दूर तक उसके सामने भागा फिर हॉफता हुआ और कराहता हुआ नीचे जमीन पर लेट गया जैसे कि उसे कहीं बहुत दर्द हो रहा हो।

कुछ लोग जो उस रास्ते पर जा रहे थे उसको इस तरह लेटा देख कर उसके चारों तरफ इकट्ठा हो गये और उससे सहानुभूति दिखाने लगे। तब तक वह जुलाहा भी वहीं आ पहुँचा।

शरफ धीरे धीरे अपने आपे में आया। उसने अपनी ऑखें खोलीं। ऐसा दिखाते हुए जैसे कि उसने जुलाहे की कपड़े की गठरी पहली बार देखी हो उससे अल्लाह के नाम पर उसे मॉगा ताकि वह उस कपड़े से अपने पेट को बॉध कर अपना दर्द कुछ कम कर सके।

जुलाहे को उसके ऊपर दया आ गयी और उसने अपना कपड़ा उसे दे दिया। शरफ ने उसे कस कर अपने पेट पर बॉध लिया। इस पट्टी का तो बहुत जल्दी ही असर हो गया।

कुछ मिनट बाद ही शरफ ने बताया कि उसका दर्द अब काफी ठीक है। उसने जमा हुई भीड़ को वहॉ से जाने के लिये कहा ताकि उसे ताज़ी हवा मिल सके। भीड़ वहॉ से छॅट गयी और अब केवल जुलाहा ही वहॉ रह गया।

भीड़ छॅटी देख कर शरफ ने जुलाहे से बड़ी कोमलता से कहा — "अल्लाह आपको मेरी सहायता करने के लिये आपके ऊपर दया करे। मेहरबानी कर के आप मेरा एक काम और कर दीजिये। मुझे

बहुत प्यास लगी है पास की मस्जिद के कुँए से मुझे थोड़ा पानी और ला दीजिये। इस दर्द ने तो मेरी प्यास ही बढ़ा दी है।"

यह सुन कर जुलाहा बिना किसी शक के पास की मस्जिद के कुँए से शरफ के लिये पानी लाने चला गया। उसके वहाँ से जाते ही शरफ भी वहाँ से चला गया। जब जुलाहा पानी ले कर वापस लौटा तो वहाँ तो कोई आदमी नहीं था। बेचारा जुलाहा।

आठवीं घटना

काश्मीर के लोग अपना पैसा या तो छिपा कर अपनी कमरबन्द में रखते हैं या फिर अपनी चादर के एक कोने में बाँध लेते हैं और या फिर अपनी पगड़ी में रखते हैं। एक पीर साहब ने अपने पैसे अपनी पगड़ी में छिपा कर रख लिये।

उन्होंने एक सुनार से एक सोने का गहना लिया उसको अपनी पगड़ी में रखा और घर चल दिये। मौसम बहुत गर्म था वह बहुत थके हुए थे और उनके घर का रास्ता लम्बा था।

शरफ को किसी तरह से पता चल गया कि इन पीर साहब की पगड़ी में सोना छिपा है। उसका दिमाग दौड़ा कि किस तरह से उनसे उनका वह सोना लिया जाये।

वह जल्दी जल्दी चल कर उनके रास्ते पर उनके आगे जा कर बैठ गया और रोने लगा।[57] जब पीर साहब वहॉ तक आये जहॉ वह बैठा था तो उसने उनसे कहा कि वह वहॉ कुछ देर बैठें और सुस्ता लें कुछ खा पी भी लें जो उसने उनको अपने पिता के नाम पर दिया।

पीर साहब उसकी इस सेवा से बहुत खुश हुए। जल्दी ही वह उसका दिया हुआ खाना खाने लगे। उससे बहुत मजेदार बातें भी हुईं। अब या तो शरफ के खाने में कुछ दवा मिली हुई थी या फिर पीर साहब अपने लम्बे सफर की वजह से कुछ ज़्यादा ही थके हुए थे यह तो नहीं पता पर उसका खाना खा कर उनको कुछ नींद सी आने लगी।

शरफ ने उनको सलाह दी कि वह वहीं लेट जायें सो वह वहीं लेट गये। शरफ ने उनको और भी कई तरह से आराम दिया जब तक वे गहरी नींद नहीं सो गये। जैसे ही वह गहरी नींद सो गये शरफ ने उनकी पगड़ी उनके सिर से उतारी और उसको ले कर वहॉ से चलता बना। वह एक ऐसी जगह चला गया जहॉ पीर साहब उसको देख नहीं सकते थे और वहॉ जा कर खुद भी सो गया।

उसकी आज के दिन की दिहाड़ी पूरी हो गयी थी। वह सोने का टुकड़ा कम से कम 100 रुपये की कीमत का था।

---

[57] He sat down by the side of a grave. Muslims prefer to bury their dead as close to the public way as possible in order that the devout passers-by may offer their prayer for them.

नवीं घटना

यह घटना बेचारे एक गरीब आदमी के साथ घटी थी। यह गरीब आदमी बहाउद्दीन की मस्जिद में रोज यह प्रार्थना करने जाता था कि कहीं से उसको कोई खजाना मिल जाये तो उसकी गरीबी दूर हो जाये।

और बहुत से लोगों की तरह उसका भी यह विश्वास था कि बहाउद्दीन की मस्जिद में प्रार्थना करने से अल्लाह उसकी इच्छा जरूर पूरी करेंगे इसलिये वह रोज वहाँ प्रार्थना करने जाता था — "ओ बहाउद्दीन मुझे खजाना दो। ओ बहाउद्दीन मुझे खजाना दो।"

एक दिन शरफ उस मस्जिद के पास से गुजर रहा था तो उसको उस गरीब आदमी की प्रार्थना सुनायी पड़ गयी। उसने सोचा कि न केवल वह उसको धोखा देगा बल्कि उससे कुछ फायदा भी कमायेगा।

अगले दिन वह जल्दी उठ कर मस्जिद गया और एक अँधेरे कोने में जा कर छिप कर बैठ गया। वह वहाँ तब तक बैठा इन्तजार करता रहा जब तक वह गरीब आदमी अपने समय पर वहाँ आया।

जब उसने अपनी इच्छा की प्रार्थना की तो शरफ बोला — "ओ भले आदमी तुम अपनी भक्ति में अटल हो और अपनी प्रार्थना भी बराबर करते रहते हो। अब तुम यह समझ लो कि मैं तुम्हारी इस

भक्ति और प्रार्थना से बहुत खुश हूँ और तुम्हारी इच्छा पूरी करने के लिये बिल्कुल तैयार हूँ।"

गरीब आदमी ने सोचा कि शायद यह बहाउद्दीन ही बोल रहे होंगे सो उसने एक बार फिर ऊँची आवाज में अपनी प्रार्थना दोहरायी। शरफ ने उसको एक खास समय पर कुछ औजारों के साथ जो खजाना खोदने के लिये जरूरी थे एक खास जगह पर आने के लिये कहा।

उसने उससे **100** रुपये और दो चादरें लाने के लिये भी कहा ताकि वह खजाना वह उन चादरों में बाँध कर ले जा सके। और साथ में उससे यह भी कहा कि वह यह बात किसी से भी न कहे।

यह सुन कर वह आदमी बहुत खुश हुआ और खुशी खुशी घर की तरफ चल दिया। रात को उसको खजाना मिलने की खुशी में बिल्कुल नींद नहीं आयी।

वह एक गरीब आदमी था उसके पास **100** रुपये तो थे नहीं सो उसको अपने घर का कुछ सामान बेच कर **100** रुपये इकट्ठा करने पड़े। अगले दिन रात के अँधेरे में वह शरफ की बतायी जगह पर पहुँच गया। उसके कन्धे पर खजाना खोद कर निकालने के लिये औजार थे और उसके कम्बल में **100** रुपये थे।

शरफ वहाँ उससे मिलने के लिये आया। एक दूसरे से दुआ सलाम करने के बाद शरफ उसको जंगल में एक तरफ को ले गया। इधर तो वह आदमी पहले कभी आया नहीं था। वहाँ उसने उसको

एक जगह दिखायी जहाँ उसको उसकी प्रार्थना का जवाब यानी उसका गड़ा हुआ खजाना मिल जाता। उसने उससे वहाँ दो गज गहरा गड्ढा खोदने के लिये कहा।

आदमी ने जल्दी ही अपना आधा काम खत्म कर लिया था पर उसके माथे पर पसीना आ गया। शरफ ने यह देखा तो उसको उसके कपड़े उतार कर एक तरफ रखने के लिये कहा ताकि वह आसानी से अपना काम कर सके।

आदमी ने उसका कहना माना और थोड़ी ही देर में अपना काम खत्म कर लिया। अब न तो वह उस गड्ढे से बाहर का देख सकता था और न ही कोई बाहर से ही उसको देख सकता था। उसके कपड़े उस गड्ढे के बाहर रखे हुए थे।

सो जब उस आदमी ने करीब करीब दो गज गहरा गड्ढा खोद लिया और वह पल पल यह इन्तजार कर रहा था कि कब उसकी कुदाल खजाने पर टन्न से बोलेगी चाहे वह सोना हो या चाँदी या फिर और कोई कीमती चीज़ शरफ ने उसके कपड़े कम्बल और **100** रुपये उठाये और चुपचाप वहाँ से भाग लिया। जल्दी ही वह जंगल के अँधेरे और घनेपन से दूर जा चुका था।

कहा जाता है कि वह बेचारा गरीब आदमी खजाने की उम्मीद में वहाँ बहुत देर तक काम करता रहा। जब उसकी साँस में साँस आयी तब वह उस गड्ढे के बाहर आया और यह देख कर कि

उसके कपड़े कम्बल सौ रुपये और वह संत वहाँ कुछ भी नहीं था बेहोश सा उसी गड्ढे में गिर पड़ा।

दसवीं घटना

एक दिन शरफ एक गरीब किसान से मिला जो एक भेड़ को हाँकता हुआ बाजार ले जा रहा था। शरफ ने उससे भेड़ के दाम पूछे तो किसान बोला "चार रुपये।"। काफी मोल भाव करने के बाद उस भेड़ के दाम तीन रुपया तय हुए।

शरफ ने उससे कहा कि वह उस भेड़ को उसके घर पहुँचा जाये जहाँ वह उसको उसके पैसे दे देगा। किसान यह सुन कर बहुत खुश हुआ कि उसको इस बोझे से जल्दी ही छुटकारा मिल गया।

दोनों शरफ के घर की तरफ चल दिये। अभी वे लोग बहुत दूर नहीं गये थे कि शरफ को एक खाली घर दिखायी दे गया जिसका एक दरवाजा सामने की तरफ था और दूसरा दरवाजा पीछे की तरफ। उसने किसान से कहा कि यही उसका घर था।

कह कर उसने भेड़ को उठाया अपने कन्धे पर डाला और उस घर के अन्दर चला गया। उसने सामने का दरवाजा बन्द कर दिया और कहा कि वह बाहर उसका इन्तजार करे वह भेड़ के पैसे ले कर अभी आता है।

अब जैसा कि सोचा जा सकता है किसान दरवाजे के बाहर खड़ा खड़ा खुशी खुशी धैर्यपूर्वक अपने पैसों का इन्तजार करता रहा

और शरफ उस घर के पीछे के दरवाजे से बाहर चला गया। उसको वहाँ का चप्पा चप्पा पता था सो वह तेजी से वहाँ से भाग गया। उसने इसका भी पूरा इन्तजाम कर लिया कि कोई उसको पकड़ न सके।

एकाध घंटे बाद एक और आदमी अपनी यात्रा का समय बचाने के लिये उस घर के पिछले दरवाजे से घुसा और सामने के दरवाजे से बाहर निकल रहा था कि किसान ने उसको पकड़ लिया और उससे अपनी भेड़ माँगी।

वह आदमी बेचारा कुछ नहीं समझ सका और इस तरह से अपनी यात्रा के बीच में यह सब होने से उससे बहुत गुस्सा हो गया और किसान की पिटायी कर दी।

किसान बेचारा जब उसकी पिटायी से होश में आया तो उसने पड़ोसियों के दरवाजे खटखटाये पर उन्होंने कहा कि वहाँ तो बहुत दिनों से कोई नहीं रहता था सो न तो उसको अपनी भेड़ ही मिली और न ही उसको भेड़ का खरीदार मिला। मिली तो तो केवल बेइज़्ज़ती मिली।

आखिर वह वहाँ से अपने घर चला आया और ज़्यादा दुखी हो कर और और ज़्यादा अक्लमन्द हो कर।

ग्यारहवीं घटना

शरफ की यह कहानी हमें बताती है कि शरफ का दिल अपने काम में कितना लगता था। असल में वह उसको इतना अपने फायदे के लिये इस्तेमाल नहीं करता था जितना कि उसको मजे लेने के लिये करता था।

एक दिन उसने देखा कि एक बहुत ही गरीब आदमी ने सड़क पर गिरी हुई एक मरी हुई फाख्ता[58] उठा ली। उसको उस आदमी की हालत पर दया आ गयी सो वह उसके पीछे लग लिया। उसको यह देखने की उत्सुकता थी कि वह उस मरी हुई चिड़िया का क्या करेगा।

वह आदमी उसको ले कर जैसे ही अपने घर पहुँचा उसने घर में घुस कर अपने घर का दरवाजा बन्द कर लिया।शरफ भी उसके पीछे पीछे दौड़ा और दरवाजे की झिरी से झॉक कर देखने और सुनने की कोशिश करने लगा कि अन्दर क्या हो रहा था।

उसने देखा कि छोटे छोटे भूखे बच्चे अपने पिता के चारों तरफ नाच कूद रहे थे। उसके फटे कपड़ों को खींच रहे थे और उससे पूछ रहे थे कि क्या वह उनके लिये खाने के लिये कुछ ले कर आया है।

उस परिवार का इतिहास बहुत दुख भरा था। कभी वे लोग पैसे वाले हुआ करते थे पर जबसे सरकार बदली थी तबसे उनकी

[58] Translated for the word "Dove". See its picture above.

हालत खराब हो गयी थी। वे इस बात को अपनी किस्मत समझ कर स्वीकार कर बैठे थे।

आदमी अपने बच्चों से बोला — "हॉ बेटा मैं तुम्हारे लिये खाना ले कर आया हूॅ। लो यह मरी हुई फाख्ता लो और शाम के खाने के लिये इसे भून लो।"

शरफ सूर ने यह सब देखा और सुना। उसका दिल इन गरीब लोगों के लिये रो पड़ा। वह चिल्ला कर बोला कि उसको घर के अन्दर आने दिया जाये।

और जब वह अन्दर आ गया तो उसने उस गरीब आदमी को पॉच रुपये दिये और कहा — "जाओ इस पैसे से कुछ खाना खरीद कर ले आओ और इस मरी हुई चिड़िया को फेंक दो।

मैं शरफ सूर हूॅ। अब तक मैंने बहुत चोरियॉ की हैं बहुत डाके डाले हैं पर आगे से मैं केवल अल्लाह के लिये ही चोरी करूॅगा और डाका डालूॅगा। मैं तुमसे वायदा करता हूॅ कि परसों मैं फिर तुम्हारे पास आऊॅगा और तुम्हारे इस्तेमाल के लिये जितना पैसा भी मैं उस समय तक कमा सकूॅगा ला कर तुम्हें दूॅगा। तुम डरो नहीं खुश खुश उम्मीद रखो। अल्लाह ने चाहा तो तुम्हारी गरीबी तुम्हारी खुशहाली में बदल जायेगी।"

गरीब आदमी यह सुन कर उसके पैरों पर गिर पड़ा और बोला — "अल्लाह आपको खुश रखे। अल्लाह आपको बहुत सारा दे।"

अगले दिन शरफ इस आदमी के घर के पास वाली मस्जिद में प्रार्थना करने गया और वहाँ जा कर दिल से बहुत देर तक प्रार्थना की। जब उसकी प्रार्थना खत्म हो गयी तो वह थोड़ी देर के लिये सुस्ताने के लिये बैठ गया।

उसी समय वहाँ उस मस्जिद का इमाम आ गया तो शरफ उससे बातें करने लगा। उसने वह सारा दिन और काफी रात उसने वहीं बिता दी। शरफ को लगा कि उसको वहाँ से कभी वापस नहीं आना चाहिये सो वह वही बैठा रह गया।

आखिर इमाम रात को एक बजे अपने घर चला गया। जैसे ही इमाम अपने घर गया तो शरफ ने अपना तेज़ भागने वाला घोड़ा उठाया जो उसने किराये पर लिया था और सोपूर की तरफ दौड़ पड़ा।

सोपूर पहुँच कर वह खजाने की तरफ गया और वहाँ से उसने कई थैले भर कर रुपये चुराये उनको अपनी कमर से बाँधा और फिर जल्दी से उसी जगह लौट आया जहाँ से गया था।

रुपये के वे थैले उसने उस गरीब आदमी को दिये जिससे उसने सहायता का वायदा किया था। वे थैले उसको दे कर वह फिर से मस्जिद चला गया। वहाँ जा कर वह बाकी बचा आधा घंटा बड़ी गहरी नींद सोया।

अगले दिन खजांची को पता लगा कि उसके खजाने में से पैसे चोरी हो गये हैं। वह बोला — "रुपयों के कुछ थैले चोरी कर लिये

गये हैं।” यह उसने श्रीनगर के वायसराय को बता दिया साथ में उसने यह भी इशारा कर दिया कि यह काम शरफ का हो सकता था।

वायसराय ने तुरन्त ही शरफ को अपने सामने हाजिर होने का हुकुम दिया। शरफ वायसराय के सामने आया पर उसके चेहरे पर डर के नहीं बल्कि आश्चर्य के भाव ज़्यादा थे। उसने आते ही पूछा — “अरे ये पैसे कब चोरी हुए?”

वायसराय बोला — “कल रात को।”

शरफ ने फिर उसको उस इमाम को वहाँ बुलाने की इजाज़त माँगी जिसके साथ उसने पिछला सारा दिन और पिछली रात का काफी हिस्सा गुजारा था।

उसने कहा — “आप इमाम को बुला लें और उससे पूछ लें कि मैं चोरी के समय कहाँ था। मैं दोनों जगह एक ही समय में कैसे हो सकता हूँ मस्जिद में भी और सोपुर में भी।”

यह सुन कर इमाम को बुलाया गया जिसने गवाही दी कि वह बहुत रात गये तक उसी के साथ मस्जिद में था। इस तरह शरफ सूर को आजाद कर दिया गया।

बारहवीं घटना

किसी दूसरे समय में शरफ बहुत अच्छे कपड़े पहन कर किसी पीर साहब को सलाम करने गया। वह उनके सामने बड़ी शान से जा

कर बैठ गया। पीर साहब ने उससे पूछा कि वह कहाँ से आया था और उसके वहाँ आने का क्या उद्देश्य था।

कुछ हिचकिचाहट के साथ शरफ ने जवाब दिया कि वह एक बहुत ही इज़्ज़तदार आदमी का बेटा था और यह जानते हुए कि पीर साहब एक पवित्र आदमी थे और धर्म के जानने वाले थे वह उनसे कुछ सीखने आया था। पीर साहब यह सुन कर बहुत खुश हुए और उन्होंने उसको उसी समय से पढ़ाना शुरू कर दिया।

शरफ पीर साहब के पास तीन दिन तक रहा। बाद में खुशी से कृतज्ञ हो कर उससे उसने जो कुछ उनसे सीखा था उसके बदले में उनको एक दावत देने की इच्छा प्रगट की। पीर साहब को यह सुन कर बहुत खुशी हुई।

उन्होंने कहा — "किसी बहुत बढ़िया रसोइये को खाना बनाने के लिये बुलाओ जो बहुत स्वादिष्ट खाना बनाता हो। उससे कई तरह के खाने बनाने के लिये कहो। बढ़िया खाने के लिये मैं तीस रुपये खर्च करने को तैयार हूँ और रसोइये को इनाम अलग से।"

रसोइया बुलाया गया और उससे बहुत बढ़िया खाना बनाने के लिये कहा गया तो वह बोला कि वह अपनी तरफ से सबसे अच्छा खाना बनायेगा। उसने पीर साहब से उनके खाना पकाने के कुछ बर्तन उधार माँगे जो उसको तुरन्त ही दे दिये गये।

कुछ देर बाद जब शरफ को लगा कि खाना तैयार हो गया होगा उसने पीर साहब से खाना देखने की इजाज़त माँगी। रसोइये

का घर वहाँ से कुछ दूरी पर था। रसोइये के घर पहुँचने पर शरफ ने उससे देर से आने के लिये माफी माँगी और उससे कहा कि देर हो जाने की वजह से अब वह खाना ज़ैन कदल[59] ले जायेगा।

वहाँ पहुँच कर उसने एक मल्लाह को किराये पर लिया सारा खाना उसमें रखा और फिर खुद भी उस नाव में बैठ गया। जो लोग खाना ले कर आये थे उन लोगों को वापस भेज दिया गया।

शरफ ने मल्लाह को अच्छे खाने का वायदा किया तो मल्लाह ने खाने के लालच में नाव जल्दी जल्दी खेनी शुरू कर दी। कुछ ही देर में वे बहुत दूर थे जहाँ उनको कोई ढूँढ नहीं सकता था।

कुछ समय बाद ही कुछ तो बढ़िया खाने की उम्मीद में और कुछ देर होने की वजह से पीर साहब की भूख बहुत जाग गयी थी सो वह रसोइये की दूकान पर गये। वहाँ जा कर उनको पता चला कि उनका चेला तो खाना और बर्तन ले कर बहुत देर का जा चुका है और उनको पैसे देने के लिये छोड़ गया है।

पीर साहब भी कुछ कम नहीं थे वह बड़े जिद्दी किस्म के थे। उनके दिमाग में यह बात आ गयी कि उनका यह चेला और कोई नहीं शरफ सूर ही था। उससे बदला लेने के लिये उन्होंने यह मामला उस समय के वायसराय अता मुहम्मद खान[60] की कचहरी ले जाने का निश्चय किया ताकि वह चोर को उसकी सजा दिलवा सकें।

---

[59] Zaina Kadal – the fourth bridge on Jhelam near which Sharaf used to live.

[60] Ataa Muhammad Khan. He was one of the fourteen Governors or Viceroys during the 66 years (1753-1819) the country remained a portion of Durrani Empire.

वायसराय ने उनका मामला बड़े ध्यान से सुना और तुरन्त ही शरफ की गिरफ्तारी का वारंट जारी कर दिया। एक दो दिन बाद ही शरफ पकड़ लिया गया और वायसराय के सामने लाया गया। उसके ऊपर इलजाम था कि उसने पीर साहब के बर्तन चुराये थे और दूसरी तरीके से भी उनको धोखा दिया था।

पीर साहब ने शरफ की तरफ कुछ इस तरह देखा कि शरफ ने अपना कुसूर कुबूल कर लिया और माफी माँगी। उसने वायसराय को बहुत सारा पैसा देने का भी वायदा किया अगर उन्होंने उसको आजाद कर दिया तो।

पर अता मुहम्मद खान अपने फैसले पर अटल था। वह उसकी बातें एक पल के लिये भी सुनने के लिये तैयार नहीं था। बल्कि उसका सख्त हुकुम था कि उसका दाँया हाथ काट दिया जाये ताकि वह भविष्य में अपने ऐसे नीच काम न कर सके।

ऐसा ही कर दिया गया पर लोगों का कहना है कि फिर उसने एक लोहे का हाथ बनवा लिया था जिसकी उँगलियाँ बहुत नुकीली थीं ताकि वह उससे उस आदमी की गर्दन पर वार कर सके जो भी उसे पैसे देने से मना करे। इस तरह से उसने तीन चार आदमी मार भी दिये थे।

श्रीनगर में उसकी ऐसी बेरहमी और चालाकी से भरी कई कहानियाँ मशहूर हैं। आप में से कई लोग शायद शरफ की बाद की ज़िन्दगी के बारे में जानने के लिये भी उत्सुक होंगे।

एक बार एक बहुत बड़े पीर साहब बज़रंग शाह[61] ने उसे बुला भेजा और उसे समझाया कि वह अपनी इन नीच हरकतों से बाज़ आ जाये और अल्लाह के कामों में अपना दिल लगाये।

उसने वायदा किया कि वह वैसा ही करेगा अगर पीर साहब उसको अपने साथी की तरह से अपने पास रख लें और उसको अपनी सेवा का मौका दें।

शरफ के दिल पर पीर साहब की सलाह का बहुत असर हुआ था। वह खुद भी अपने इन सब गलत कामों से बहुत तंग आ चुका था इसलिये उसने पीर साहब की सलाह मान ली थी।

वह बज़रंग शाह के घर में अपनी पूरी ज़िन्दगी रहा। उसने सब तरीके से उनको अपनी अच्छाइयों का सबूत दिया। पर मरने के बाद वह कहाँ दफनाया गया इसका कोई पता नहीं है।

[61] Buzrang Shah

56 एक राजा और उसका नीच वज़ीर[62]

एक बार की बात है कि एक राजा था जिसका एक बड़ा ही नीच वज़ीर था। एक बार उस वज़ीर के दिल में यह बुरी इच्छा पैदा हो गयी कि वह राजा का खून कर दे और उसकी राजगद्दी खुद हथिया ले। खुशकिस्मती से राजा को उसकी इस इच्छा का पता चल गया।

एक दिन राजा अपने अस्तबल में अपने घोड़ों को देखने गया तो उसका प्यारा घोड़ा ज़ल्गुर[63] बहुत ज़ोर ज़ोर से रोने लगा। राजा उसके पास गया और उससे पूछा कि क्या बात थी वह इतनी ज़ोर ज़ोर से क्यों रो रहा था।

इस पर ज़ल्गुर ने उसको वज़ीर की नीचता के बारे में बताया और सलाह दी कि वह उसके ऊपर बैठ कर जल्दी से जल्दी वहाँ से भाग जाये। राजा ने उसकी बात सुनी और तुरन्त ही उस पर बैठ कर वहाँ से बहुत दूर चला गया।

वह बहुत थक गया था सो वह वहाँ की एक कसाई की दूकान पर गया और वहाँ जा कर उससे एक रात के लिये ठहरने की जगह माँगी। कसाई राजी हो गया तो राजा ने अपना ज़ल्गुर उसके आँगन में बाँध दिया और खुद उसके घर में सोने के लिये चला गया।

[62] The King and His Treacherous Wazir (Tale No 56)

[63] Zalgur is King's horse's name

पर अफसोस वह एक खतरे से तो बच गया था पर दूसरे खतरे में पड़ गया था। वह एक दुश्मन के हाथों से बच कर दूसरे दुश्मन के हाथों में पड़ गया था।

आधी रात को कसाई ने अपनी पत्नी को उठाया और उससे एक बड़ा मजबूत चाकू माँगा क्योंकि उसका इरादा अजनबी को मार कर उसके पैसे और ज़ल्गुर को हड़प लेने का था।

राजा जो उसके बराबर वाले कमरे में सो रहा था उसने यह सब सुना तो वह उठ कर उनके पास गया और उससे यह बुरा काम करने से मना किया।

उसने कहा कि वह उनको केवल अपना सारा पैसा और ज़ल्गुर दोनों ही नहीं दे देगा बल्कि साथ में खुद भी उनका नौकर बन कर रहेगा पर वह उसको न मारे। यह सुन कर कसाई मान गया।

एक दिन उस नीच कसाई ने राजा से एक भेड़ के पेट को साफ करने के लिये कहा। राजा उसको एक नदी के पास ले जा कर उसको साफ करने लगा।

जब राजा यह कर रहा था तो इत्तफाक से वहाँ के राजा की बेटी नदी के पास से गुजर रही थी कि उसने राजा को वहाँ वह सब करते हुए देखा।

उसको लगा कि वह एक भला और कुलीन आदमी था। ऐसे भले और कुलीन आदमी को ऐसा काम करते देख कर उसे बड़ा

आश्चर्य हुआ। उसने अपने दिल में कहा कि लगता है यह किसी शाही परिवार का आदमी है।

यही सोच कर उसने उसे अपने पास बुलाया। उसने उससे उसकी ज़िन्दगी की पुरानी घटनाओं के बारे में पूछा और साथ में यह भी पूछा कि वह कहाँ से आया था।

यह देख कर कि राजकुमारी बहुत अच्छी और दयालु किस्म की है राजा ने उसको अपने सारे दुख बता दिये। इसको सुन कर राजकुमारी के दिल में उसके लिये प्यार और दया दोनों पैदा हो गये। उसने उससे शादी करने का फैसला कर लिया।

वह उसको अपने पिता के पास ले गयी और उनको वह सब बता दिया जो राजा ने उसको बताया था और अपने पिता से प्रार्थना की कि वह उसकी शादी उस राजा से कर दें।

राजकुमारी के पिता को भी उस राजा के बारे में सुन कर उससे बहुत सहानुभूति हो गयी उनको उसके ढंग चाल भी बहुत अच्छे लगे सो वह भी अपनी बेटी की शादी उससे करने को राजी हो गया। जल्दी से जल्दी उन दोनों की शादी हो गयी। सब कुछ बहुत अच्छे तरीके से हुआ और सभी लोग बहुत खुश हुए।

राजा की शादी के बाद कसाई को मरवा दिया गया और ज़ल्गुर घोड़े को राजा को वापस दिलवा दिया गया। कुछ महीनों में ही राजा अपने ससुर की सहायता से अपने राज्य लौट आया। आ कर उसने

अपने नीच वज़ीर को मरवा दिया जिसने उसके प्रति जालसाजी की थी।

उसके बाद सब कुछ शान्ति से चलने लगा। राजा ने बहुत दिनों तक राज किया। राजा के कई बच्चे हुए और वे सब बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

Indian Classic Books of Folktales Translated in Hindi
by Sushma Gupta

12th Cen **Shuk Saptati.**
No 29 By Unknown. 70 Tales. Tr in English by B Hale Wortham. London : Luzac & Co. 1911. Under the Title "The Enchanted Parrot".
शुक सप्तति — ।

c1323 **Tales of Four Darvesh**
No 24 By Amir Khusro. 5 Tales. Tr by Duncan Forbes.
किस्सये चहार दरवेश

1868 **Old Deccan Days or Hindoo Fairy Legends**
No 23 By Mary Frere. 24 Tales. (5th ed 1889).
पुराने दक्कन के दिन या हिन्दू परियों की कहानियॉ

1872 **Indian Antiquary 1872**
No 34 A collection of scattered folktales in this journal. 18 Tales.

1880 **Indian Fairy Tales**
No 30 By MSH Stokes. London, Ellis & White. 30 Tales.
हिन्दुस्तानी परियों की कहानियॉ

1884 **Wide-Awake Stories – Same as Tales of the Punjab**
By Flora Annie Steel and RC Temple. 43 Tales.

1887 **Folk-tales of Kashmir.**
No 11 By James Hinton Knowles. 64 Tales.
काश्मीर की लोक कथाऐं

1889 **Folktales of Bengal.**
No 4 By Rev Lal Behari Dey. Delhi : National Book Trust. 22 Tales.
वंगाल की लोक कथाऐं

1890 **Tales of the Sun, OR Folklore of South India**
No 18 By Mrs Howard Kingscote and Pandit Natesa Sastri.
London : WH Allen. 26 Tales
सूरज की कहानियॉ या दक्षिण भारत की लोक कथाऐं

1892 **Indian Nights' Entertainment**
No 32 By Charles Swynnerton. London : Elliot Stock. 52/85 Tales.
भारत की रातों का मनोरंजन

1894 **Tales of the Punjab.**
No 10 By Flora Annie Steel. Macmillan and Co. 43 Tales.
पंजाब की लोक कथाऐं

1903 **Romantic Tales of the Panjab**
No 31 By Charles Swynnerton. Westminster : Archibald. 7 Tales
पंजाब की प्रेम कहानियाँ

1912 **Indian Fairy Tales**
No 28 By Joseph Jacobs. London : David Nutt. 29 Tales.
हिन्दुस्तानी परियों की कहानियाँ

1914 **Deccan Nursery Tales or Fairy Tales from Deccan**.
No 22 By Charles Augustus Kincaid. 20 Tales.
दक्कन की नर्सरी की कहानियाँ

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com
1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें हिन्दी में
हिन्दी अनुवाद सुषमा गुप्ता

1. Zanzibar Tales: told by the Natives of the East Coast of Africa.
Translated by George W Bateman. Chicago, AC McClurg. **1901**. 10 tales.
ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं। अनुवाद – जौर्ज डबल्यू बेटमैन। **2022**

2. Serbian Folklore.
Translated by Madam Csedomille Mijatovies. London, W Isbister. **1874.** 26 tales.
सरबिया की लोक कथाऐं। अंग्रेजी अनुवाद – मैम ज़ीडोमिले मीजाटोवीज़। **2022**

"Hero Tales and Legends of the Serbians". By Woislav M Petrovich. London : George and Harry. 1914 (1916, 1921). it contains 20 folktales out of 26 tales of "Serbian Folklore: popular tales"

3. The King Solomon: Solomon and Saturn
राजा सोलोमन : सोलोमन और सैटर्न्। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – प्रभात प्रकाशन। जनवरी **2019**

4. Folktales of Bengal.
By Rev Lal Behari Dey. **1889**. 22 tales.
बंगाल की लोक कथाऐं — लाल बिहारि डे। हिन्दी अनुवाद – सुषमा गुप्ता – नेशनल बुक ट्रस्ट।। **2020**

5. Russian Folk-Tales.
By Alexander Nikolayevich Afanasief. **1889**. 64 tales. Translated by Leonard Arthur Magnus. 1916.
रूसी लोक कथाऐं – अलैक्ज़ैन्डर निकोलायेविच अफ़ानासीव। **2022**। तीन भाग

6. Folk Tales from the Russian.
By Verra de Blumenthal. **1903**. 9 tales.
रूसी लोगों की लोक कथाऐं – वीरा डी ब्लूमैन्थल। **2022**

7. Nelson Mandela's Favorite African Folktales.
Collected and Edited by Nelson Mandela. **2002**. 32 tales
नेलसन मन्डेला की अफ्रीका की प्रिय लोक कथाऐं। **2022**

8. Fourteen Hundred Cowries.
By Fuja Abayomi. Ibadan: OUP. **1962**. 31 tales.
चौदह सौ कौड़ियॉ – फूजा अबायोमी। **2022**

9. Il Pentamerone.
By Giambattista Basile. **1634**. 50 tales.
इल पैन्टामिरोन – जियामबतिस्ता बासिले। **2022**। **3** भाग

10. Tales of the Punjab.
By Flora Annie Steel. **1894**. 43 tales.
पंजाब की लोक कथाऐं – फ्लोरा ऐनी स्टील। **2022**। **2** भाग

11. Folk-tales of Kashmir.
By James Hinton Knowles. **1887**. 64 tales.
काश्मीर की लोक कथाऐं – जेम्स हिन्टन नोलिस। **2022**। **4** भाग

12. African Folktales.
By Alessandro Ceni. Barnes & Nobles. **1998**. 18 tales.
अफ्रीका की लोक कथाऐं – अलेसान्ड्रो सैनी। **2022**

13. Orphan Girl and Other Stories.
By Offodile Buchi. **2001**. 41 tales
लावारिस लड़की और दूसरी कहानियाँ – ओफ़ोडिल बूची। **2022**

14. The Cow-tail Switch and Other West African Stories.
By Harold Courlander and George Herzog. NY: Henry Holt and Company. **1947**. 143 p.
गाय की पूँछ की छड़ी – हैरल्ड कूरलैन्डर और जौर्ज हरज़ौग। **2022**

15. Folktales of Southern Nigeria.
By Elphinston Dayrell. London : Longmans Green & Co. **1910**. 40 tales.
दक्षिणी नाइजीरिया की लोक कथाऐं – ऐलफिन्स्टन डैरैल। **2022**

16. Folk-lore and Legends : Oriental.
By Charles John Tibbitts. London, WW Gibbins. **1889**. 13 Folktales.
अरब की लोक कथाऐं – चार्ल्स जौन टिबिट्स। **2022**

17. The Oriental Story Book.
By Wilhelm Hauff. Tr by GP Quackenbos. NY : D Appleton. **1855**. 7 long Oriental folktales.
ओरिऐन्ट की कहानियों की किताब – विलहैल्म हौफ़। **2022**

18. Georgian Folk Tales.
Translated by Marjorie Wardrop. London: David Nutt. **1894**. 35 tales. Its Part I was published in 1891, Part II in 1880 and Part III was published in 1884.
जियोर्जिया की लोक कथाऐं – मरजोरी वारड्रौप। **2022**। **2** भाग

19. Tales of the Sun, OR Folklore of South India.
By Mrs Howard Kingscote and Pandit Natesa Sastri. London : WH Allen. **1890**. 26 Tales
सूरज की कहानियाँ या दक्षिण की लोक कथाऐं — मिसेज़ हावर्ड किंग्सकोटे और पंडित नतीसा सास्त्री। **2022**।

20. West African Tales.
By William J Barker and Cecilia Sinclair. **1917**. 35 tales. Available in English at :
पश्चिमी अफ्रीका की लोक कथाऐं — विलियम जे बार्कर और सिसीलिया सिन्क्लेयर। **2022**

21. Nights of Straparola.
By Giovanni Francesco Straparola. **1550, 1553**. 2 vols. First Tr: HG Waters. London: Lawrence and Bullen. **1894**.
स्ट्रापरोला की रातें — जियोवानी फ्रान्सैस्को स्ट्रापरोला। **2022**

22. Deccan Nursery Tales.
By CA Kincaid. **1914**. 20 Tales
दक्कन की नर्सरी की कहानियाँ – सी ए किनकैड। **2022**

23. Old Deccan Days.
By Mary Frere. **1868 (5th ed in 1898**) 24 Tales.
पुराने दक्कन के दिन – मैरी फ्रैरे। **2022**

24. Tales of Four Dervesh.
By Amir Khusro. **Early 14th century**. 5 tales. Available in English at :
किस्सये चहार दरवेश — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**

25. The Adventures of Hatim Tai : a romance (Qissaye Hatim Tai).
Translated by Duncan Forbes. London : Oriental Translation Fund. **1830.** 330p.
किस्सये हातिम ताई — अंग्रेजी अनुवाद – डंकन फोर्ब्स। **2022**।

26. Russian Garland : being Russian folktales.
Edited by Robert Steele. NY : Robert McBride. **1916**. 17 tales.
रूसी लोक कथा माला — अंग्रेजी अनुवाद – ऐडीटर रोबर्ट स्टीले। **2022**

27. Italian Popular Tales.
By Thomas Frederick Crane. Boston : Houghton. **1885**. 109 tales.
इटली की लोकप्रिय कहानियाँ — थोमस फैडैरिक केन। **2022**

28. Indian Fairy Tales
By Joseph Jacobs. London : David Nutt. 1892. 29 tales.
भारतीय परियों की कहानियाँ — जोसेफ जेकब्स। **2022**

29. Shuk Saptati.
By Unknown. c 12th century. Tr in English by B Hale Wortham. London : Luzac & Co. 1911. Under the Title "The Enchanted Parrot".
शुक सप्तति — । **2022**

30. Indian Fairy Tales
By MSH Stokes. London : Ellis & White. **1880.** 30 tales.
भारतीय परियों की कहानियॉ — ऐम ऐस ऐच स्टोक्स। **2022**

31. Romantic Tales of the Panjab
By Charles Swynnerton. Westminster : Archibald. **1903**. 422 p. 7 Tales
पंजाब की प्रेम कहानियॉ — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

32. Indian Nights' Entertainment
By Charles Swynnerton. London : Elliot Stock. **1892**. 426 p. 52/85 Tales.
भारत की रातों का मनोरंजन — चार्ल्स स्विनरटन। **2022**

34. Indian Antiquary 1872
A collection of scattered folktales in this journal. 1872.

36. Cossack Fairy Tales and Folk Tales.
Translated in English By R Nisbet Bain. George G Harrp & Co. **c 1894**. 27 Tales.
कोज़ैक की परियों की कहानियॉ — अनुवादक आर निस्बत बैन। **2022**

Facebook Group :
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022
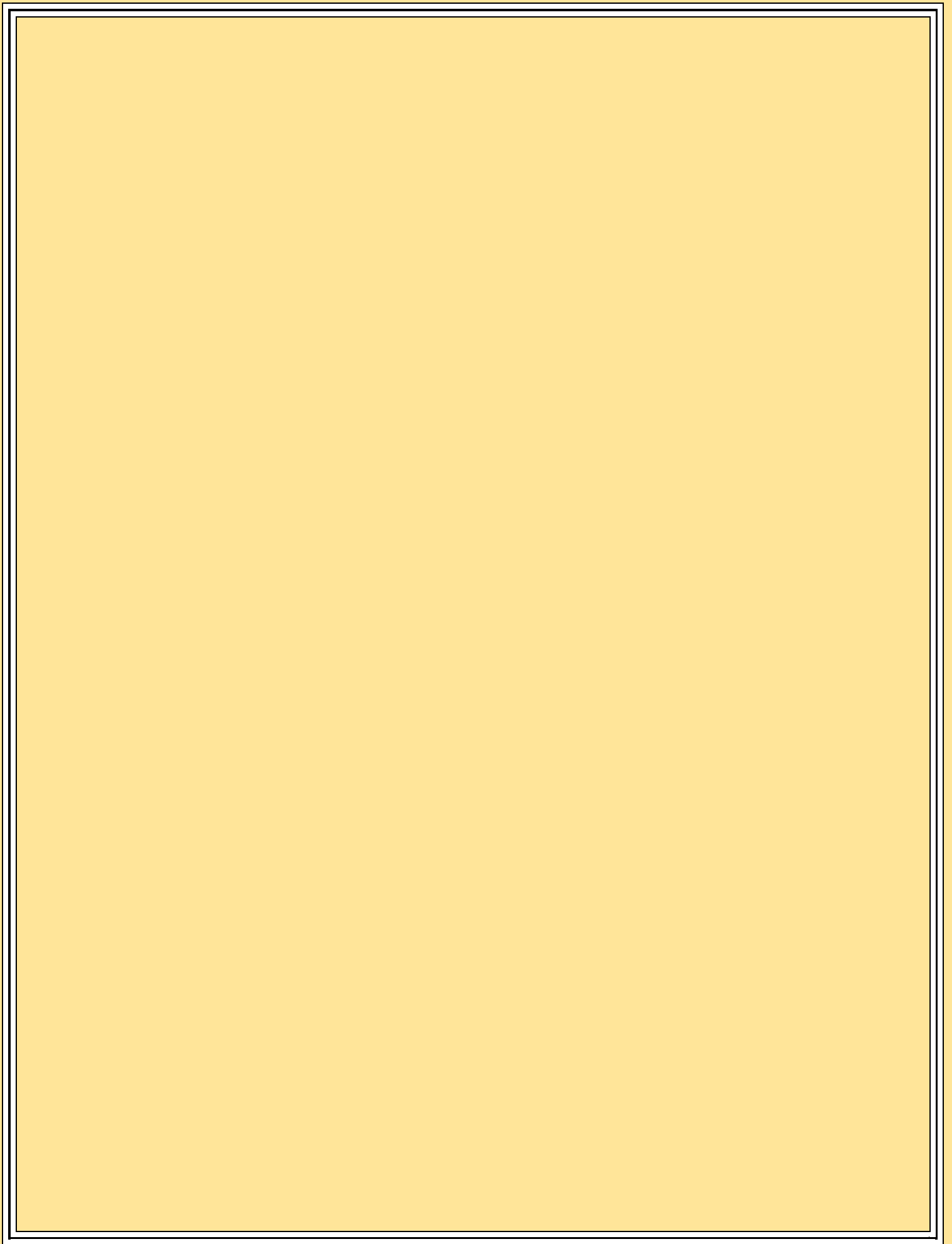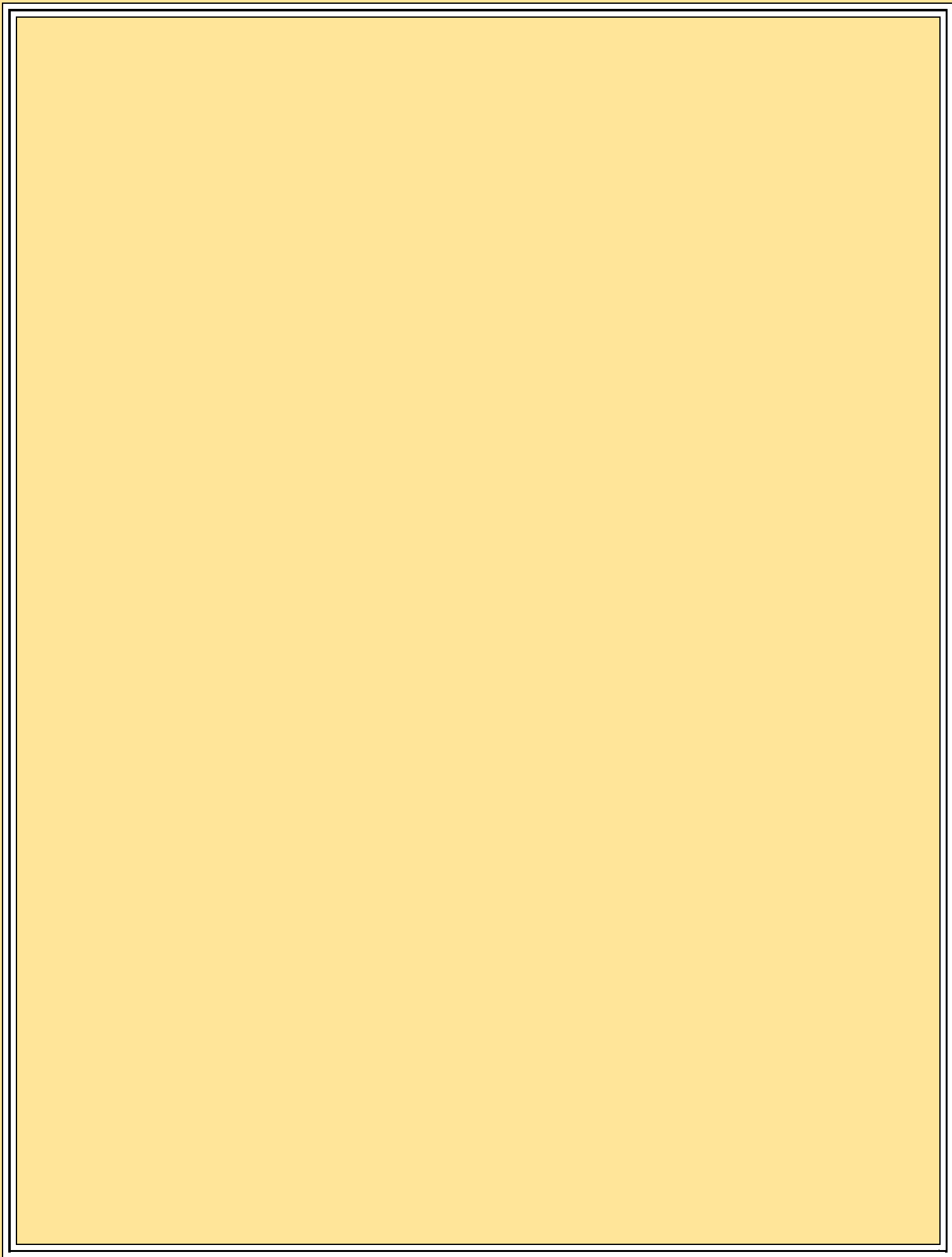
लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन **2021** तक इनकी **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022